वर्ष – 5, अंक – 1,
जनवरी–मार्च, 2025

RNI पंजीकरण संख्या - UPHIN/2021/89341
सहयोग राशि : 60.00

PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL

आंबेडकरवादी साहित्य

आंबेडकर-दर्शन पर आधारित त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

समस्त देशवासियों को

गुरु रविदास जयंती

की

हार्दिक बधाई एवं मंगल कामनाएं

श्यामलाल राही
वरिष्ठ साहित्यकार एवं संरक्षक GOAL,
बरेली (उ.प्र.)

डॉ. नविला सत्यादास
सेवानिवृत सह प्राध्यापिका एवं संरक्षक GOAL,
पटियाला (पंजाब)

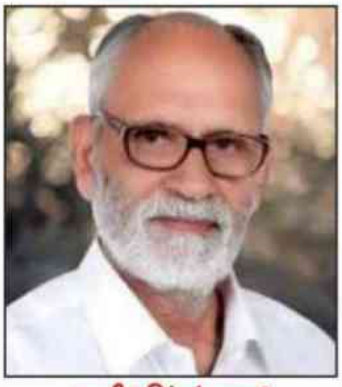

रघुबीर सिंह 'नाहर'
वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार एवं
सदस्य GOAL, नारनौल (हरियाणा)

डॉ. राम मनोहर राव
वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार एवं
अध्यक्ष GOAL, बरेली (उ.प्र.)

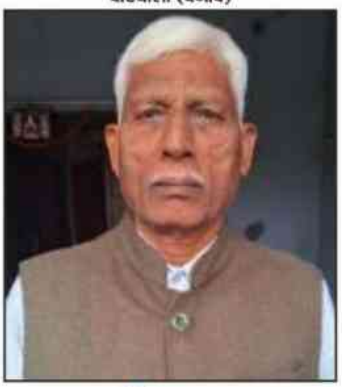

जालिम प्रसाद
शिक्षाविद एवं वरिष्ठ साहित्यकार, गोरखपुर (उ.प्र.)

पिंटू कुमार गौतम
जादूगर एवं सदस्य GOAL, गाजीपुर (उ.प्र.)

PEER-REVIEWED (REFEREED) JOURNAL

RNI पंजीकरण संख्या - UPHIN/2021/89341

आंबेडकरवादी साहित्य

आंबेडकर-दर्शन पर आधारित त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

आरंभ वर्ष : अक्टूबर-दिसम्बर 2021 ❖ आवृत्ति : त्रैमासिक ❖ विषय : साहित्य ❖ भाषा : हिन्दी

वर्ष - 5, अंक - 1, जनवरी-मार्च, 2025

संपादक -

देवचंद्र भारती 'प्रखर'

मो.- 9454199538
ambedkarvadisahitya@gmail.com

संपादक मंडल-

डॉ0 दत्तात्रय मुरुमकर
प्राध्यापक हिन्दी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय
कलिना, सांताक्रूज (पूर्व), मुंबई-400098
dmurumkar.hindi@mu.ac.in

डॉ0 प्रमोद रंजन
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, असम विश्वविद्यालय
दिफू कैंपस, दिफू, असम 782462
pramod.ranjan@aus.ac.in

डॉ0 गाजुला राजू
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211002
raju.g@allduniv.ac.in

डॉ0 जनार्दन
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211002
janardan@allduniv.ac.in

डॉ0 बिजय कुमार रबिदास
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211002
bkrabidas@allduniv.ac.in

संरक्षक मण्डल-

डॉ0 नविला सत्यादास
संरक्षक GOAL एवं सेवानिवृत्त सह-प्राध्यापिका व विभागाध्यक्ष
राजकीय महींद्र महाविद्यालय, पटियाला, पंजाब

श्यामलाल राही उर्फ 'प्रियदर्शी'
संरक्षक GOAL एवं सेवानिवृत्त उपशिक्षा निदेशक तथा
वरिष्ठ साहित्यकार, बरेली, उत्तर प्रदेश

डॉ0 राम मनोहर राव
अध्यक्ष GOAL एवं वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार
बरेली, उत्तर प्रदेश

रघुबीर सिंह 'नाहर'
कानूनी सलाहकार GOAL एवं वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार
अलवर, राजस्थान

डॉ0 रमेश कुमार
उपाध्यक्ष GOAL एवं सेवानिवृत्त आयकर आयुक्त,
अहमदाबाद, गुजरात

स्वामी एवं प्रकाशक देवचंद्र भारती,
मुद्रक गौतम प्रिंटर्स, सी.27/111-बी,
जगतगंज, वाराणसी, (उ.प्र.)-221002 से
मुद्रित एवं शी 19/100, भीम नगर कालोनी
सनबीम वरुणा के पास, कचहरी, वाराणसी
(उ.प्र.) 221002 से प्रकाशित
संपादक- देवचंद्र भारती।

आंबेडकरवादी साहित्य

आंबेडकर-दर्शन पर आधारित त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका का उद्देश्य साहित्य के माध्यम से बुद्ध-आंबेडकर दर्शन, मानवता, सामाजिकता, वैज्ञानिक सोच और राष्ट्रीय भावना का प्रचार-प्रसार करना है।

परामर्श मण्डल -

डॉ0 प्रीति आर्या
प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग,
एस.एस.जे. विश्वविद्याल परिसर,
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

डॉ0 मुकुन्द रविदास
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
वी.बी.एम. कोयलांचल वि.वि.,
धनबाद, झारखण्ड

डॉ0 दुर्गेश कुमार राय
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
के.जी.के. (पी.जी.) कॉलेज,
मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

डॉ0 प्रवेश कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
शहीद हीरा सिंह राजकीय महावि.
धानापुर, चन्दौली, उत्तर प्रदेश

डॉ0 रवि रंजन
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
धर्म समाज संस्कृत कॉलेज,
रामबाग, मुजफ्फरपुर, बिहार

डॉ0 नूतन कुमारी
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग,
एम.डी.डी.एम. कॉलेज,
मुजफ्फरपुर, बिहार

डॉ0 बी.आर. बुद्धप्रिय
सेवानिवृत्त प्राचार्य एवं
वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार,
बरेली, उत्तर प्रदेश

संपादकीय कार्यालय -
शी 19/100, भीम नगर कालोनी
सनबीम वरुणा के पास, कचहरी,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221002

विषय सूची -

संपादकीय
'नमो बुद्धाय-जय भीम' अभिवादन का अभिप्राय /05

शोध-पत्र :
बुद्ध धम्म का आर्थिक दर्शन एवं प्रासंगिकता
- डॉ. बी.आर. बुद्धप्रिय /06

संत रविदास के काव्य में बौद्ध चिंतन
- देवचंद्र भारती 'प्रखर' /12

रघुबीर सिंह 'नाहर' की रचनाओं मे भाव पक्ष
- डॉ. राम मनोहर राव /15

लेख:
आंदोलनकारी समाज सुधारक गुरु रविदास
-डॉ. सूरजमल सितम /21

बौद्ध धम्म के प्रसंग में ब्राह्मण वर्ग की भूमिका
- ज्ञानेन्द्र प्रसाद /24

पंचायती राज और आम जनता - श्यामलाल राही /27

संस्मरण : दलित साहित्यकार दलित कब तक और क्यों?
- डॉ. राम मनोहर राव /29

उपन्यास : अच्युत नाग - श्यामलाल राही /32

पुस्तक समीक्षा:
उत्पीड़न की यात्रा-एक दस्तावेज़
- डॉ. राजवीर सिंह 'कमल' /41

मनोहर लाल प्रेमी के दोहों में आंबेडकरवादी चिंतन के विविध रूप - देवचंद्र भारती 'प्रखर' /45

कविताएं :
- रघुबीर सिंह 'नाहर' /49,
- मनोहर लाल 'प्रेमी', सुरेश सौरभ 'ग़ाज़ीपुरी' /50

रिपोर्ट : GOAL के तत्वावधान में स्थापित हुई संत रविदास जी की प्रतिमा /51

'आंबेडकरवादी साहित्य' बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर की मानवतावादी विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित है। डॉ. आंबेडकर की विचारधारा का स्वरुप अत्यंत व्यापक है, जिसमें तथागत बुद्ध, संत कबीर, संत रविदास, ज्योतिराव फुले, नारायण गुरु, संत गाडगे और पेरियार रामास्वामी आदि महापुरुषों के दर्शन का समावेश है। अतः उक्त बात को ध्यान में रखते हुए आंबेडकरवादी साहित्य का घोषणा-पत्र तैयार किया गया है, जो अग्रलिखित है।

आंबेडकरवादी साहित्य का घोषणा-पत्र

आंबेडकरवादी साहित्य के घोषणा-पत्र में आंबेडकरवादी साहित्य (पत्रिका) का उद्देश्य निहित है।

'आंबेडकरवादी साहित्य' से संबंधित स्मरणीय बिंदु निम्नलिखित हैं-

1. आंबेडकरवादी साहित्य 'आंबेडकरवाद' का पोषक है। आंबेडकरवाद का अर्थ है- आंबेडकर का कथन यानी आंबेडकर - दर्शन। आंबेडकर-दर्शन डॉ. आंबेडकर की विचारधारा का समग्र रुप है, जिसमें बुद्ध वाणी, रविदास वाणी आदि का भी समावेश है।
2. अनीश्वरवाद, अनात्मवाद, दुखवाद, प्रतीत्य-समुत्पाद, समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, न्याय, प्रज्ञा, करुणा, शील, मैत्री आदि सभी सिद्धांत एवं मानवीय मूल्य आंबेडकर-दर्शन के अंग हैं। अतः इन सभी का आंबेडकरवादी साहित्य से घनिष्ठ संबंध है।
3. आंबेडकरवादी साहित्य सामाजिक, शैक्षिक, राष्ट्रीय एवं वैज्ञानिक चेतना का प्रेरक है।
4. आंबेडकरवादी साहित्य समाज और संस्कृति से संबंधित तथ्यपूर्ण एवं प्रामाणिक बातों तथा घटनाओं के वर्णन हेतु प्रतिबद्ध है।
5. आंबेडकरवादी साहित्य तथागत बुद्ध की प्रेरक वाणी 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकानुकंपाय' पर आधारित है। 'मूलनिवासी' अथवा 'पंद्रह-पचासी' की अवधारणा से इसका कोई संबंध नहीं है।
6. आंबेडकरवादी साहित्य में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के सम्यक साहित्य को सम्मिलित किया जा सकता है, चाहे उसका रचनाकार किसी भी वर्ग, किसी भी जाति, किसी भी धर्म का हो।
7. आंबेडकरवादी साहित्य भारतीय संविधान में वर्णित सम्यक प्रावधानों के अनुरुप रचा जाने वाला साहित्य है।
8. आंबेडकरवादी साहित्य किसी धर्म अथवा दर्शन की निंदा नहीं करता है, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर उनका सम्यक विवेचन करता है।
9. आंबेडकरवादी साहित्य में तथागत बुद्ध, संत कबीर, संत रविदास, ज्योतिराव फुले, नारायण गुरु, संत गाडगे, पेरियार रामास्वामी और डॉ. आंबेडकर आदि सत्यशोधक महापुरुषों की सम्यक वाणी का अंतर्भाव है।
10. आंबेडकरवादी साहित्य आंबेडकरवादी चेतना के साहित्यकारों, शिक्षकों, समाजसेवकों एवं संस्कृति के संरक्षकों का प्रशस्ति-पत्र है।

सम्यक दृष्टि सही उद्देश्य सार्थक कार्य

Genuine Organization of Ambedkarite Literati - GOAL

आंबेडकरवादी विद्वज्जनों का विशुद्ध संगठन

प्रधान कार्यालय - 308, आंबेडकर चौक, मुनिरका, नई दिल्ली- 110067

संरक्षकगण - डॉ0 नविला सत्यादास (पंजाब), श्यामलाल राही (बरेली, उत्तर प्रदेश)

अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	महासचिव	कोषाध्यक्ष
डॉ0 राम मनोहर राव (बरेली, उत्तर प्रदेश)	डॉ0 रमेश कुमार (अहमदाबाद, गुजरात)	देवचंद्र भारती 'प्रखर' (चंदौली, उत्तर प्रदेश)	डॉ0 सुरेश सौरभ गाजीपुरी (गाजीपुर, उत्तर प्रदेश)

सह-सचिव	कानूनी सलाहकार	लेखा परीक्षक
सुरेश कुमार राजा (बाँदा, उत्तर प्रदेश)	रघुबीर सिंह 'नाहर' (अलवर, राजस्थान)	अश्वनी कुमार (लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

सदस्यगण - डॉ0 बी.आर.बुद्धप्रिय (बरेली, उत्तर प्रदेश), डॉ0 मुकुंद रविदास (झारखण्ड), डॉ0 परसराम रामजी रजडे (महाराष्ट्र), भिक्खु संघविजय (बिहार), मनोहर लाल प्रेमी (लखनऊ, उत्तर प्रदेश), राधेश प्रताप 'विकास' (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश), कर्मशील भारती (दिल्ली), अभय प्रताप सिंह (दिल्ली), पिंटू कुमार गौतम (गाजीपुर, उत्तर प्रदेश), कैप्टन लाल बिहारी प्रसाद (कुशीनगर, उत्तर प्रदेश), भीमराव गणवीर (महाराष्ट्र), डॉ0 पप्पू राम सहाय (झाँसी, उत्तर प्रदेश), राजाराम वर्मा (गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र- 9454199538, 9452846472 • E-mail : genuineorganization@gmail.com

'नमो बुद्धाय-जय भीम' अभिवादन का अभिप्राय

आंबेडकरवादी लोग आपस में अभिवादन के रूप में प्राय: 'नमो बुद्धाय -जय भीम' शब्द का प्रयोग करते हैं। इस अभिवादन को सुनकर कुछ लोग आपत्ति करते हैं और यह तर्क देते हैं कि अभिवादन के रूप में केवल बुद्ध और आंबेडकर का स्मरण करना उचित नहीं है। ऐसे लोग अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़ा-वर्ग में जन्मे हुए सभी महापुरुषों का स्मरण करने की बात करते हैं। लेकिन उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं है कि 'नमो बुद्धाय' और 'जय भीम' के बीच में योजक चिन्ह (-) है। इसका अभिप्राय यह है कि 'नमो बुद्धाय' और 'जय भीम' के बीच में एक लंबी श्रृंखला है, जो बुद्धयुग और आंबेडकरयुग को जोड़ती है। अत: इन दोनों युगों के मध्य में जन्म लेने वाले सभी सन्मार्गी महापुरुषों के नाम स्वत: इस श्रृंखला में सम्मिलित हो जाते हैं। उन सन्मार्गी महापुरुषों के नाम हैं-संत कबीर, संत रविदास, ज्योतिराव फुले, सावित्रीबाई फुले, नारायण गुरु, छत्रपति शाहूजी महाराज, बिरसा मुंडा, संत गाडगे और पेरियार रामास्वामी। जब कोई आंबेडकरवादी व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को 'नमो बुद्धाय- जय भीम' कहकर अभिवादन करता है, तो वह केवल तथागत बुद्ध को नमन और डॉ. आंबेडकर की जयकार नहीं करता है। बल्कि वह व्यक्ति 'नमो बुद्धाय-जय भीम' की श्रृंखला के बीच में सम्मिलित होने वाले सभी सन्मार्गी महापुरुषों को नमन करते हुए उनकी जयकार करता है।

कुछ आंबेडकरवादी लोग अभिवादन के रूप में 'नमो बुद्धाय-जय भीम' शब्द के स्थान पर 'जय भीम-नमो बुद्धाय' शब्द का प्रयोग करते हैं। उन लोगों का यह तर्क है कि बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर ने बौद्ध धम्म को पुनर्जीवित किया और तथागत बुद्ध के सम्यक चरित्र से भारतवासियों को परिचित कराया। अत: बाबा साहेब का नाम पहले लिया जाना चाहिए और बुद्ध का नाम बाद में। इसलिए वे लोग पहले डॉ. आंबेडकर की जयकार करते हैं, उसके बाद तथागत बुद्ध को नमन करते हैं। लेकिन उन्हें इस बात का ध्यान नहीं है कि गुरु तो गुरु ही होता है। यदि शिष्य लोगों को अपने गुरु का परिचय दे, तो इससे उसका स्थान गुरु से ऊंचा नहीं हो जाएगा। बाबा साहेब ने भले ही तथागत बुद्ध से लोगों को परिचित कराया और बौद्ध धम्म को पुनर्जीवित किया, लेकिन वे तथागत बुद्ध को अपना गुरु मानते थे। अत: गुरु (बुद्ध) को नमन पहले किया जाना चाहिए और शिष्य (डॉ. आंबेडकर) की जयकार बाद में। ऐसा करना बाबा साहेब के प्रति सम्मान भावना का सूचक है। क्योंकि गुरु के सम्मान में ही शिष्य का सम्मान है।

आजकल कुछ बौद्ध लोग अभिवादन के रूप में केवल 'नमो बुद्धाय' शब्द का प्रयोग करते हैं। उन्हें 'जय भीम' शब्द का प्रयोग करना स्वीकार नहीं है। उनका कहना है कि 'जय भीम' शब्द का बौद्ध संस्कार से कोई संबंध नहीं है। बौद्ध व्यक्ति के लिए 'नमो बुद्धाय' शब्द ही पर्याप्त है। ऐसे लोग स्वयं को शाक्यवंशी कहते हैं। वे डॉ. आंबेडकर के स्थान पर सम्राट अशोक की जयकार करना उचित समझते हैं। क्योंकि उनके अनुसार सम्राट अशोक का संबंध उनके वंश से हैं। इस प्रकार के तर्कों से उन तथाकथित बौद्धों की जातीय मानसिकता प्रकट हो जाती है। क्योंकि बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर जातिगत रूप से महार थे, जो अनुसूचित जाति की श्रेणी में है। विडंबना यह है कि इक्कीसवीं सदी में भी समता की बात करने वाले पिछड़े-वर्ग के लोग अनुसूचित जाति से अपने आपको श्रेष्ठ समझते हैं। यही कारण है कि प्राय: ऐसे लोग अनुसूचित जाति के महापुरुषों और वर्तमान में सक्रिय विद्वान/सामाजिक लोगों के प्रति हीन भावना रखते हैं। वे लोग अपने मुख से बाबा साहेब का नाम लेना पसंद नहीं करते हैं। अत: वे 'जय भीम' नहीं कहते हैं। ऐसे लोग यदि राजनीति के क्षेत्र में 'जय भीम' कहकर अभिवादन कर भी दें, तो उसका कोई औचित्य नहीं है। क्योंकि राजनीति में तो राजनेता कुछ भी कर सकते हैं।

निष्कर्ष रूप में यह स्पष्ट है कि आंबेडकरवादी लोगों के लिए 'नमो बुद्धाय-जय भीम' कहकर अभिवादन करना ही सर्वथा उचित है। इस अभिवादन में अनेक महापुरुषों के नाम छिपे हुए हैं। जिस प्रकार व्याख्या लिखने के लिए किसी गद्यांश अथवा पद्यांश को संक्षेप में लिखा जाता है तथा प्रारंभिक और अंतिम शब्दों के बीच में डॉट डॉट डॉट (...) लिखा जाता है, ठीक उसी प्रकार 'नमो बुद्धाय-जय भीम' शब्द एक संक्षिप्त वाक्यांश के समान है, जिसकी व्याख्या बहुत विस्तृत है। इस बारे में किसी भी बौद्ध आंबेडकरवादी व्यक्ति को तनिक भी भ्रम नहीं होना चाहिए। शब्दगत और अर्थगत दोनों दृष्टियों से 'नमो बुद्धाय-जय भीम' शब्द ही सर्वोत्तम है।

आंबेडकरवादी साहित्य पत्रिका के इस अंक में डॉ.बी.आर. बुद्धप्रिय, डॉ.राम मनोहर राव, देवचंद्र भारती 'प्रखर' के शोध-पत्र एवं डॉ. सूरजमल सितम, ज्ञानेंद्र प्रसाद, श्यामलाल राही के लेख सम्मिलित हैं। साथ ही डॉ. राम मनोहर राव द्वारा लिखित संस्मरण और उपन्यासकार श्यामलाल राही द्वारा लिखित उपन्यास 'अच्युत नाग' का अंश भी संकलित हैं। डॉ. राजवीर सिंह कमल द्वारा महाकवि एल.एन. सुधाकर जी के काव्य-संग्रह 'उत्पीड़न की यात्रा' पुस्तक की समीक्षा को भी इस अंक में स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त रघुबीर सिंह 'नाहर', मनोहर लाल प्रेमी और सुरेश सौरभ गाजीपुरी आदि कवियों की कविताओं को भी संकलित किया गया है। पूर्व अंकों की भांति यह अंक भी आंबेडकरवादी साहित्य के पाठकों, प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों के लिए अवश्य उपयोगी सिद्ध होगा।

- देवचंद्र भारती 'प्रखर'

बुद्ध धम्म का आर्थिक दर्शन एवं प्रासंगिकता

- डॉ. बी.आर. बुद्धप्रिय

"बुद्ध ने सुखी और संपन्न जीवनयापन के लिए स्वस्थ आर्थिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था। जो देश बुद्ध के बताए हुए आर्थिक सिद्धान्तों का अनुपालन कर रहे हैं, वे वर्तमान में भी सुखी संपन्न, समृद्धशाली और आत्मनिर्भर हैं और जो देश (जैसे भारत) उन सिद्धान्तों की उपेक्षा कर रहे हैं, ये दूसरे से कर्ज लेकर आर्थिक गुलामी में ही जकड़ते जा रहे हैं।"

बुद्ध धम्म के विषय में प्राय: एक भ्रांति लोगों के मन में यही रहती है कि यह मात्र एक धम्म है, जो हमें हिन्दू धर्म के विपरीत आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करता है। जबकि वास्तविकता यह है कि बुद्ध धम्म मानव- जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, धाम्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। इस धम्म ने मानव में लोक कल्याण की भावना को जन्म दिया और सबसे पहले पंचशील का उपदेश देकर लोगों को समता-करुणा प्यार के साथ रहना सिखाया। बुद्ध धम्म सुखमय जीवन बिताने का मार्ग प्रस्तुत करता है। 'महामंगलसुत्त' और 'करणीयमेत्त सुत्त' विश्व के मानव को बंधुता के सूत्र में आबद्ध रखने में भी सक्षम है। इसमें सुशिक्षित होना, शिल्प प्रशिक्षित होना, विनयशील होना, मृतभाषी होना, माता-पिता की सेवा करना, पत्नी और संतानों का पालन-पोषण करना, अहितकारी कर्मों से दूर रहना, दान देना, पवित्र जीवन बिताना, आपत्ति - विपत्ति आने पर साहसपूर्वक उसका सामना करना और विचलित न होना, क्रोध पर विजय प्राप्त करना और क्षमाशीलता को न खोना आदि 'महामंगलसुत्त' की प्रमुख बातें हैं। (बौद्ध संस्कृति - राहुल सांकृत्यायन, पृ. 9)

बुद्ध धम्म मानव को स्वतंत्र जीवन जीना सिखाता है। यही कारण है कि भारत में जब-जब बौद्ध शासकों का शासन हुआ, देश की राजनीतिक और सांस्कृतिक सीमाएं बढ़ती ही गई। उनके समय में भारत कभी परतंत्र नहीं हुआ। बुद्ध धम्म को मानने वाले म्यांमार (बर्मा), थाईलैण्ड, श्रीलंका, जापान, कोरिया, चीन जैसे राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपने शरीर के रक्त की अंतिम बूंद तक संघर्षरत प्रयासरत एवं प्रयत्नशील रहते हैं।

बुद्ध धम्म का प्रकाश उस समय धरती पर आया, जब समाज में अशिक्षा, अज्ञान और अंधविश्वास अपने चरमोत्कर्ष पर था। एक तरफ लोग स्वर्ग की प्राप्ति के लिए सैकड़ों पशुओं की बलि देते थे और बीसों टन अनाज व देशी घी यज्ञ-हवन में जला देते थे, तथागत बुद्ध ने छठी शताब्दी में अंधविश्वास, अज्ञान, अविद्या एवं परावलंबन के विरुद्ध समाज में एक चेतना लाने का कार्य किया। उनकी सोच मानव ही नहीं जल-थल नभ के सभी जीवों के कल्याण के लिए थी। जिसमें यह दीक्षा दी जाती थी कि अकारण हिंसा से दूर रहे, चोरी न करें, अर्थात् बिना किसी को दी हुई वस्तु को ग्रहण न करें, और व्यभिचार से सदैव दूर रहें, झूठ-कठोर न बोले, चुगली न करें, द्रव्यों का सेवन भी मनुष्य के लिए अहितकर है। इन्हीं सब कारणों से जो व्यक्ति बुद्ध धम्म ग्रहण करता है, वह उपर्युक्त पांचों शिक्षाओं को ग्रहण करता है। ये पाँच शिक्षाएं ही पंचशील हैं। यह पंचशील सामाजिक जीवनयापन का ऐसा सिद्धान्त है, जिसे राग, द्वेष, ईर्ष्या से मुक्ति पाकर बंधुता के साथ परिवार के समान समाज में रह सकता है। (बौद्ध संस्कृति-राहुल सांकृत्यायन, पृ. 10)

बोधगया के चिंतन में तथागत ने पाया कि दुखों का कारण अविद्या या अंधविश्वास है, जिससे संशय संस्कार उत्पन्न होता है, संशय मनुष्य को भोग- विलास की ओर प्रेरित करता है, उससे वे नाम रूप और षडायतन (पांच ज्ञानेन्द्रियों- आंख, कान, नाक, जीभ, त्वचा और मन) उत्पन्न होता है। इन्द्रियों द्वारा स्पर्श होता है, जिससे वेदना पैदा होती है, वेदना तीन प्रकार की होती है- सुख वेदना, दुरूख वेदना एवं सुख-दुख वेदना। वेदना से तृष्णा उत्पन्न होती हैं एक से दो, दो से चार, चार से आठ दस से सौ सौ से हजार, हजार से लाख आदि पाने की लालसा ही तृष्णा है। तृष्णा से उपादान और उपादान से भय अर्थात् पुन: जन्म लेने की अभिलाषा उत्पन्न होती है। तदनन्तर जन्म, जरा- मरण अनुगमन करता है। प्रतीत्य समुत्पाद की यह दिशा कारण की ओर जाने वाली है। जरा मृत्यु का कारण जन्म है। जन्म का कारण पुन: जन्म लेने की भावना है। जन्म ग्रहण करने की भावना का आधार उपादान है। उपादान का कारण तृष्णा है, इस समुत्पाद

अर्थात् जन्म-मरण के कारण फल सिद्धान्त की बारह कड़ियाँ इस प्रकार हैं-

1. अविद्या	2. संस्कार	3. विज्ञान
4. नामरूप	5. षडायत	6. स्पर्श
7. वेदना	8. तृष्णा	9. उपादान
10. भव	11. जाति-जन्म	12. जरा-मरण।

तृष्णा दो प्रकर की होती है- भव तृष्णा और विभव तृष्णा। तृष्णा का कारण वेदना है। इसी वेदना अर्थात् अनुभूति से तृष्णा जागृत रहती है। वेदना का कारण स्पर्श है। यह कई प्रकार का होता है। जैसे चक्षु स्पर्श (आंख से), प्राण स्पर्श (नाक से), कर्ण स्पर्श (कान से), जिह्वा स्पर्श (जीभ से), काय स्पर्श (त्वचा से) और मन स्पर्श (स्पर्श का कारण आयतन) उक्त पाँच ज्ञानेन्द्रियों का कारण नाम-रूप (नाम और शरीर) है। इस नाम-रूप का कारण संतोनोत्पत्ति का विज्ञान हैं विज्ञान का कारण संस्कार ज्ञान, वेदना, चखना, सुनना आदि हैं संस्कार का कारण अविद्या है। इसको इस प्रकार भी जाना जा सकता है कि अविद्या निरोध से संस्कार का निरोध होता है। संस्कार निरोध से विज्ञान का निरोध होता है। विज्ञान के निरोध से नाम-रूप का निरोध होता है। इसी निरोध क्रम से सभी कड़ियों का निरोध हो जाता है। (दर्शन दिग्दर्शन, राहुल सांकृत्यायन, प्रकाशक किताब महल, 22 - ए, इलाहाबाद, पृ. 415)

यह उनका प्रथम शोध था, जिसे उन्होंने आषाढ़ी पूर्णिमा को सारनाथ में पंचवर्गीय भिक्खुओं को संबोधित करते हुए धम्म चक्कप्पवत्तन (धम्म चक्र प्रथम संचालन) किया था। इस धम्म चक्र प्रवर्तन सूत्र की गुणता और दैनिक जीवन में उपयोगिता ही बुद्ध धम्म की प्रासंगिक रहेगा। जिसमें 24 (चौबीस) तीलियों के धम्मचक्क की विशेषता बतलाई गई है। प्रथम दो चरम सीमाएं हैं। जिसमें प्रत्येक सुख चाहने वाले को बचना चाहिए। पहली चरम सीमा भोग-विलास की अर्थात् काय सुख है और दूसरी चरम सीमा काय- क्लेश की है। जैसे जाड़े के मौसम में नदी में खड़े होना, गर्मी में आग तापना, निराजल उपवास रहकर मृत्यु की प्राप्ति कुपोषण का शिकार होना या दूसरी तरफ उपाध्य का शिकार होकर दुखी होना, गरीबी निर्धनता से दु:खी होना या अत्याधिक धनवान हो जाने से उसकी रक्षा-सुरक्षा के लिए दु:खी होना, ये दोनों चरम सीमाएं मानव के लिए अहितकारी है, इसलिए व्यक्ति को इससे बचना चाहिए और जीवन के लिए दोनों सीमाओं के बीच का रास्ता अर्थात् मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए। दूसरा चार श्रेष्ठ सत्य के बारे में बताया। (1) दु:ख श्रेष्ठ सत्य है, क्योंकि संसार का प्रत्येक प्राणी दु:खी है, वह कहीं और किसी भी परिस्थिति में हो। (2) यह दु:ख सकारण है। यह सदैव से साथ में नहीं था, बल्कि कारण पाकर पैदा हुआ है। (दु:ख समुदाय श्रेष्ठ सत्य)। (3) इस दु:ख को दूर किया जा सकता है (दुरूख निरोध श्रेष्ठ सत्य)। (4) उस दु:ख को दूर करने का उपाय भी है, जिसे दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा श्रेष्ठ सत्य कहा गया है। दु:ख दूर करने का उपाय आठ अंगों वाला है, जिसे आष्टांगिक कहते हैं। ये श्रेष्ठ आष्टांगिक मार्ग इस प्रकार है-

1. सम्यक दृष्टि- किसी वस्तु का ठीक-ठीक रूप से समझने और देखने को कहते हैं।
2. सम्यक संकल्प - किसी कार्य को पूरा करने के लिए दृढ़ निश्चय करना।
3. सम्यक वचन-झूठ और कठोर न बोलना तथा चुगली न करना अर्थात् संयमित बोलना।
4. सम्यक कर्मान्त- चोरी, व्यभिचार, हिंसा न करना और मद्यपान से दूर रहना अर्थात् केवल कल्याणकारी कार्यों को करना।
5. सम्यक आजीविका- जीविकोपार्जन के लिए ऐसे कार्य किए जाएं, जिससे दूसरों का अहित न हो अर्थात् समुचित साधनों से रोजी कमाना है।
6. सम्यक व्यायाम-अच्छे विचारों का संचय करना और बुरे विचारों का तयाग करना अर्थात् कार्यों को बढ़ाना और अहितकारी कार्यों को छोड़ने का प्रयास करना।
7. सम्यक स्मृति- जागरूक रहना अर्थात् किए कार्यों का स्मरण करना।
8. सम्यक समाधि - लक्ष्य तक पहुँचने के लिए सतत प्रयत्न करना अर्थात् निदान का निरन्तर चिंतन करना।

उपर्युक्त 3 चरम सीमाएँ (दो अतियाँ), 4 श्रेष्ठ सत्य एवं 8 आष्टांगिक मार्ग के साथ-साथ 10 पारमिताएं जोड़कर धम्मचक्क की 25 तीलियाँ होती हैं। उसी को बुद्धत्व का बुद्ध ज्ञान यानी प्रतीत्य समुत्पाद कहते हैं। अर्थात् कोई भी कार्य बिना कारण के नहीं होता। सुख-दुख, लाभ-हानि, यश- अपयश, जय-पराजय, गरीबी- अमीरी, विद्या अविद्या, दिन-रात आदि सभी बातें बिना कारण के नहीं होतीं। यदि कारण को दूर कर

दिया जाए। तो उसका फल पैदा नहीं होगा। पारमिता का अर्थ पूर्णता या शुद्धता है। ये दस पारमिताएं निम्नवत हैं-

1. **दान** – सत्य एवं न्याय के लिए सब कुछ दे देना।
2. **शील**– मन, वचन, काया को पूर्णत: अज्ञानी कर्मों से परिशुद्ध रखना यानी सदाचारी होना।
3. **निष्काम** – परोपकार के लिए स्वार्थ त्याग की पूर्णता अर्थात् इच्छा त्याग।
4. **प्रज्ञा** – ज्ञान का संपादन करना तब तक जब तक ज्ञान की पूर्णता प्राप्त न हो।
5. **वीर्य**–पराक्रम की पूर्णता अर्थात् अविचल साहस।
6. **शान्ति** – क्षमा, धैर्य और सहनशीलता की पूर्णता।
7. **सत्य** – मन, वाणी, काया से सत्य से विचलित न होना।
8. **अधिष्ठान** – संकल्प की पूर्णता अर्थात् संकल्प के प्रति दृढ़ निश्चयी।
9. **मैत्री** – अतुल प्रेम अर्थात् माता की भांति इकलौते का प्रेम सभी प्राणियों से करना।
10. **उपेक्षा**– तटस्थता का भाव अर्थात् सुख-दुख, शत्रु-मित्र सबसे एक भाव (सम्भाव) (बौद्ध संस्—ति, राहुल सांकृत्यायन, कौशल प्रकाशन हडको औरंगाबाद, प्रथम संस्करण 1952, पृ. 520)

इस प्रकार से तथागत बुद्ध का पहला दर्शन था- संसार का प्रत्येक प्राणी दु:खी है। दूसरा दर्शन था - चार श्रेष्ठ सत्यों की खोज। तथागत बुद्ध का तीसरा दर्शन था कि प्रत्येक जीव नर-मादा के संयोग से उत्पन्न होता है। अर्थात् उसको बनाने वाला ईश्वर नहीं है। प्राणी अपना मालिक स्वयं ही है। उसका मालिक कोई दूसरा नहीं हो सकता। इसलिए किसी पराशक्ति में विश्वास न करके मानव अपने पर विश्वास करे। (अत्ता हि अत्तनो भयो, कोहि नाथो परोसिया)

बुद्ध दर्शन विश्व का अद्वितीय दर्शन है, जिसमें मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक, धामिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में विस्तृत वैज्ञानिक खोज को समाहित किया गया है। इसलिए तथागत बुद्ध को विश्व का प्रथम सामाजिक क्रांतिकारी, अर्थशास्त्री, वैज्ञानिक, प्रथम धम्म प्रवर्तक, प्रथम शान्ति एवं प्रथम महामानव भ्रमण चिंतन जाना-माना जाता है। तथागत बुद्ध का यह भी दर्शन था कि आत्मा नाम की कोई वस्तु नहीं है, जो इस शरीर में बाहर से आकर प्रवेश करती है, वह अजर-अमर हो और ईश्वर या परमात्मा का एक अंश हो। जब परमात्मा या ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है, तब उसका अंश आत्मा कैसे हो सकता है? महामानव गौतम बुद्ध ने आत्मा-परमात्मा, स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य, लोक-परलोक, पूर्वजन्म- पुनर्जन्म को मिथ्या एवं आधारहीन चमत्कारी सोच बताया है। मानव के वर्तमान सुख-दुख, विद्या अविद्या उसके पूर्वजन्मों का फल नहीं है, बल्कि उसके चारों ओर व्याप्त और उसकी पारिवारिक परिस्थितियाँ हैं। इसे पूर्व जन्मों के कर्मों का फल बतलाना समाज को गुमराह करने वाले स्वार्थी लोगों का काम है। (ललित विस्तर, शान्ति भिक्खु शास्त्री, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, द्वितीय संस्करण 1998, पृ. 13)

जाति-पाति को सिरे से नकारते हुए तथागत ने कहा कि जातियां तो पशु- पक्षियों कीड़े-मकोड़ें में होती है और पेड़-पौधों में पाई जाती हैं। परन्तु मानव में जातिगत कोई लक्षण दिखाई नहीं देते, जिससे देखते ही पता चल जाए कि यह व्यक्ति किस जाति का है? मानव स्वयं सभी जीवों में एक जाति है। मानव में विभिन्न जातियाँ बतलाकर भेदभाव, ऊँच-नीच, छुआछूत की सोच को विकसित करना मानवता के प्रति खुला षड्यंत्र, द्रोह, अधर्म एवं अपराध है। (तथागत बुद्ध उनका धम्म- डॉ. बी. आर. अम्बेडकर - सम्पादक - डॉ. एम. एल. परिहार, पृ. 20)

ऐसा प्राय: विद्वानों द्वारा कहा जाता है कि महामानव बुद्ध एक धाम्मिक एवं दार्शनिक महापुरुष ही थे, परन्तु वह पूर्णतया सत्य नहीं है। धाम्मिक क्षेत्र में उनके दर्शन, उनकी संपूर्ण दीक्षा महासागर कीएक धारा मात्र है। तथागत बुद्ध ने सामाजिक, सांस्कृतिक, धाम्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक उत्पीड़न के कारणों को विस्तार से समझने की कोशिश की। उन कारणों को जानने के पश्चात् ही उनके निदान एवं निराकरण के मार्ग प्रस्तुत किए। तथागत बुद्ध ने देखा कि एक मानव दूसरे मानव का क्रय-विक्रय करता है। उसे दास, सेवक बनाकर पशु से भी बदतर मानता था। मानव के सामने रोजी-रोटी का सवाल सदैव रहा है और हमेशा रहेगा। भूखा व्यक्ति किसी भी शिक्षा-दीक्षा को ग्रहण नहीं कर सकता। इसलिए तथागत ने भूख को सबसे बड़ी बीमारी कहा। इच्छा परमा रोग। इस संदर्भ में आलवी का सन्देश उल्लेखनीय है। तथागत बुद्ध के समय में आलवी एक अनार्य राज्य था। जिसकी वर्तमान पहचान उन्नाव जिले में बांगरमऊ कस्बे के पास स्थित नेवल के विशाल टीले से

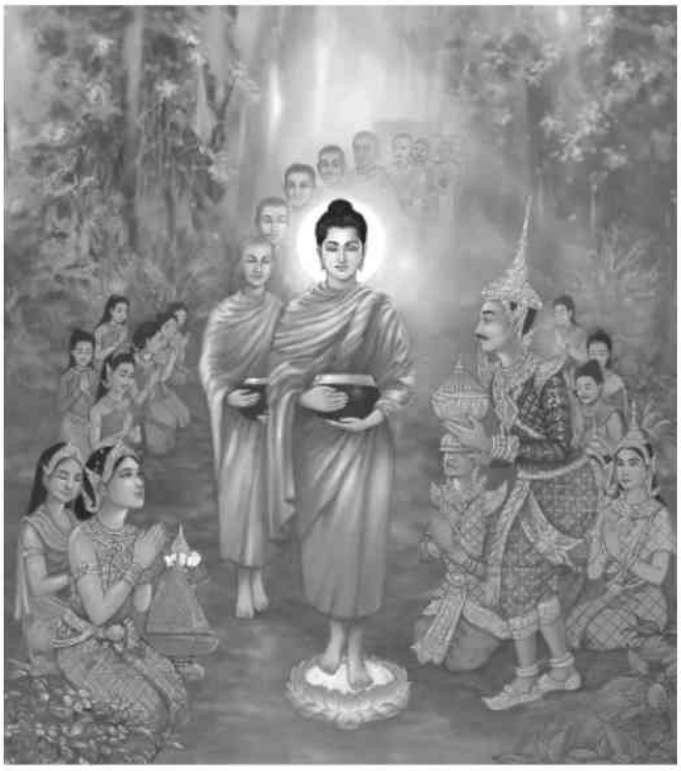

की जाती है। उसकी राजधानी भी आलवी थी। राजा का नाम आलवक था, जो तथागत का अनुयायी था। एक दिन आलवी में तथागत धम्म दीक्षा दे रहे थे। उस दीक्षा सभा में एक किसान भूखा-प्यासा बैठा था। उसके भूख का कारण उसके बैल खो जाना था, जिसे खोजने में वह सारा दिन भूख-प्यासा ही धम्म दीक्षा में चला गया, किन्तु उसका मन शिक्षा-दीक्षा में नहीं लग रहा था। जिसका मन तथागत ने जाना और एक भिक्खु को आदेशित कर किसान को भोजन करवाया। धम्म- दीक्षा समाप्त होने पर भिक्खुओं की जिज्ञासा के बारे में तथागत ने सारी घटना बताई, तभी महामानव बुद्ध ने भूख को महान रोग बताया। सभी जीव भोजन पर ही आश्रित हैं। इसलिए जीवन में भोजन का प्रथम स्थान है। जब भोजन का स्थान है, तो भोजन जुटाने के लिए आय का साधन अनिवार्य है। (बौद्ध संस्कृति, राहुल सांकृत्यायन, कौशल प्रकाशन हडको औरंगाबाद, प्रथम संस्करण 1952, पृ. 50)

तथागत बुद्ध ने स्पष्ट कहा था कि जो व्यक्ति बिना उपादान किए राष्ट्र का अन्न खाता है, वह जलते हुए लोहे का गोला खाता है। ऐसे में उन्होंने उन लोगों के लिए कहा था, जो लोग न श्रम करते थे और न ही उत्पादन समाज की संपन्नता के लिए आवश्यकता के अनुसार पूर्ति आवश्यक है और पर्याप्त पूर्ति के लिए उत्पादन आवश्यक है। चूंकि तथागत स्वयं खत्तिय परिवार में पैदा हुए थे। जहाँ एक खेती-किसानी व कृषि महोत्सव में राजा स्वयं किसानों के साथ हल चलाता था, को तथागत ने देखा था। इसलिए तथागत ने समाज से गरीबी, निर्धनता एवं दुर्बलता को समाप्त करने के लिए उत्पादकता पर बल दिया। आज की सामाजिक स्थिति ऐसी है कि कुछ लोग उत्पादन करने वाले कुपोषण के शिकार हैं और कुछ ऐसे भी हैं, जो बिल्कुल उत्पादन नहीं करते, वे खाते-खाते अपाच्य के शिकार होकर मरते हैं। तथागत बुद्ध सामूहिक स्वामित्व और संतुलित वितरण प्रणाली के जनक थे। उन्होंने आय-व्यय के नियम को भी प्रतिपादित किया। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आमदनी को चार भागों में बांटें। एक भाग से अपना पालन-पोषण करें, दो भाग से जीविका चलाने का उद्यम करें, रोजगार करें और चौथे भाग से भविष्य की आपातकालीन आवश्यकता की पूर्ति के लिए सुरक्षित बचत करें, जिससे अचानक रोग-दोष आपत्ति - विपत्ति आने पर किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े। तथागत ने समाज में आर्थिक गैर-बराबरी के कारण को भी खोज निकाला था। इसका कारण उन्होंने बताया कि कुछ लोग आवश्यकता से अधिक दूसरों के लिए कम पड़ जाती है। इसलिए संग्रह, संचय, स्वभाव में बदलाव के लिए उन्होंने सर्वप्रथम भिक्खु संघ में नियम बना दिया कि कोई भी भिक्खु दो जोड़ी चीवर से अधिक नहीं रख सकता। यह नियम आज भी भिक्खु संघ में लागू है। (बौद्ध संस्कृति, राहुल सांकृत्यायन, कौशल प्रकाशन हडको औरंगाबाद, प्रथम संस्करण 1952, पृ. 54)

बुद्ध धम्म के आर्थिक विकास के अवदान को अर्थ की आवश्यकता, उत्पाद, वितरण और उपभोग आदि क्षेत्रों में देखना चाहिए। पेट भरने की समस्या मनुष्य के अविर्भाव के साथ ही उत्पन्न हो गई होगी, क्योंकि पेट का खाली रहना अर्थात् भूख, सबसे बड़ा रोग है। (इच्छा परमा रोगा) जब भूख रूपी रोग से मनुष्य पीड़ित होता है, तब उसे धर्म-कर्म कुछ अच्छा नहीं लगता। उस समय से तो भूख मिटाने के लिए भोजन ही चाहिए। यहीं उसके उत्पादन पर बल देते हुए कहा था- ''बिना उत्पादन किए, यदि कोई मनुष्य राष्ट्र का अन्न (भोजन) खाता है, तो वह तप्त लोहे का गोला ही खाता है।

बुद्ध के इस आर्थिक उपदेश ने शिल्पकला, उद्योग और कृषि को बढ़ावा दिया तथा प्रोत्साहित किया। शिल्पकारों के

शिल्पी संघ बनें, शोषण से वे सुरक्षित हुए। वे अपने सिक्के तक चलाने में सक्षम थे। उनका प्रतिनिधि (महाजेठक) राजा की परिषद में एक सदस्य होता था। सोने, चांदी और तांबे के सिक्के (निष्क, सुवर्ण, कार्षापण) का प्रचलन हुआ। समुद्र पार देशों से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हुए। बड़े-बड़े जलयानों को कुशल नाविक चलाते थे। दिशा जानने तथा नजदीक समुद्र तट जानने के लिए पक्षियों का प्रयोग किया जाता था। (बौद्ध संस्कृति, राहुल सांकृत्यायन, कौशल प्रकाशन हडको औरंगाबाद, प्रथम संस्करण 1952, पृ. 54)

तथागत गौतम बुद्ध ने आवश्यकतानुसार वितरण प्रणाली की स्थापना की, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यकतानुसार वस्तु प्राप्त हो सके। इसी प्रकार आय के उपभोग के लिए वह सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि व्यक्ति अपनी आमदनी को चार भागों में बांटकर पहले भाग को रोजमर्रा की रोटी-दाल पर खर्च करे, दूसरे और तीसरे दो भागों से कोई उद्योग-धंधा अपनाकर उत्पादन करे और चौथे भाग को भविष्य के लिए आकस्मिक खर्च हेतु सुरक्षित रखे. ताकि अचानक जरूरत पड़ने पर उसे दूसरों से कर्ज न लेना पड़े और दूसरों के सामने हाथ न फैलाना पड़े। इस प्रकार बुद्ध ने सुखी और संपन्न जीवनयापन के लिए स्वस्थ आर्थिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था। जो देश बुद्ध के बताए हुए आर्थिक सिद्धान्तों का अनुपालन कर रहे हैं, वे वर्तमान में भी सुखी. संपन्न, समृद्धशाली और आत्मनिर्भर हैं और जो देश (जैसे भारत) उन सिद्धान्तों की उपेक्षा कर रहे हैं, ये दूसरे से कर्ज लेकर आर्थिक गुलामी में ही जकड़ते जा रहे हैं।

इस प्रकार तथागत बुद्ध विश्व के प्रथम अर्थशास्त्री थे। वे देश में एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था लागू करना चाहते थे, जो मध्यममार्गी हो, लोग अपव्ययी न होकर मितव्ययी हो, अपनी आवश्यकता के साथ-साथ दूसरों की आवश्यकता व पूर्ति का भी ध्यान रखे। दान एवं त्याग की आदत डालें, सामूहिक स्वामित्व व संतुलित वितरण प्रणाली लागू करें, तो निश्चय ही कोई देश दूसरे देश के सामने हाथ नहीं फैलाएगा। सभी स्वनिर्भर व स्वावलंबी होंगे। आज दुनिया को बुद्ध के ऐसे ही आर्थिक विचारों की परम आवश्यकता है। सिंधु घाटी सभ्यता के पश्चात् तथागत बुद्ध के समय की नगरीय सभ्यता के अवशेष प्राप्त होते हैं। बुद्ध के समय में आर्थिक दृष्टि से यह युग सुख संपन्न युग था। तब कृषि, शिल्प उद्योग एवं व्यापार सभी उन्नति हेतु बल सबसे पहले दूध देने वाले पशुओं के वध पर रोक लगाने का आदेश दिया था। उनके समय में शिल्पियों के 18 संगठन थे, जिन्हें 'अष्टादस शिल्प श्रेणी' कहा गया है। इसके प्रधान को 'जेष्ठक' कहते थे। ये शिल्प श्रेणियां निर्मित वस्तुओं निर्यात और आवश्यकतानुसार आयात भी करती थी, इस प्रकार बुद्धयुगीन भारत एक समृद्धिशाली भारत था। (ललित विस्तर, शान्ति भिक्खु शास्त्री, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, द्वितीय संस्करण 1998, पृ. 20)

तथागत बुद्ध ने लगभग 2580 वर्ष पहले ही कहा था कि व्यक्ति भौगोलिक परिस्थितियों के अधीन होता है। इसलिए खान-पान, रहन-सहन, वेश - 9 देश - काल परिस्थिति के अनुसार होना चाहिए। किसी देश की भौगोलिक परिस्थिति की नकल करके हम कभी भी समृद्धिशाली नहीं हो सकते। उत्पादन के बारे में बुद्ध ने कहा था कि उत्पादन में गुणवत्ता का ही महत्व होता है। गुणवत्ता के लिए मन की कुशलता व पूरे मनोयोग से कार्य करने की आवश्यकता होती है। शुद्ध मन व चित्त से ही गुणवत्ता में निखार आता है। (दर्शन दिग्दर्शन, राहुल सांकृत्यायन, प्रकाशक किताब महल, 22 - ए, इलाहाबाद, पृ. 341)

बुद्ध दर्शन की ही विशेषता है कि नारी समाज को स्वतंत्रता के साथ-साथ सम्मान भी प्रदान किया गया। उसमें बौद्ध भिक्खुनियों, उपदेशिकाएं ही नहीं बनीं, अपितु उन्होंने अनेक साहित्य का सृजन भी किया, जिसका संग्रह 'थेरीगाथा' नामक ग्रंथ में प्राप्त होता है। बुद्ध दर्शन में स्वतंत्र चिंतन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

'कालामसुत्त' स्वतंत्र चिंतन का घोषण पत्र ही कहा जाता है। इस सुत्त में कालाम गणराज्य के लोगों को शिक्षा देते हुए तथागत बुद्ध ने कहा था कि ''किसी बात को इसलिए आँखें बंद करके नहीं मान लेना चाहिए, क्योंकि ऐसा सुना जा रहा है, ऐसी परंपरा है। यह बात ऐसी है, यह बात शास्त्र के अनुकूल है, यह बात न्यायसंगत है, यह बात किसी बड़े आदमी ने कही है, यह हमारे मन के अनुकूल है, यह बात श्रमण गुरु ने कही है या यह बात किसी प्रसिद्ध वक्ता ने कही है। किसी बात को सुनकर उस पर विचार और मनन करना चाहिए तथा सुखकारी प्रतीत हो, तभी उसे स्वीकार करना चाहिए। उपर्युक्त बातें तथागत ने विचरण करते हुए कही। जब कालाम लोगों के गणराज्य की राजधानी के सुपत्त नामक कस्बे में पहुँचे। कालामी ने तथागत से प्रश्न किया कि भंते जो कोई श्रमण, साधु-संन्यासी या उपदेशक यहाँ आता है, तो वह अपने सम्प्रदाय (धर्म) का प्रचार करते हैं और दूसरों

के धर्म की निन्दा तथा बहिष्कार करते हैं। इससे हम लोगों को संदेह होना, दुविधा में पड़ना स्वाभाविक है कि किसने सत्य कहा और किसने झूठ? तथागत ने कहा- ''कालामो! तुम्हारा संदेह करना ठीक है, दुविधा में पड़ना भी ठीक है। लोभ, द्वेष और मोह के वशीभूत होकर मानव जीवों की हत्या करता है, चोरी करता है, पराई स्त्री के पास भी जाता है, झूठ भी बोलता है और दूसरों को भी वैसा करने के लिए प्रेरित करता है, जोकि उसे बहुत दिनों के लिए अहितकर और दुखकर होता है। अतरू उन्हें छोड़ दो।'' ष्ऐसे वैर रहित तथा निर्मल चित्त वाले व्यक्ति ज्ञान और स्मृति से युक्त होकर बौद्धजन (श्रमण) मैत्रीपूर्ण चित्त की सभी दिशाओं में विचरण करते हैं। वे आश्वस्त हो जाते हैं, क्योंकि यदि परलोक है, तो मैं निश्चित ही मृत्यु उपरांत सुगति को प्राप्त कर स्वर्ग में पहुँचूँगा और यदि परलोक नहीं है, तो भी मैं निश्चित ही इसी जन्म में सुखी होकर विचरण करता हुआ जीवनायापन कर रहा हूँ। यदि पाप या अज्ञान कर्म करने वाले का बुरा होगा। तो फिर पाप न करने के कारण मुझे दु:ख कहाँ मिलेगा। यदि करने से किसी का बुरा नहीं होता है, तो निश्चिम ही दोनों ओर से मैं अपने को विशुद्ध पा रहा हूँ। ये 4 आश्वासन वह स्वयं ही प्राप्त कर लेता है। बौद्ध धम्म के विकास का इतिहास, डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, प्रकाशक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, तृतीय संस्करण 1990, पृ. 81)

तथागत बुद्ध के उपर्युक्त दर्शन को सुनकर कालामो की आँखें खुल गई और प्रसन्नतापूर्वक बोले कि आपने तो अन्धेरे में दीपक जला दिया। हम सभी आपकी शरण ग्रहण करेंगे, धम्म की शरण ग्रहण करते हैं। भंते हम सबको अपना अनुयायी स्वीकार है।

यह बुद्ध दर्शन की ही महता है कि राजगृह के सुनीत को, श्रावस्ती के सोपाक और सुप्पिय चाण्डाल पुत्रों को, भयंकर, क्रूर आतंकी डाकू अंगुलिमाल को उपालि नाई को, कृषक सुमंगल, छन्न शुद्धोदन का गृह सेवक, राजगृह का धनी कुम्हार श्रावस्ती का कुप्पत कुरू भिखारी, कौशलराज का हथवाल विजित सेन, आलवी का शूद्र राजा आलवक, सम्राट बिम्बिसार, सम्राट महापदमनन्द, सम्राट अशोक, श्रावस्ती की चाण्डाल कन्या प्रकृति, सेठ अनाथ पिण्डिक, सम्राट अजातशत्रु को साधारण से असाधारण बनाने का कार्य बुद्ध दर्शन ने ही किया। अनेक उपेक्षित, अछूत, घृणित, भययुक्त, अपमानित समाज के लोगों को सम्मानित करके भिक्खुसंघ का सदस्य बनाया। वहीं अनेक राजा-महाराजा को भी बुद्ध धम्म की दीक्षा देकर उन्हें नया जीवन प्रदान किया। (मज्झिम निकाय, राहुल सांकृत्यायन, सम्यक् प्रकाशन 32/3, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009, पृ. 4)

आज दुनिया भर के वैज्ञानिकों, विद्वानों, चिंतकों और दार्शनिकों की निगाह बुद्ध दर्शन की ओर लगी हुई है। दुनिया के बुद्ध अनुयायी की संख्या सर्वाधिक है। आज एक देश दूसरे देश पर अपनी परमाणु शक्ति, अस्त्र-शस्त्र से प्रभाव जमाना चाहता है। कब्जा करना चाहता है, जिससे विश्व बंधुता छिन्न-भिन्न हो रही है। दुनिया के बड़े-बड़े देश सूर्य, चंद्रमा एवं अन्य ग्रहों पर कब्जा करने में होड़ लगा रखे हैं। विज्ञान ने इतनी ज्यादा प्रगति कर ली है कि क्षण भर में किसी भी देश को मटियामेट कर सकते हैं। किन्तु इस विनाशक शक्ति को बनाने वालों में शान्ति नाम की कोई चीज नहीं है, वे व्याकुल घबराए एवं आतंकित हैं और उनमें इतनी शक्ति नहीं है कि वे एक चलता-फिरता समता, करुणा, प्रज्ञा, प्यार से युक्त व्यक्ति बना सकें। वे वैज्ञानिक दुनिया को दुखी कर सकते हैं, संपन्न व समृद्धिशाली बना सकते हैं। किन्तु सुखीं मानव व अनुभूति युक्त मानव नहीं बना सकते हैं। यदि बुद्ध दर्शन की आवश्यकता है। महामानव गौतम बुद्ध का समता, करुणा, प्रज्ञा, प्यार का सन्देश पूरी दुनिया को सुखी बना सकती है। इसी से इसकी प्रासंगिता सिद्ध होती है। (भारतीय बौद्ध दर्शन, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, नई दिलली, द्वितीय संस्करण 2010, पृ. 276)

सन्दर्भ - संकेत

1. बौद्ध संस्कृति, राहुल सांकृत्यायन, कौशल प्रकाशन हडको औरंगाबाद, प्रथम संस्करण 1952, पृ. 9
2. ललित विस्तर, शान्ति भिक्खु शास्त्री, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, द्वितीय संस्करण 1998, पृ. 13
3. तथागत बुद्ध उनका धर्म डॉ. बी. आर. आंबेडकर, सम्पादक-डॉ. एम. एल. परिहार, प्रकाशक-बुद्धम् पब्लिशर्स, जयपुर, पृ. 136
4. दर्शन दिग्दर्शन, राहुल सांकृत्यायन, प्रकाशक किताब महल, 22-ए, इलाहाबाद, पृ. 514
5. बौद्ध धम्म के विकास का इतिहास, डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, प्रकाशक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, तृतीय संस्करण 1990, पृ. 81
6. मज्झिम निकाय, राहुल सांकृत्यायन, सम्यक् प्रकाशन 32/3, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009, पृ. 4
7. भारतीय बौद्ध दर्शन, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, नई दिलली, द्वितीय संस्करण 2010, पृ. 276

संत रविदास के काव्य में बौद्ध चिंतन

- देवचंद्र भारती 'प्रखर'

> **"रविदासिया धर्म के लोग बौद्ध धम्म के प्रति असंतोष प्रकट करते हैं, जबकि बौद्ध धम्म के सिद्धांत विज्ञान पर आधारित हैं और सार्वभौमिक सत्य के अत्यधिक निकट हैं। यदि संत रविदास जी की कविताओं का सम्यक मूल्यांकन किया जाए, तो उनकी मूल विचारधारा बुद्ध की वाणी के समान सिद्ध होती है।"**

संतकवि रविदास जी के जीवन परिचय और उनकी विचारधारा के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। हिंदू विद्वान उन्हें एक हिंदू भक्त के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जबकि बौद्ध विद्वान उन्हें बौद्ध विरासत का पुरोधा कहते हैं। संत रविदास जी के पंथ का अनुसरण करने वाले लोग उनके नाम पर 'रविदासिया धर्म' की स्थापना कर चुके हैं। रविदासिया धर्म का अनुपालन करने वाले लोग उन्हें देवता की तरह पूजते हैं, लेकिन उन्हें एक भक्त मानते हैं। यह विचित्र विडंबना है कि एक भक्त एक देवता भी है। वास्तव में, 'रविदासिया धर्म' का केवल नाम ही अलग है, जबकि वह हिंदू धर्म की ही एक शाखा है, क्योंकि उसकी समस्त विचारधारा हिंदू धर्म के समान है। ध्यातव्य है कि रविदासिया धर्म के लोग बौद्ध धम्म के प्रति असंतोष प्रकट करते हैं, जबकि बौद्ध धम्म के सिद्धांत विज्ञान पर आधारित हैं और सार्वभौमिक सत्य के अत्यधिक निकट हैं। यदि संत रविदास जी की कविताओं का सम्यक मूल्यांकन किया जाए, तो उनकी मूल विचारधारा बुद्ध की वाणी के समान सिद्ध होती है।

डॉ. सूरजमल सितम जी ने अपनी पुस्तक 'बोधिसत्व गुरु रविदास और उनके आंदोलन' में बुद्ध-वाणी और रविदास-वाणी में समानता सिद्ध किया है। डॉ० सितम जी के अनुसार, ''भगवान बुद्ध ने मन के महत्व पर अधिक जोर दिया है, इसलिए धम्मपद ग्रंथ की शुरुआत ही मन से की गई है - 'मनो पुब्बंगमा धम्मा मनोसेट्ठा मनोमया/मनसा चे पसन्नेन भासति वा करोति वा/ततो नं सुखमन्वेति छाया व अनपायिनी' अर्थात् जब व्यक्ति स्वच्छ मन से बोलता व कार्य करता है, तब सुख उसके पीछे-पीछे वैसे ही हो लेता है, जैसे कभी साथ न छोड़ने वाली उसकी परछाई उसके साथ रहती है।''[1] इसी प्रकार संत रविदास जी ने भी मन की पूजा अर्थात् मन को निर्मल करने और साधने का विचार प्रकट किया है। यथा :-

मन ही पूजा मन ही धूप। मन ही सेऊँ सहज स्वरूप।।[2]

बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर जी ने अपनी पुस्तक 'बुद्ध और उनका धम्म' में लिखा है, ''जाति-पाँति के लिए संघ में कोई स्थान न था। सामाजिक स्थिति का संघ में कोई स्थान न था। संघ के भीतर सभी सदस्य समान थे। संघ के अंदर छोटे-बड़े का निर्णय सदस्य के गुणों से होता था, न कि उसके जन्म से। जैसा तथागत ने कहा था कि संघ एक समुद्र के समान है और भिक्षु नदियों के समान हैं, जो समुद्र में विलीन हो जाती हैं।''[3] तथागत बुद्ध ने कहा - ''जाति मा पुच्छ चरणं पुच्छ।'' अर्थात् जाति मत पूछो, आचरण पूछो। इसी प्रकार संत रविदास जी ने भी कहा है :-

रविदास जन्म कै कारनै, होत न कोऊ नीच।
नर कू नीच करि डारि है, ओछे करम कौ कीच।।[4]

तथागत गौतम बुद्ध ने सारनाथ में पाँचों ब्राह्मण परिव्राजकों को उपदेश देते हुए सफल और कल्याणकारी जीवन के आठ मार्ग बताये, जिसे अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है। अष्टांगिक मार्ग हैं - सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक कर्मांत, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि। राहुल सांकृत्यायन ने ठीक प्रयत्न (सम्यक व्यायाम) का स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है, ''इंद्रियों पर संयम, बुरी भावनाओं को रोकने तथा अच्छी भावनाओं के उत्पादन का प्रयत्न, उत्पन्न अच्छी भावनाओं को कायम रखने का प्रयत्न - ये ठीक प्रयत्न हैं।''[5] सम्यक व्यायाम जैसी उक्ति का प्रयोग संत रविदास जी ने भी अपने एक पद में किया है। यथा :-

सो कहा जाने पीर पराई। जाकी दिल में दरद न आई।।[6]

स्वरूपचंद्र बौद्ध जी ने अपनी पुस्तक ''बौद्ध विरासत के पुरोधा गुरु रविदास'' में लिखा है, ''बुद्ध वचन को समय-समय पर हजारों विद्वानों ने भिक्खु-संघ की सम्मिलित संगीति-सभाओं में समयानुसार संशोधित किया और सुक्त या शब्द-रटंत (कंठस्थ) के आधार पर प्रतिष्ठित ज्ञान की समपुष्टि की गयी। परिणामत: इस ज्ञान में गतिशीलता आयी और विचार व विमर्श को महत्त्व मिला। यही गतिशीलता और विश्वास आगे चलकर विभिन्न यानों के रूप में पल्लवित हुआ। हीनयान, महायान, वज्रयान और सहजयान इसकी क्रमबद्ध कड़ियाँ हैं।''[7] सहजयान ही परिणत होकर नाथपंथ और संत-परंपरा का रूप ग्रहण कर लिया। इस प्रकार संतों की वाणी में उनकी पूर्व परंपरा की विचारधारा समाहित है। राहुल सांकृत्यायन ने बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन के शून्यता-दर्शन को स्पष्ट करते हुए लिखा है, ''आचार्य ने बतलाया है कि जो शून्यता को समझता है, वह प्रतीत्य-समुत्पाद (विच्छिन्न प्रवाह के तौर पर उत्पत्ति) को समझ सकता है। प्रतीत्य-समुत्पाद समझने वाला चारों आर्य सत्यों को समझ सकता है। चारों सत्यों के समझने पर उसे तृष्णा-निरोध (निर्वाण) आदि पदार्थों की प्राप्ति हो सकती है। प्रतीत्य-समुत्पाद जानने वाला जान सकता है कि क्या धर्म है, क्या धर्म का हेतु और क्या धर्म का फल है ? वह जान सकता है कि अधर्म, अधर्म हेतु अधर्म फल क्या है? क्लेश (चित्त-मल), क्लेश-हेतु, क्लेश-वस्तु क्या है ? जिसे यह सब मालूम है, वह जान सकता है कि क्या है सुगति या दुर्गति? क्या है सुगति-दुर्गति में जाना, क्या है सुगति-दुर्गति में जाने का मार्ग, क्या है सुगति-दुर्गति से निकलना तथा उसका उपाय। शून्यता से नागार्जुन का अर्थ है - प्रतीत्य-समुत्पाद। विश्व और उसकी सारी जड़-चेतन वस्तुएँ किसी भी स्थिर, अचल तत्व से बिल्कुल शून्य हैं। अर्थात् विश्व घटनाएँ हैं, वस्तु-समूह नहीं।''[8] बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर ने अपनी पुस्तक 'बुद्ध और उनका धम्म' में लिखा है, ''बौद्ध 'शून्यता' का मतलब सोलह आने निषेध नहीं है। इसका मतलब इतना ही है कि संसार में जो कुछ है, वह प्रतिक्षण बदल रहा है।''[9] वास्तव में, शून्यवाद का सिद्धांत अनित्यता के सिद्धांत का ही परिवर्तित रूप है। संतकवि रविदास जी अपने एक पद में कहते हैं कि अब मैं हार चुका हूँ। लोक-वेद की बड़ाई करके, दोनों तरह से (हाल-चाल) थक चुका हूँ। नाचते-गाते और सेवा-पूजा करके भी थक चुका हूँ। काम क्रोध से शरीर थक चुकी है; और दूसरी बात क्या कहूँ ? अब तो मैं न ही रामजन हो पाता हूँ, न हीं भक्तजन हो पाता हूँ और न ही देवताओं के पैर पखारता हूँ। मैं जो-जो भी करता हूँ, उससे और भी सांसारिक बंधनों में बँधता जाता हूँ। पहले तो मैं ज्ञान का दीपक जलाया, फिर उसे बुझा दिया। सुन्न सहज (शून्य साधना) में मैंने दोनों को छोड़ दिया। अब मैं न ही राम कहता हूँ, न ही खुदा कहता हूँ। मैंने ज्ञान-ध्यान (पूजा-पाठ) दोनों छोड़

दिया है। अब तक मैं जिसके लिए दौड़ता फिरता था, मैंने उसे अपने ही भीतर पा लिया है। अब मेरी पाँचों इंद्रियाँ मेरी सहेली बन गयी हैं। उन्होंने मुझे असली निधि को बता दिया है। अब मैं इस संसार में रहकर ही प्रसन्न रहता हूँ और अब वह (शून्य) भी मेरे अंदर समा गया है। रविदास जी कहते हैं कि अब वह (शून्य) मुझे सहज रूप में सम्मुख दिखाई देता है। रविदास जी ने सोहम् (स: + अहम्) अर्थात् 'वह से मैं की ओर', 'बाहर से भीतर की ओर' के साधना-रूप को स्वीकार किया। इस प्रकार की साधना तथागत गौतम बुद्ध के शून्यवाद के निकट है। अवलोकनार्थ :-

अब मैं हार्यो रे भाई।
थकित भयो सब हाल-चाल थैं, लोकन वेद बड़ाई।।
थकित भयो गाइण अरु नाचण, थाकी सेवा पूजा।
काम क्रोध थै देह थकित भई, कहूं कहां लो दूजा।।
राम जन होऊँ ना भगत कहाऊँ, चरण पषालूं न देवा।
जोई जोई करूं उलटि मोही बांधे, ताथे निकट न भेवा।।
पहली ज्ञान का किया चांदना, पीछे दीया बुझाई।
सुन्न सहज में दोऊ त्यागे, राम कहूँ न खुदाई।।
हरै बसे खटक्रम सकल अरू, दूरिब कीन्हें सेऊ।
ज्ञान ध्यान दोउ दूरी कीए, दूरिब छाड़ि तेऊ।।
पंचू थकित भए जहां-तहां, जहां-तहां थिति पाई।
जा कारण में दौरो फिरतो, सो अब घट में पाई।।
पंचू मेरी सखी सहेली, तिन निधि दई बताई।
अब मन फूलि भयो जग महिया, उलटि आपो में समाई।।
चलत-चलत मेरो निजमन थाकौ, अब मोपै चलो न जाई।
सोई सहज मिलो सोइ सन्मुख, कहै रैदास बताई।।[10]

भद्रशील रावत, श्याम सिंह और स्वरूपचंद्र बौद्ध आदि बौद्ध विद्वानों ने संत रविदास जी को बौद्ध विचारधारा का पोषक सिद्ध किया है। भद्रशील रावत जी ने 'संत रविदास वाणी में बौद्ध चिंतन' नामक अपनी पुस्तक में संत रविदास जी की वाणी में बौद्ध-चिंतन का सम्यक विवेचन किया है। श्याम सिंह जी ने अपनी पुस्तक 'संत रविदास जी की मूल विचारधारा' में संत रविदास जी की मूल विचारधारा को बौद्ध विचारधारा के रूप में विश्लेषित किया है। स्वरूपचंद्र बौद्ध जी ने तो 'बौद्ध विरासत के पुरोधा गुरु रविदास' नामक पुस्तक लिखकर उन्हें बौद्ध विरासत का पुरोधा घोषित कर दिया है। अत: संत रविदास जी के काव्य का गंभीरतापूर्वक अध्ययन करने से स्पष्ट है कि उनके काव्य में बौद्ध-चिंतन का विपुल प्रभाव है। इसका एक कारण यह भी है कि संत रविदास जी के गुरु रैवतप्रज्ञ जी थे, जिन्हें डॉ. एस.के. पंजम जी ने अपनी पुस्तक 'संत रविदास-जन रविदास' में शारदानंद के नाम से अभिहित किया है।

संदर्भ :-

1. बोधिसत्व गुरु रैदास और उनके आंदोलन : डॉ० सूरजमल सितम, पृष्ठ 117-118
2. मध्ययुगीन काव्य : संपादक डॉ सत्यनारायण सिंह, पृष्ठ 140, प्रकाशक-विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, संस्करण 2017
3. बुद्ध और उनका धम्म : डॉ. भीमराव आंबेडकर, पृष्ठ 241, प्रकाशक - बुद्ध और उनका धम्म सोसायटी आफ इंडिया नागपुर, संस्करण 2011
4. बौद्ध विरासत के पुरोधा - गुरु रैदास : स्वरूपचंद्र बौद्ध, पृष्ठ 123, प्रकाशक - सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2008
5. बौद्ध दर्शन : राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ 23-24, प्रकाशक - किताब महल नई दिल्ली, पहला संस्करण 1943
6. मध्ययुगीन काव्य : संपादक डॉ. सत्यनारायण सिंह, पृष्ठ 141, प्रकाशक-विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, संस्करण 2017
7. बौद्ध विरासत के पुरोधा - गुरु रैदास : स्वरूपचंद्र बौद्ध, पृष्ठ 17, प्रकाशक - सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2008
8. बौद्ध दर्शन : राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ 23-24, प्रकाशक - किताब महल नई दिल्ली, पहला संस्करण 1943
9. बुद्ध और उनका धम्म : डॉ. भीमराव आंबेडकर, पृष्ठ 149, प्रकाशक - बुद्ध और उनका धम्म सोसायटी आफ इंडिया नागपुर, संस्करण 2011
10. मध्ययुगीन काव्य : संपादक डॉ. सत्यनारायण सिंह, पृष्ठ 139, प्रकाशक - विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, संस्करण 2017

रघुबीर सिंह 'नाहर' की रचनाओं में भाव पक्ष

- डॉ. राम मनोहर राव

"नाहर जी की रचनाओं को देखकर हम यह कह सकते हैं कि उन्होंने रचनाधर्मिता निभाते हुए सामाजिक कुरीतियों, जातिगत भेदभाव, नागरिकों का कर्तव्य भाव, प्राकृतिक परिदृश्य के सहारे प्रेम और श्रृंगार, संविधान एवं लोकतंत्र के प्रति समर्पण भाव एवं सम्मान, लेखकों साहित्यकारों और पत्रकारों को कर्तव्य बोध कराने के साथ बुद्ध एवं आंबेडकर के दर्शन की स्वीकार्यता के फलस्वरूप ज्ञान, धम्म एवं प्रेम को सर्वोच्च स्थान तथा राष्ट्र प्रेम आदि सभी भावों को दर्शाया है।"

साहित्य की अनेक विधायें हैं। जो सामाजिक परिवेश से प्रभावित होता है, तो उसे प्रभावित भी करता है। मनुष्य की कल्पनाशीलता जितनी प्रबल होती है, वह साहित्य सृजन में उतनी अधिक सहायक होती है। कल्पनाशीलता के बाद मनुष्य की संवेदनशीलता अनेकों विधाओं मे साहित्य सृजन मे सक्षम बनाता है। वह जो देखता है, सुनता है, समझता है, उसे अपने शब्दों में गढ़ कर पुन: समाज को परोस देता है। साहित्य सृजन में अनवरत क्रियाशील ऐसे ही एक संवेदनशील कवि रघुवीर सिंह नाहर जी हैं, जिन्होंने अपनी सृजनशीलता का लोहा मनवाया है। हरियाणा मे महेंद्रगढ़ जनपद के मुड़िया खेड़ा में 7 अक्टूबर 1949 को श्रद्धेया सुन्दर देवी और श्रद्धेय उमीचंद के पुत्र के रूप में जन्म लेने वाले पेशे से तो एडवोकेट हैं, परन्तु दिन भर मुकदमों एवं न्यायालय में प्रतिद्वंदी वकील से बहस करने में व्यस्त रहने के बावजूद फुरसत के क्षणों में साहित्य सृजन करते हैं। उनकी कुंडलियाँ, दोहे आदि छन्दबद्ध रचनाएँ अत्यंत चर्चा में रही हैं।

यहाँ उनकी इन कृतियों में रचनाओं के भाव पक्ष पर ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा। नाहर जी अन्य कवियों की तरह कल्पनाशील एवं संवेदशील तो हैं ही, उन्होंने अधुनान्त ज्ञान एवं अनेक क्षेत्रों की समस्याओं अनेक प्राकृतिक, सामाजिक, मानवीय स्वभाव, संकल्पना / अंतविरोधों का सहज ही अपनी रचनाओं में समावेश किया है। अनेक समस्याओं का हल भी सुझाया है। हम पहले नाहर सतसई के दोहों को उद्धृत करते हुए उनके विभिन्न भाव-पक्षों को उजागर करते हैं।

''रेखाएँ कब बोलती, कर्म बोलता जाय
बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय।।1।।

उन्होंने इस दोहे के माध्यम से भाग्यवादिता को नकारते हुए कर्म करने को प्रेरित किया है। उसको सहज रूप से सोदाहरण स्पष्ट किया कि बबूल का पेड़ लगाओगे, तो आम नहीं काँटे ही मिलेंगे।

नाहर जी एक तो पेशे से संविधान के आलोक में वकालत करते ही हैं, परन्तु उनके प्रथम दोहे के रूप में इस रचना का भाव भी यही स्पष्ट करता है कि सभी व्यक्ति समान हैं। संविधान ने प्रशंसनीय समता का अधिकार प्रदत्त किया है वही उनका शिकायती आकलन कि संविधान को असली जामा नहीं पहनाया गया।

संविधान ने दिया समता का अधिकार।
धरती पर उतरा नहीं बार-बार धिक्कार।।2।।

उन्होंने निम्न दोहे में गणतन्त्र दिवस के बाद लागू संविधान के बावजूद वर्तमान हालात के प्रति बहुत ही क्षुब्ध भाव प्रदर्शित किया है-

रोज चिराग जला रहे, फिर भी काली रात।
आजादी के बाद भी, आया नहीं प्रभात।।3।।

वहीं नाहर साहब की रचनाओं में आशावादिता का पुट स्पष्ट झलकता है जैसे..

ढलता सूरज कह रहा, सुन लो मेरी बात।
मन उदास करना नहीं, लौटूँगा प्रभात।।4।।

लक्ष्य निर्धारण एवं सफलता प्राप्त करने के लिए वे स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करने से भी नहीं चूकते।

निर्धारित कर लक्ष्य को शुरू करो फिर काम।
पूरा होने तक कभी, नहीं करो आराम।।5।।

उनकी पैनी नजर से एकता का अभाव एवं सामाजिक असमानता और जुल्म भी नहीं बच पाते जैसे कि निम्न दोहे से स्पष्ट है।

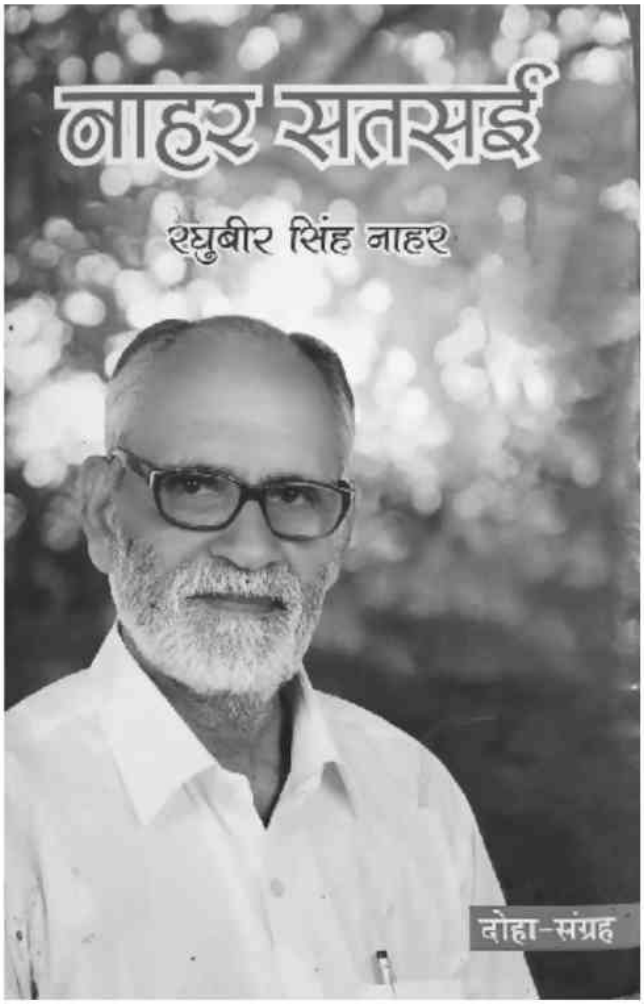

देख रहे हैं दूर से, बस्ती के सब लोग।
एक-एक कर पिट रहे, लगा अहम का रोग।।6।।

गुलाम बनाए रखने की साजिश के तहत किस प्रकार कमजोर व्यक्ति के ऊपर ही चोरी अपराध का आरोप लगा दिया जाता है जब कि वह अपराध कोई अन्य दबंग व्यक्ति करता है।

गलती कोई भी करे, आए तेरा नाम।
कुलक यहीं चाहे सदा, बन कर रहो गुलाम।।7।।

उनके इस दोहा को पढ़ कर उनकी धर्म-परायणता के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण साफ झलकता है-

जप-तप में बैठे रहे, किया समय बर्बाद।
मानव को क्या दे गये, विपदा और विवाद।।8।।

राजनीतिक दलों के नेताओं के चाल- चलन का शिकार आम नागरिक अपनी व्यथा कैसे प्रदर्शित करता है। उदाहरणार्थ यह दोहा -

आसमान की छाँव ही, है मेरा आवास।
पाँच वर्ष में इक दफा ,आते मेरे पास।।9।।

रघुवीर सिंह नाहर जी ने यह दोहे अपनी आयु के सत्तर वर्ष पूर्ण होने के आस पास ही लिखे हैं।

अंतत: उनके अनुभव, उनकी पैनी दृष्टि स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है , जैसे कि शिक्षा के महत्व को रेखांकित करता यह दोहा -

पल-पल हर पल कह रहा, अब तो कहना मान।
लिखना-पढ़ना सीखलो, मिले मान-सम्मान।।10।।

सफेदपोश अपराधियों जो धार्मिक गुरु भी हैं, उनके हाल ही मे खुलासों को भी अपनी रचनाओं में सम्मिलित करना उनकी सामाजिक एवं नैतिक दायित्व को दर्शाता है।

साधक बाधक बन गये, घटा देश का मान।
आश्रम में अस्मत लुटी,जाने सकल जहान।।11।।

दीर्घकालीन अनुभवों एवं बाबा साहब डॉ. आंबेडकर द्वारा अंगीकार करने के फलस्वरूप बौद्ध ज्ञान को श्रेष्टम कहने में कोई संकोच नहीं किया -

बौद्ध ज्ञान है श्रेष्टतम, कोई नहीं विकार।
विरल में जा मिले, यह जीवन का सार।।12।।

साहित्य का महत्व एवं परिणाम व्यक्तिगत से ले कर समाज एवं राष्ट के उत्थान में सहायक होता है, बशर्ते लेखक की पैनी नजर हो एवं सामयिक विषयों पर बेबाकी से कलम चलायें।

चलती जब-जब लेखनी, बन कर पैनी धार।
सदा देश आगे बढ़ा, मिला प्यार ही प्यार।।13।।

लोकतंत्र की महिमा का वर्णन करते हुए कवि ने बहुत बेबाकी से लोकतंत्र का महत्व बताया तथा इसका परिणाम भी बता दिया कि सरकारें भी बदल दीपती हैं बशर्ते, अपनी बात को पुरजोर ढंग से रखते हुए जनमानस के अपने पक्ष में कर लिया जाय।

जन मानस के बीच में, नहीं किसी का जोर।
कब सिंहासन बदल दे, मचा मचा कर शोर।।

कटाक्ष वर्तमान में राजनीतिक पतन स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है कि किस प्रकार राज-नेता जनता को भ्रमित कर

तरह-तरह के ढोंग रचते हैं। जन हित के कार्य न कर तरह-तरह के पाखंड करते करते हुए वोट अपने पक्ष में कर लेते हैं।

राज नेता बनने का लगा भंयकर रोग।
लूट रहे हैं देश को, मिलकर ढोंगी लोग।।15।।

त्याग एवं परोकार के भाव दर्शाता हुआ यह दोहा उनकी जनहितकारी मानसिकता को निरूपित करता है। उदाहरण उन्होंने दीपक का लिया है जो स्वयं जलते हुए दुनिया को प्रकाश दे कर आलोकित करता है।

औरों को खुशियाँ मिलें ऐसा करना काम।
खुद जल जग रोशन किया, दीपक तुझे सलाम।।16।।

लेखक, साहित्यकारों, एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करने वालों को बहुत ही बेबाकी से सीख/निर्देश देते हुए कवि ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि जो-जो घटित हो रहा है सभी का उल्लेख करें , साथ ही आहान करते हैं कि अब चुप नहीं रहना अर्थात न डरने की आवश्यकता है और न बहरे गूंगे बन कर रहना है बल्कि सभी की कलुषता, बुरे कर्मों को उजागर करते हुए उनकी पोल खोलता है ताकि आम जनता को इनका वास्तविक रूप समझ में आयें और तदनुरूप जनता स्वयं आवाज उठायेगी और उनका बहिष्कार कर लोकतांविक ढंग से बदलाव लायेगी।

क्या क्या घटना हो रही, बोल लेखनी बोल।
रहना है अब चुप नहीं, खोल सभी की पोल।।17।।

कवि ने निम्न दोहे में प्रकृति का सजीव वर्णन के अपने कोमल ह्रदय में श्रंगार रस के भाव भी उजागर कर दिये हैं एवं बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुति देते हुए उनका क्रमिक वर्णन करते हुए कहा है कि लताओं में पुष्प खिलने से बहार आते ही आकर्षित हो कर पुष्प-पुष्प मिल रहे है और उनपर मंडराते हुए भ्रमर कैसे फूलों का मनुहार कर रहे हैं।

लता बाग़ में खिल रही आने लगी बहार।
पुष्प-पुष्प से मिल रहे, भृंग करे मनुहार।।18।।

धार्मिक परिदृश्य पर कटाक्ष कवि ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए अपने ज्ञान, विवेक एवं संस्कारों को इस दोहे में उतारने में सफल रहे हैं एवं स्पष्ट रूप से कह दिया कि जो मूढ़ लोग पत्थर की पूजा करते हैं उनको लोग भले ही सम्मान देते हों परन्तु हमें ऐसे लोगों के सामने नतमस्तक होना स्वीकार नहीं है और यही हढ़ता कवि का भी चरित्र-चित्रण करनें हेतु पर्याप्त उदाहरण है।

पत्थर बन कर पूजते रहे, चढ़े पुष्प के हार।
उनके सम्मुख हम झुके , हमें नहीं स्वीकार।।19।।

श्रंगार रस का पुट भी उनकी रचनाओं मे मिलता है एवं उसके उपयोंग द्वारा जातीय असमानता को भी उजागर किया है और यह स्पष्ट कर दिया कि प्रेम सर्वोपरि है, उसे कोई जातिगत भेद भाव प्रभावित कर समाप्त नहीं कर सकता है, यथा

हुस्न देखता है नहीं, आभूषण की जात।
ठुमक-ठुमक कर आ गई, पिया मिलन की रात।।20।।

आध्यात्य एवं जीवन की वास्तविकता को कबीर की शैली में प्रस्तुत किया गया निम्न दोहा पठनीय है।

साफ दिखाई दे रहा, जीवन मिला उधार।
यही छोड़ जाना सभी, सब कुछ है बेकार।।21।।

सामाजिक मूल्यांकन एवं धर्मगुरुओं पर कटाक्ष करते हुए उनका चरित्र चित्रण कर आम लोगों को सजग करने का सफल प्रयास किया है जो निम्न दोहे से स्पष्ट है -

भांग धतूरा पी रहे, रोज छलकते जाम।
बैरागी बन कर फिरे, कभी न करते काम।।22।।

धार्मिक उन्माद पर करारा प्रहार करते हुए नाहर साहब ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि धर्मों को कट्टरता से पालन करने वालों के आचरण से किसी को प्रेम नहीं मिल सकता द्यविभिन्न धर्म के ठेकेदार आम लोगों मे नफरत ही फैला रहे हैं। जो सामाजिक सौहार्द के लिए अत्यंत घातक है।

मंदिर मस्जिद में कभी, नहीं मिलेगा प्यार।
रोज बढ़ाए जा रहे, नफरत की दीवार।।23।।

आजादी के बावजूद वास्तविकता का विशलेषण करते हुए निम्न दोहे के माध्यम से वर्तमान परिदृश्य को सच्चाई को उजागर करते हुए चिंता व्यक्त की है कि संविधान जिसमें समता एवं सम्मान के साथ व्यक्ति की गरिमा बनाये रखने को भी प्रावधानित किया गया है, लेकिन आजादी के इतने वर्षों के बाद भी बह सम्मान नहीं मिला।

जन गण मन हम गा रहे रखा न जन का ध्यान।
नजर उठा कर देख लो, कहाँ गया सम्मान।।24।।

जनता को संदेश देते हुए स्पष्ट रूप से कहा है कि संविधान ने हमें अनेक अधिकार दिये हैं, विशेष रूप से मान-सम्मान। अंत: संविधान का पालन करना ही चाहिए तभी

देश महान बनेगा।

शक्ति दिया संविधान ने, दिया मान-सम्मान।
सब इसका पालन करो, होगा देश महान।।25।।

कवि के निम्न दोहे वर्णित अलग अलग मझाव के लोगों में प्रेम बहुत ही अच्छे ढंग प्रस्तुत किया गया जो भावनात्मक रूप से पाठकों को सामाजिक सौहार्द बढ़ाने को प्रेरित करता है।

हमने देखा गाँव में एक-निराला खेल।
चोट लगी थी राम को, रहीम मल रहे तेल।।26।।

समाज का वास्तविक चित्रण घटती गंभीर घटनाओ का उदाहरण देते हुए निम्न दोहे से स्पष्ट करते हुए अपराधियों के निरन्तर अपराधों के प्रति चिंता व्यक्त की हैं।

पापाचारी बढ़ रहे, सरे आम हों खून।
रोज अस्मिता लुट रही, अँधा है कानून।।27।।

राजनितिक असफलता एवं कुप्रभाव का जिक्र करते हुए वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी को उजागर करते हुए सरकारों की कारगुजारी एवं असफलता का बेबाकी से उल्लेख किया है।

रोजगार मिलते नहीं यौवन है अब मौन।
ज्वाला फिर भड़की कभी, देश बचाए कौन।।28।।

वरिष्ठ कवि रघुवीर सिंह नाहर जी द्वारा रचित कुण्डलियों के संग्रह ''अवरोधों के बीच'' के आद्योपांत पाठन से स्पष्ट हुआ कि वे दोहे ही नहीं, कुण्डलियों की रचना में भी प्रवीण हैं। उनकी छन्दबद्ध ये रचनांए व्याकरणीय शिल्प से तो सुसज्जित हैं ही, उनका भाव पक्ष भी दमदार है। कुण्डली में छः पन्क्तियों के कारण कवि को अपनी बात रखने एवं पूर्ण भाव प्रदर्शित करने में बहुत सहूलियत होती है।

उदाहरणार्थ कुण्डली-संग्रह की पहली रचना देखें-

चढ़ते दौड़े बहुत खिंची नहीं लगाम
अवरोधों के बीच में अटके पड़े धड़ाम
अटके पड़े धड़ाम, गिरे के कौन उठाये
मतलब का संसार रोशनी कौन दिखाए
कह नाहर कविराय धम्म की बातें चढ़ते
बढ़ते चारों ओर ,विजय की सीढी चढ़ते।।29।।

राष्ट्र प्रेम के भाव को दर्शाती निम्न कुण्डली पठनीय इसलिए भी है कि इसमें धम्म के प्रमुख अवयव शील को अनुकरणीय भी बताया गया है।

झंडा मेरे देश का, फहराये चहुँ-ओर।
दिन-दिन हम आगे बढ़े, बनें जगत सिरमौर।।
बनें जगत सिरमौर, शील का पाठ पढ़ायें।।
करें सभी सत्कार, धम्म का राग सुनायें।।
कह नाहर कविराय, कहीं फिर चले ना झंडा।
बढ़े अमन हर ओर फहरता भारत झंडा।।30।।

कवि नाहर जी ने गरीब नट परिवार की स्थित का बहुत ही मार्मिक चिरणं किया है और भुखमरी की लाचारी पर प्रकाश डालते हुए कि किस तरह नट की बेटी पैसे के लिए डोरी पर चढ़ कर करतब दिखाने को विवश हैं।

डोरी पर चलती रही, नाची बारम्बार।
भूख मिटाने के लिए, करती यत्न हजार।।
करती यत्न हजार, हुई ना तनिक कमाई।
कुनबा है लाचार, पास ना धेला-पाई।।
कह नाहर कविराय, रबड़ है नट की छोरी।
पल-पल मुड़ती देख, चढ़ी है ऊँची डोरी।।31।।

सामाजिक विषमता एवं भेदभाव का एक उदाहरण कि किस प्रकार छोटी जाति के दूल्हे को घोड़े पर चढ़ने से सवर्ण लोग नापसंद करते हैं एवं मार-पीट तक कर लेते हैं। उनके घर की नारियां भयभीत रहने लगती हैं, परन्तु कानूनन यह गलत है और समता की सिफारिश करने वाले संविधान के तहत अब कार्यवाही भी होने लगी है।

घोड़ा चलता है नहीं, करता है इन्कार।
दुल्हा छोटी जाति का, कैसे हुआ सवार।
कैसे हुआ सवार, गाँव में लठ है भारी।।
बहके हैं सब लोग, घरों में डरती नारी।।
कह नाहर कविराय, पड़े जब विधि का कोड़ा।
करें नहीं इन्कार, चलें अब चढ़कर घोड़ा।।32।।

समाज में आडम्बर का बोलबाला है और इसी की विस्तृत चर्चा करते हुए कवि ने चिंता एवं रोष प्रकट किया है कि पत्थर पर भोग प्रसाद चढ़ाते हैं और भूखे पेट रहते हैं। फिर भी शिक्षित नहीं बनते। धार्मिक गुरु तरह-तरह से समाज में नफरत फैलाते हैं और लोग न इसका विरोध करते हैं और ना ही कोई पाखंड- पोषक उनकी सुनने वाले।

रोएं किसके सामने, बहरे-गूंगे लोग।
आडम्बर में फंस रहें, लगा भयंकर रोग।।
लगा भयंकर रोग, भोग पत्थर पर चढ़ते।
रहते भूखे पेट, कभी ना पोथी पढ़ते।।
कह नाहर कविराय, बीज नफरत के बोएं।
गूंगे-बहरे लोग, देख हालत को रोएं।।33।।

वर्तमान सरकार के प्रमुख राजनीतिक दल की गतिविधियों को निरूपित करते हुए कवि ने उसी के प्रतिफल को इंगित करते हुए चिंता व्यक्त की है कि देश में मात्र एक धर्म (भगवाधरियों का) को वरीयता देने पर देश की एकता निश्चित ही प्रभावित होगी और अन्त में यह चुनौती भी दी कि स्वयंभू विश्व गुरु हो कर पूरे देश को जोड़ते हुए अन्य धर्म /संप्रदायों के साथ एकता स्थापित करो।

भगवा चढ़ता जा रहा, कैसे है संदेश।
राजनीति के रंग में, रंग गया है देश।।
रंग गया है देश, एकता कहां रहेगी।
गंगा-जमुना धार, बताओ कहां बहेगी।।
कह नाहर कविराय, बने फिरते हो अगवा।
जोड़ो पूरा देश, रहे ना केवल भगवा।।34।।

मनुष्य को जिंदा रहने के लिए काया एवं जीव का एक साथ रहना आवश्यक है। उसी को श्रंगारिक भाषा में कबीर की शैली अपना कर कवि ने चिंता व्यक्त की है कि तेरा-मेरा साथ कब तक रहेगा। जीवन ने कितने नाच नचाये और यहाँ किस-किस से सामना हुआ। कवि को अन्त भी मालूम है अत: अपनी व्यग्रता नहीं छिपा सके। बहुत ही सुन्दर प्रस्तुति है कवि की निम्न कुंडली।

चुनरी ओढ़ी चाव से, चली पकड़ कर हाथ।
जानें ना कब-तक चले, मेरा-तेरा साथ।।
मेरा-तेरा साथ, देखते बादल छाये।
मिलते किससे नैन, सोचकर दिल घबराये।।
कह नाहर कविराय, किया है कैसा घूमर।
मिलें चोंच से चोंच, छोड़कर चलती चूनर।।35।।

हिन्दी साहित्यकार अपनी कृतियों में हिन्दी प्रेम किसी न किसी रूप में अवश्य दर्शाता है। हिन्दी के विस्तार की वे कामना भी करते है।

हिन्दी तेरे सामने, झुकता है संसार।
पोर-पोर में दिख रहा, भरा हुआ है प्यार।।
भरा हुआ प्यार, यार लगते हैं सारे।
बोलें मीठे बोल, कभी ना तुझे बिसारे।।
कह नाहर कविराय, बने माथे की बिंदी।
फैले अब संसार, हमारी प्यारी हिन्दी।।36।।

गरीब एवं कमज़ोर वर्ग के लोग जो झोपड़ियो में रहने को विवश है, वहाँ नितांत अँधेरा हे अँधेरा है। उसी अन्धकार में जीने की लाचारी का मार्मिक चित्रण करते हुए कवि ने जो वर्णन किया है, वास्तव में हृदयविदारक है, अंत में वे स्पष्ट करते है कि वहाँ न बाती है न तेल न दीपक ही जलते है जिसका सीधा अभिप्राय है की न तो उनके पास संसाधन हैं और न ही रोज़गार जिसके कारण वे भुखमरी के शिकार है और उनके जीवन में किसी सुप्रभात की कोई उम्मीद भी नही दिखती।

जलते हैं दीपक कहां, झोंपड़ियों के पास।
अंधकार में जी रहे, नहीं भोर की आस।।
नहीं भोर की आस, पड़े हैं भूखे-प्यासे।
सिलवट उनके गात, मिटें ना कभी जरा से।।
कह नाहर कविराय, सड़क पर जीवन पलते।
ना बाती ना तेल, कभी ना दीपक जलते।।37।।

कवि नाहर साहब का प्रेक्षण अत्यंत प्रभावी है और उन्होंने ने वर्तमान हालात को देखते हुए स्पष्ट कर दिया की एक भयंकर चाल/ षडयंत्र के अंतर्गत मनुवाद को फैलाया जा रहा है जिसके जाल में फंसा कर अपना उल्लू सीधा करने को वे प्रयासरत हैं अत: तुम सब जागो और इसका अविलम्ब विरोध करो।

जागो वक्त जगा रहा, बहुत बड़ी है चाल।
धीरे-धीरे बुन रहे, एक भयंकर जाल।।
एक भयंकर जाल, बनाएं सब को तोता।
फैलाएं मनुवाद, चौन से क्यों है सोता।।
कह नाहर कविराय, कभी ना डर के भागो।
जमकर करो विरोध, नींद से अब तो जागो।।38।।

कवि ने समता के अधिकार के तहत नारी उत्थान की भी समीक्षा की है और स्पष्ट का दिया कि नारी अबला नहीं अब सबला बन चुकी है। सशक्तिकरण के अनवरत प्रयास भी चल रहे है स अत: नारी अब सीना तान कर चलने लगी हैं। शिक्षित होकर संविधान के आलोक में वे प्रत्येक क्षेत्र में अग्रसर हो रही

है।

आंखों से ओझल हुआ, भूली सारी बात।
अबला से सबला बनी, अब नारी की जात।।
अब नारी की जात, चली है सीना ताने।
करें शिखर को पार, जहन में कसकर ठाने।।
कह नाहर कविराय, गिरे ना नर शाखों से।
कौन करेगा प्यार, गिरे हो तुम आँखों से।।39।।

वरिष्ठ कवि नाहर साहब ने अपनी निम्न कुंडली में अपने अनुभव को उंडेल कर स्पष्ट रूप से वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए चिंता व्यक्त की है कि समाज में हो रहे विघटन को कैसे रोका जाय। आज की अत्यंत ज्वलंत समस्या है समाज का टूटना। सभी लोग अपने अपने निजी स्वार्थों को पूर्ण करने में व्यस्त है और भीम के झूठे नारे लगा रहे हैं। एकता का आवाहन करते हुए पास-पास बैठ कर समस्या से निजात पाने का कवि ने उपाय भी सुझाया है जो प्रशंसनीय है।

टूटे हुए समाज को, अब जोड़ेगा कौन।
प्रश्न खड़ा है सामने, बैठे हैं अब मौन।।
बैठे है सब मौन, दिखाएं कौन नजारे।
अपनी - अपनी भूख, भीख के झूठे नारे।।
कह नाहर कविराय, रहोगे कब तक छूटे।
आओ बैठें पास, दिलों से कैसे टूटे।।40।।

अत: नाहर जी की उपर्युक्त रचनाओं को देखकर हम यह कह सकते हैं कि उन्होंने रचनाधर्मिता निभाते हुए सामाजिक, कुरीतियों, जातिगत भेदभाव, नागरिकों का कर्तव्य भाव, प्राकृतिक परिदृश्य के सहारे प्रेम और श्रंगार, संविधान एवं लोकतंत्र के प्रति समर्पण भाव एवं सम्मान, लेखकों साहित्यकारों और पत्रकारों को कर्तव्य बोध कराने के साथ बुद्ध एवं आंबेडकर के दर्शन की स्वीकार्यता के फलस्वरूप ज्ञान, धम्म एवं प्रेम को सर्वोच्च स्थान तथा राष्ट्र प्रेम आदि सभी भावों को दर्शाया है, जो प्रमाणित करता है कि वे समाज के सजग प्रहरी हैं एवं अपनी परिपक्व वैचारिकी के कारण अपनी रचनाओं से प्रभावित करते हैं।

संदर्भ-

1. नाहर सतसई-रघुवीर सिंह 'नाहर', प्रकाशक-साहित्य संस्थान गाजियाबाद संस्करण 2022; पृष्ठ-22
2. वही; पृष्ठ 21
3. वही; पृष्ठ- 25
4. वही; पृष्ठ-35
5. वही; पृष्ठ-32
6. वही; पृष्ठ-33
7. वही; पृष्ठ-57
8. वही; पृष्ठ-59
9. वही; पृष्ठ-62
10. वही; पृष्ठ-63
11. वही; पृष्ठ-67
12. वही; पृष्ठ-66
13. वही; पृष्ठ-35
14. वही; पृष्ठ-36
15. वही; पृष्ठ-44
16. वही; पृष्ठ-37
17. वही; पृष्ठ-78
18. वही; पृष्ठ-92
19. वही; पृष्ठ-24
20. वही; पृष्ठ-81
21. वही; पृष्ठ-98
22. वही; पृष्ठ-103
23. वही; पृष्ठ-107
24. वही; पृष्ठ-117
25. वही; पृष्ठ-118
26. वही; पृष्ठ-119
27. वही; पृष्ठ-120
28. वही; पृष्ठ-120
29. अवरोधों के बीच-रघुवीर सिंह 'नाहर', प्रकाशक-साहित्य संस्थान गाजियाबाद, संस्करण 2024, पृष्ठ -19
30. वही; पृष्ठ-32
31. वही; पृष्ठ-25
32. वही; पृष्ठ-27
33. वही; पृष्ठ-31
34. वही; पृष्ठ-22
35. वही; पृष्ठ-24
36. वही; पृष्ठ-90
37. वही; पृष्ठ-91
38. वही; पृष्ठ-92
39. वही; पृष्ठ-60
40. वही; पृष्ठ-95

आंदोलनकारी समाज सुधारक गुरु रविदास

-डॉ. सूरजमल सितम

"संत रविदास जी ने जन्म-जाति का विरोध करते हुए कहा कि हिंदुओं में जाति में से जाति ऐसे निकलती है, जैसे केले के तने में पत्ते में पत्ता रहता है। जब तक यह जातिप्रथा समाप्त नहीं होगी, मानव-मानव में मेल नहीं होगा। जाति-पांति के इस जाल में लोग उलझे हुए हैं और इंसानियत को यह जात-पांत खाए जा रहा है।"

सर्वविदित है कि बालक रविदास का जन्म चौदहवीं सदी में माघ की पूर्णिमा को बनारस के पास सीर गोवर्धनपुर में मां कर्मा के गर्भ से हुआ था। चूंकि बच्चे का जन्म दस वर्ष बाद भिक्षु रैवत के आशीर्वाद से हुआ था, इसलिए बच्चे का नाम रैवतदास रखा गया। यह नाम मुखसुख के कारण रविदास (रैदास) कहा जाने लगा। रविदास के विवाह के बारे में सभी विद्वान मानते हैं कि उनकी पत्नी लोनाबाई थीं। किंतु हमारा प्रश्न है कि क्या गृहस्थ भोगने वाला व्यक्ति घर से बाहर पूरा जीवन देशाटन कर सकता है? उत्तर होगा- कदापि नहीं। इस आधार से यह सिद्ध होता है कि उस समय की सामाजिक परंपरा के अनुसार रविदास का विवाह अल्पायु में लोनाबाई के साथ कर दिया गया था। किंतु बालिग होने पर संत जी ने अपना गौना कराने से इनकार कर दिया।

बालक रविदास बचपन से ही मेधावी थे। एक दिन गर्मी की ऋतु में वे गंगास्नान करने के लिए वस्त्र उतार रहे थे, तभी एक पंडा आया और डांटने लगा - अरे शूद्र चमार तू यहां नहाने की हिम्मत कैसे कर रहा है? गंगाजल को अपावन करेगा? भाग जा। तभी रविदास ने कहा -

का मथुरा का द्वारिका, का काशी हरिद्वार।
बाहर उदक पखारिया, भीतर विविध विकार।।

इस प्रकार रविदास जी घर चले गये और फिर कभी गंगास्नान के लिए नहीं गये। रविदास जी अपने लोगों को समझाया करते थे कि गंगास्नान करने से कोई पुण्य नहीं मिलता है। अपने कुएं पर नहाना ठीक है।

गंगा के बहिष्कार का प्रचार सुनकर ब्राह्मणों ने गंगादत्त और जमुनादत्त विप्रो को रविदास जी के पास भेजा। उन्होंने कहा - संत जी, कार्तिक का वार्षिक स्नान है। आप भी चलें। संत जी बोले - मैं गंगा को पावन नहीं मानता। विप्र बोले - संत जी, यदि नहीं जाना चाहते, तो प्रसाद ही दे दो। संत जी ने उन्हें चिढ़ाने के लिए चाम की चौगानी दे दी। साथ ही यह कहा कि गंगा हाथ बढ़ाकर ले, तब देना। वरना मुझे वापस लाकर दे देना। ब्राह्मण मन ही मन किलस गये। वहां जाकर वे सभी ब्राह्मणों के बीच यह बात बढ़ा-चढ़ाकर पेश किये। सभी ब्राह्मणों ने यह तय किया कि इस चमार को षड्यंत्र से समझाना पड़ेगा। उन्होंने एक सेठ से सोने का कंगन लेकर उन्हीं विप्रो को भेजा और कहा - उसे बताना कि गंगा जी ने तुम्हारी चौगानी ले ली और यह कंगन भेंट में दिया है। विप्रो ने ऐसा ही किया। किंतु गुरु रविदास ने कहा - क्यों मूर्ख बनाते हो? क्या गंगा नदी में आभूषण बहते हैं, जो तुम ले आये। जाओ, भागो यहां से। ब्राह्मण वहां से चले आये। किंतु उन्होंने जनता के बीच इसी कथा का प्रचार किया। उस समय काशी के चमार इतने सीधे थे कि उन्होंने इस कथा को गुरु जी का चमत्कार मान लिया।

संत कबीर भी पास के गांव के जुलाहे थे। संत रविदास और संत कबीर दोनों ही रात्रि के समय एकतारा और डफली के साथ भजन, दोहे और चौपाइयों में समाज-सुधार की बात सुनाते थे। वे ईश्वर-विरोधी, वेद-विरोधी, जन्म-जाति पाखंड और तीर्थ-पाखंड के मुद्दे रखते थे।

1. वेदों का विरोध

गुरुजी यह कहकर वेदों का विरोध करते थे कि वेदों को लोग सब रोगों का इलाज मानते। इनमें कुछ और ही लिखा है। सच नहीं लिखा है। जो इन पर विश्वास करें, वे अंधों की तरह हैं। इसलिए उन्हें अपनी बांह मत थमाना। मैं चारों वेदों का खंडन करता हूं। लोग मुझे दंडवत करते हैं। यथा -

जग में वेद वैद्य मानिजे।

इनमें अउर कहें कुछ अउर, कोऊ विसवास न कीजे।
चक्खु विहीन करतारि चलत है, इन्हें न असभुज दीजे।
चारिक वेद करूं खंडौति। जन रविदास करें दंडौति।

2. तीर्थों का विरोध

गुरुजी ने तीर्थों पर जाने का भी विरोध जताया। उन्होंने कहा – क्या मथुरा, क्या द्वारिका, क्या काशी–हरिद्वार? जिसे ढूंढ रहे हो, वह तो आपके मन में बसा हुआ है। मंदिरों में भी कोई नहीं है। सारे तीर्थ गुरु के चरणों में होते हैं। मानव के अलावा अन्य देवों में आस्था लगाना व्यर्थ है। मैं उसकी पूजा करता हूं, जिसका न कोई स्थान है, न ही कोई नाम है। यथा –

का मथुरा का द्वारिका, का काशी हरिद्वार।
रविदास खोज मन आपना, तब मिल्या दिलदार।।
थोथा मंदिर भोग विलासा, थोथे आन देव की आसा।
कहें रविदास मैं पूजूं ताही। जाका नांव ठांव को नाहीं।

गुरु रविदास जी ने दशरथ पुत्र राम को भी नहीं माना। उन्होंने कहा–मेरा राम तो सारे संसार में, घट–घट में समाया हुआ है। यथा –

रविदास हमारा राम जी, दशरथ का सुत नाहिं।
राम हमहि में रम रहा, विश्व कुटुंब के माहि।।

3. जन्म–जाति का विरोध

संत रविदास जी ने जन्म–जाति का विरोध करते हुए कहा कि हिंदुओं में जाति में से जाति ऐसे निकलती है, जैसे केले के तने में पत्ते में पत्ता रहता है। जब तक यह जातिप्रथा समाप्त नहीं होगी, मानव–मानव में मेल नहीं होगा। जाति–पांति के इस जाल में लोग उलझे हुए हैं और इंसानियत को यह जात–पांत खाए जा रहा है। यथा –

जात–जात में जात है, ज्यों केलन महि पात।
रविदास न मानस जुड़ सकें, जौ लौं जात न जात।।
जात–पात के जार में, उरझि रहा सब लोग।
मानुसता को खा रहा, रविदास जात का रोग।।

गुरु रविदास जी कहते हैं कि लोगों को जाति नहीं पूछनी चाहिए कि क्या जाति है? क्या समाज है? जो ब्राह्मण गुणहीन है, उसकी पूजा मत करिए। जो चांडाल गुणवान है, उसके चरण पूजना सही है। ब्राह्मण और चांडाल में कोई अंतर नहीं है। दोनों की देह लहू और मांस से बनी है तथा दोनों की अंग–रचना एक समान है। यथा –

रविदास न बामन पूजिए, जो होवें गुणहीन।
पूजिए चरण चांडाल के, जो होवे गुण प्रवीन।।
वामन और चांडाल में, नहिं अंतर है जान।
दोऊ में रक्त मांस है, दोऊ एक समान।।

संत रविदास जी लोगों को समझाते कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी की जाति इंसान है। वेद पढ़ने वाले को बामन और जूतियां बनाने व सिलने वाले को चमार कहा जाता है। बामन माथे पर तिलक और हाथ में माला रखते हैं तथा जनता को ठगते हैं। यथा –

रविदास जात मत पूछिए, का जात का पात।
वामन खत्री वैश सूद, सबन की एकै जात।।
वेद पढ़ई पंडित भया, पन्हों गांठ चमार।
रविदास मानस एक हैं, नांव धराई चार।।

माथे तिलक हाथ ले माला,
जग ठगने को स्वांग बनाया।
तिलक देइ पै तपन न जाई।

कुंभागढ़ की रानी जब काशी में घूमने आयी, तो वह गुरुजी से मिली और उनकी शिष्या बन गयी। अगले वर्ष रानी को पुत्र जन्मा। इस खुशी में राजा ने सामूहिक भोज का आयोजन

किया। उस अवसर पर गुरुजी का ब्राह्मणों से वाद-विवाद हुआ और ब्राह्मण हार गये। इसलिए ब्राह्मणों ने सहभोज में रविदास जी के साथ भोजन करने से इनकार कर दिया। गुरुजी ने बात स्वीकार कर ली और अपने कक्ष में रहे। जब ब्राह्मण भोजन करने लगे, तब उनके मन में घृणा थी। इसलिए उन्हें पास में रविदास जी बैठे हुए नजर आने लगे। राजा ने ब्राह्मणों के भोजन करने के बाद गुरुजी को भोजन कराया और विदा किया।

4. गुरु रविदास जी और सिकंदर लोदी

सिकंदर लोदी के दरबार में संत रविदास जी ने उसे उपदेश देते हुए कहा-हे सुल्तान! मैं मुसलमान से मित्रता रखता हूं और हिंदू से भी प्रेम करता हूं। क्योंकि सबके शरीर में सच्चे नाम रूप की ज्योति रहती है। इसलिए सभी मेरे मित्र हैं। हिंदू और मुसलमान में सिर्फ दो अंतर हैं, किंतु सभी माता की योनि से ही उत्पन्न हुए हैं। सभी की देह लहू, मांस और प्राण से ही परिपूर्ण है। हे सुल्तान! किसी भी जीव का वध नहीं करना चाहिए। क्योंकि सबके देह में एक ही साहेब (शक्ति) और एक ही रूह का वास है, कोई अलग प्रकार का नहीं।

मुसलमान सो दोस्ती, हिंदुअन सो करूं प्रीत।
रविदास जोत सतनाम की, सब ही अपने मीत।।
हिंदू तुर्क में भेद दो, आये एक ही द्वार।
प्राण पिंड लहु मांस है, कहैं रविदास चमार।।
रविदास जीव मत मारिए, एक साहब सब मांहि।
सब में एकहि आतमा, दूसर कोऊ नाहिं।।

इस प्रकार सुल्तान संतजी की बात से सहमत हुए और कहा - मुझे क्षमा कीजिए। आप अपनी इच्छा बताइए। संतजी बोले - मैं ऐसा राज्य चाहता हूं, जहां सभी को भरपेट अनाज मिले और छोटी-बड़ी कही जाने वाली जात को समान हक मिले। मैं इससे प्रसन्न रहूंगा। यथा -

चाहूं ऐसा राज मैं, जहां मिले सबन को अन्न।
छोट-बड़ सब सम बसें, रविदास रहें प्रसन्न।।

गुरुजी की बातों से प्रभावित होकर सुल्तान ने उन्हें आदर सहित पालकी में बिठाकर काशी के लिए विदा किया।

5. गुरु रविदास और गुरु नानक भेंट

गुरु रविदास जी की कई राज्यों में वाद-विवाद के विजय की बात जब पंजाब में गुरु नानक जी ने सुनी, तो उन्होंने गुरुजी से भेंट करने का मन बनाया। वे पूर्व दिशा की यात्रा पर निकल पड़े। पंजाब से कुरुक्षेत्र, जबलपुर, बोधगया, राजगीर, पटना, असम, जगन्नाथ, अयोध्या, हरिद्वार होते हुए वे काशी पहुंचे। वहां शूद्रों की दयनीय दशा पर विचार-विमर्श किया और संत सभा का आयोजन हुआ।

6. खुराल साहिब पंजाब में सत्संग

गुरुजी पंजाब (शंकरगढ़) के खुरालीगढ़ में पहुंचे और शूद्रों को जागृत किया। वहां भी ब्राह्मणों ने राजा बैन सिंह के दरबार में शिकायत की की अछूत संत ब्राह्मणों जैसा प्रवचन करता है। राजा ने गुरुजी को पकड़वाकर कारागार में बंद करा दिया और चक्की पर अनाज पीसने का आदेश दे दिया। रविदास जी ने अनाज नहीं पीसा, बल्कि ध्यान कर समाधि लगा ली। उन्होंने रिद्धि-सिद्धि के द्वारा ऐसा दृश्य दिखाया कि चक्की अपने आप चल रही है। प्रहरी यह देखकर आश्चर्य करने लगे। वे प्रात: राजा से सारी बात बताये। राजा ने भी वही दृश्य देखा और गुरुजी के चरणों में गिरकर माफी मांगी। इस प्रकार रानी तारा कौर और राजा बैन सिंह उनके शिष्य बन गये। उनके राज्य में पानी की बड़ी दिक्कत थी। राजा ने गुरुजी से प्रार्थना की कि कोई कृपा कर दें। कहा जाता है कि गुरुजी ने जल का सोता प्रकट कर दिया। आज वह सोता चरणगंगा के नाम से प्रसिद्ध है।

7. गुरुजी से मीरा ने दीक्षा ली

मीरा बचपन से ही कृष्ण की पुजारन थी। छोटी उम्र में ही मीरा का विवाह राणा सांगा के बड़े पुत्र भोजराज के साथ हो गया था। तब भी वह कृष्णमूर्ति की पूजा करती और भजन गाती थी। उसके बाद मीरा के दादा, चाचा, पिता, पति और ससुर का निधन हो गया। तब उसका ध्यान मूर्तिपूजा से हटा। एक दिन वह काशी पहुंची। वहां उसे अनेक संत, ब्राह्मण मिले। फिर वह काशी के बाजार में गुरु रविदास जी के शरण गयी और वहां उसने दु:ख दूर करने की युक्ति सुनी। मीराबाई गुरुजी के प्रवचन से प्रभावित हुई और उनकी शिष्या बन गयी। इसका प्रमाण मीराबाई द्वारा लिखित साखी में मिलता है। यथा -

काशी नगरी के चौक महि, मिले गुरु रविदास।
मोहे दिन्हीं ज्ञान की गुटकी।।

बौद्ध धम्म के प्रसंग में ब्राह्मण वर्ग की भूमिका

- ज्ञानेन्द्र प्रसाद

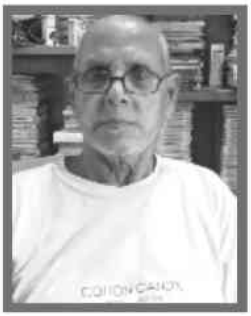

"ब्राह्मणों की दुष्प्रेरणा से सन् 1959 में कुछ दलित युवकों ने एक जाति बोधक नाम 'दलित साहित्य' की विचारधारा को आगे बढ़ाया और इसके 10-12 वर्ष पश्चात् एक विशाल सामाजिक क्रांति के नाम पर लोग कहते हैं, एक 'जोशी' उपनामधारी कम्युनिस्ट ब्राह्मण की दुष्प्रेरणा से उन्हीं महार युवकों ने 'दलित पैंथर' संगठन बनाया। इस प्रकार डॉ. बाबा साहेब के बाद की किशोर पीढ़ी को ब्राह्मणों ने 'दलित' शब्द से हिन्दुओं के खूँटे में बाँध दिया- दलित साहित्य, दलित पैंथर।"

1. भगवान बुद्ध के आविर्भाव काल से लेकर उनके महापरिनिर्वाण काल तक और आगे आधुनिक काल तक बौद्ध धर्म के प्रसंग में ब्राह्मण वर्ग की अनुकूल-प्रतिकूल दोनों प्रकार की भूमिकाएँ रहीं हैं।

2. श्रमण संस्कृति के दो उज्ज्वल नक्षत्रों में भगवान वर्धमान महावीर स्वामी ने जिस धर्म का आख्यान किया, लोक में वह जैन धर्म के नाम से विख्यात हुआ तथा भगवान बुद्ध ने जिस धर्म का आख्यान किया, लोक में वह मध्यम मार्ग - बौद्ध धर्म के नाम से विख्यात हुआ। अपने आरंभ काल से ही वह बौद्धिक, धर्मधारा सतत प्रवाहित होती हुई एक दिन संपूर्ण भारत को आप्लावित कर दी। सम्राट अशोक के काल तक आते-आते यह देश प्रबुद्ध भारत बन गया। अप्रतिहत वेग से इसका प्रचार-प्रसार हुआ, एशिया महाद्वीप का कोई भी देश अछूता न रहा। प्राचीन काल में ही वह यूरोप तक पहुँच गया था। आधुनिक युग में यह अमरबेलि सा संपूर्ण विश्व पर फैलता चला जा रहा है।

3. भारत में इसके दो मुख्य विरोधी धर्म रहे हैं - एक ब्राह्मण धर्म जिसका परवर्ती नाम हिन्दू धर्म है, दूसरा मध्यकाल में इस्लाम धर्म रहा है, जिसने इस धर्म के मूल पर प्रहार केवल भारत में ही नहीं किया, अपितु वह जहाँ-जहाँ भी गया, बौद्ध धर्म की अपूरणीय क्षति की। फिर भी इसका मूलोच्छेद नहीं हुआ और आज वह अपनी संपूर्ण गरिमा के साथ भारत सहित विश्व के अनेक देशों में विद्यमान है।

   जिस हिन्दू धर्म का सर्वोच्च ब्राह्मण वर्ग इसका विरोध करने में अग्रणी रहा है, उनमें से ऐसी दो धाराएँ अथवा सरणी निकलीं, जिनमें एक बौद्ध धर्म के प्रतिकूल रही तो दूसरी उसके अनुकूल उसका समर्थन करती रही और यह क्रम प्राचीन काल से अब तक चला आ रहा है।

5. आधुनिक युग के जागरण काल में जहाँ देशी/विदेशी इतिहासकारों / शोधकर्ताओं ने ऐतिहासिक बुद्ध के रूप को प्रकाश में लाया, वहीं ब्राह्मण वर्ग में से विपुल सत्यान्वेषी ब्राह्मण युवकों ने चीवर परिधान धारण कर इस महान धर्म की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया और यह क्रम सतत जारी है। ब्राह्मणों द्वारा सद्धर्म विरोध और समर्थन दोनों चल रहे हैं। इन चीवरधारी द्विज युवकों ने लोक हित में अपना समग्र जीवन समर्पित कर दिया। जो दुख उन्होंने सहे, वह अकथनीय है। उन चीवरधारी ब्राह्मण भिक्षुओं ने जहाँ सद्धर्म के प्रचार-प्रसार के अनेक उदात्त काम किये, वहीं उनके द्वारा एक महान काम यह हुआ कि उन्होंने संपूर्ण बौद्ध साहित्य का लोक भाषाओं में रूपांतरण करके जनता के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। ऐसे द्विज भिक्षुओं में राहुल सांकृत्यायन, जगदीश काश्यप, आनन्द कौसल्यायन आदि नाम प्रातः स्मरणीय हैं, कुछ अन्य द्विज भिक्षुओं और उपासकों के नाम गिनाये जा सकते हैं, यथा - भिक्षु बोधानन्द महास्थविर, भंते ज्ञान जगत, उपासक पी.लक्ष्मी नरसू जगन्नाथ उपाध्याय, स्वामी द्वारिकादास शास्त्री आदि।

6. एक द्विज भिक्षुक की कहानी तो बहुत ही मर्मस्पर्शी और प्रेरणादायक है। उनका नाम था महावीर स्वामी। 1857 के एक हीरो बाबू कुँवर सिंह के रिश्तेदार थे। अंग्रेजों की सेना विद्रोहियों का पीछा कर रही थी। कुँवर सिंह अपने कुछ सिपाहियों के साथ नाव से गंगा पार कर रहे थे। नाव बीच धारा में पहुँची थी, तभी किनारे से एक अंग्रेज की गोली बाबू कुँवर सिंह की बाईं भुजा में लगी। साथ के सिपाही विचलित हुए, लेकिन महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अस्सी वर्षीय बाबू कुँवर सिंह ने म्यान से तलवार निकाली और अपनी वह आहत भुजा गंगा माँ को चढ़ा दिया। घायल

कुँवर सिंह किले में पहुँचे। वहीं उनकी मृत्यु हो गई। महावीर स्वामी ने कहा, इन्हें किले में ही जला दिया जाए, किला छोड़ना खतरे से खाली नहीं। लेकिन ब्राह्मण पुरोहित नहीं माने। शव गंगा किनारे ले गए और इधर अंग्रेजों ने धावा बोलकर किले पर अधिकार कर लिया।

7. महावीर स्वामी भीमकाय पहलवान थे, अपने कुछ चेलों के साथ दक्षिण भारत की ओर निकल गये। मार्ग में इनामी कुस्तियाँ लड़ते, इनाम पर गुजर-बसर करते मद्रास पहुँचे। वहाँ एक नामी मुसलमान पहलवान को पछाड़ा, आगे बढ़े तब तक उनके चेले तितर-बितर हो गए थे और कुछ मर गए थे। महावीर स्वामी अकेले किसी प्रकार लंका पहुँच गए। भूख-प्यास से अधमरे किसी सड़क के किनारे किसी वटवृक्ष की छाया में लेटे हुए अंतिम साँसें गिन रहे थे, एक बौद्ध भिक्षु ने उन्हें देखा, उठाकर एक बौद्ध विहार में ले गया, उनकी सेवा की, वे बच गए। उनके मन में छुआछूत की भावना थी, बौद्ध भिक्षु ने उसे दूर कर दिया। महावीर स्वामी बौद्धों के देश श्रीलंका से बर्मा-म्यांमार चले गए और वहीं से बौद्ध धर्म का सम्यक ज्ञान प्राप्त कर भिक्षु बनकर भारत लौटे और सारनाथ में सद्धर्म के प्रचार-प्रसार में अपनी सेवायें अर्पित की। फिर भगवान बुद्ध की महापरिनिर्वाण स्थली कुशीनगर चले गए और वर्षो अपनी सेवायें अर्पित की। तब एक दिन वह प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सिपाही भिक्षुक, महाकारुणिक भगवान बुद्ध का महान धर्मपुत्र कुशीनगर के एक बौद्ध मंदिर में धम्मपद का पाठ करता हुआ अपनी अंतिम साँसें ली। भिक्षु को कोटि-कोटि नमन द्य 8. यदि हम डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर की भूमिका को देखें तो ब्राह्मणों की एक श्रृंखला उनकी पक्षधर रही है और एक विरोधी। प्राथमिक विद्यालय का वह ब्राह्मण शिक्षक हमारा आदरणीय है जिसने बालक भीम को साग - रोटी खिलाया और अपना उपनाम अम्बेडकर देकर स्वयं भी चिरस्मरणीय हो गया। अध्यापक पेंडसे भी हमारी श्रद्धा के पात्र हैं जिन्होंने वर्षा जल में पूर्णत: भींगे बालक भीम को अपने घर भेजकर गर्म जल से स्नान करवाया। कभी बाबा साहेब के शिक्षक रहे प्रो. काणे ब्राह्मण थे। जब बाबा साहेब की दूसरी शादी की

बात चली, तब उन्होंने पत्र लिखकर बाबा साहेब को सावधान किया था कि तुम एक वेश्या से शादी कर लो, उसका सामाजिक उद्धार हो जाएगा किन्तु जिस महिला से शादी करने जा रहे हो, वह तुम्हारे योग्य नहीं है। उससे तुम्हारी ख्याति पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। दक्षिण भारत के एक ब्राह्मण के. कृष्णामूर्ति बाबा साहेब के अति प्रशंसक रहे और वह चाहते थे कि बाबा साहेब पूर्ण स्वस्थ हो जायें। एक दिन एक फ्रांसीसी महिला को लेकर उनके पास पहुँचे। जब शारदा कबीर को पता चला कि वह महिला डॉ. अम्बेडकर का निसर्गोपचार करने वाली है, तब दूसरे दिन उन्हें कोठी में घुसने ही नहीं दी।

9. डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के ब्राह्मण विरोधियों में सबसे प्रबल विरोधी उनकी ब्राह्मणी पत्नी शारदा कबीर ही थी और उसका प्रेमी डॉ. माधवराम गंगाराम मालवंकर। दोनों ने मिलकर शीघ्र ही उन्हें मौत की घाटी में पहुँचा दिया। हिन्दू धर्म की पहेलियाँ पुस्तक की चार पाण्डुलिपियाँ बनी थीं। छपने के लिए प्रेस में जाने से पहले ही दोनों ने मिलकर चारो प्रतियाँ गायब कर दिए। दूसरे विरोधी कट्टर सनातनी ब्राह्मण और कम्युनिस्ट ब्राह्मण थे। 1952 के प्रथम महाचुनाव में कम्युनिस्ट ब्राह्मण नेता डाँगे ने बाबा साहेब के 50 हजार वोट अवैध कर हरवा दिया। सनातनी और कम्युनिस्ट ब्राह्मण उनकी सद्धर्म सांस्कृतिक क्रांति के घोर विरोधी थे। दोनों उनकी बौद्ध धर्म की सांस्कृतिक क्रांति को असफल करने तथा उपेक्षित वर्गों को हिन्दू धर्म से बाहर न जाने देने का कुटिल खेल आरंभ कर दिया। नागपुर हाई कोर्ट में डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के धर्म परिवर्तन के विरोध में ब्राह्मणों ने याचिका दायर कर दिया कि डॉ. अम्बेडकर का धर्म परिवर्तन अवैध था। न्यायधीश ब्राह्मण था, उसने धर्म परिवर्तन को अवैध घोषित कर दिया। नागपुर के डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के एक साहसी बौद्ध अनुयायी हरिदास आवड़े ने महान साहस का परिचय दिया और इस निर्णय के विरूद्ध सुप्रीम कोर्ट में चले गए और अंत में सत्य की विजय हुई। सुप्रीम कोर्ट ने बाबा साहेब के धर्म परिवर्तन को वैध ठहराया। सद्धर्म वीर हरिदास आवड़े जी को मेरा शत्-शत् नमन।

10. ब्राह्मणों की दुष्प्रेरणा से सन् 1959 में कुछ दलित युवकों ने एक जाति बोधक नाम 'दलित साहित्य' की विचारधारा को आगे बढ़ाया और इसके 10-12 वर्ष पश्चात एक विशाल सामाजिक क्रांति के नाम पर, लोग कहते हैं, एक 'जोशी' उपनामधारी कम्युनिस्ट ब्राह्मण की दुष्प्रेरणा से उन्हीं महार युवकों ने 'दलित पेंथर' संगठन बनाया। इस प्रकार डॉ. बाबा साहेब के बाद की किशोर पीढ़ी को ब्राह्मणों ने 'दलित' शब्द से हिन्दुओं के खूँटे में बाँध दिया- दलित साहित्य, दलित पैंथर।

प्रबुद्ध साहित्य, प्रबुद्ध पैंथर से दूर कर दिया और इस प्रकार ब्राह्मणों ने अपना काम कर दिया। सन् 1950 से डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर संस्थाओं के नाम चयन के संबंध में जाति बोधक नामों के विपरीत हो गए थे। श्रीलंका में जब एक SC संगठन के प्रतिनिधि उनसे मिले, तब उनको उन्होंने समझाया कि SC न रहकर बौद्ध बन जाओ और वहाँ की संस्कृति में घुल-मिल जाओ। चाहे वह साहित्यिक क्रांति की धारा हो अथवा सामाजिक क्रांति की धारा, भारत में कोई भी धर्म की धूरी के बिना नहीं चल सकती। 18 मार्च, 1956, आगरा में बाबा साहेब ने कहा था - हमारा कोई अपना धर्म नहीं है, इसलिए हमारी कोई सामाजिक क्रांति नहीं चल पाती। अब मैं अपना एक धर्म - बौद्ध धर्म ग्रहण करके जो हमारा धर्म होगा- उसकी पृष्ठभूमि पर सामाजिक क्रांति करूँगा। लेकिन बाबा साहेब की बात न किसी ने समझा, न माना और डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर असमय हमारे बीच से चले गए।

11. डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर का समग्र वांड्मय दलित वांड्मय नहीं है, प्रबुद्ध वाडमय है। वह उपेक्षितों में जागृति पैदा कर उन्हें हिन्दू धर्म से मुक्त करने के लिए लिखा गया है। बाबा साहेब के ही शब्दों में- हम हिन्दू नहीं, हिन्दुओं के गुलाम हैं। हमारी मुक्ति का प्रकाश स्तम्भ The Buddha And His Dhamma है, जिसके आलोक में सभी प्रकार की क्रांतियाँ सफलता पूर्वक चलाई जा सकती हैं। हमें यह याद रखना होगा कि डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर का आधा से अधिक वाडमय भारतीय इतिहास की सांस्कृतिक व्याख्या है और डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने जो निष्कर्ष निकाला है, वह यह है कि बुद्ध के मार्ग पर चलकर ही हिन्दू धर्म की दासता से भारत के उपेक्षित अथवा अछूत समुदाय के लोगों की पूर्ण मुक्ति संभव है।

लेखक बुद्ध-दर्शन, आम्बेडकरवाद के ज्ञाता एवं चितंक है

पंचायती राज और आम जनता

– श्यामलाल राही

"आज जमीनी स्तर पर जो पचायती राज व्यवस्था है, उसमें उन नियमों और कानूनो का कोई महत्व नही रह गया है, जो इसके लिए हैं। ग्राम स्तर पर कोई प्रधान नियमानुसार कोई बैठक आहूत नहीं करता। कागजी खानापूर्ति के लिए कागज पर बैठक बुला ली जाती है। बाद में कुछ आवश्यकतानुसार हस्ताक्षर करा लिए जाते हैं।"

डेमोक्रेसी का हिन्दी में अर्थ किया जाता है आमतौर पर प्रजातंत्र। गड़बड़ी यहीं से प्रारम्भ होती है। अब्राहम लिंकन की डेमोक्रेसी के लिए सर्वमान्य परिभाषा जनता का शासन, जनता के लिए, जनता के द्वारा। जन या गण से नागरिक का बोध होता है, वहीं प्रजा से राजा के द्वारा शासित व्यक्तियों के समूह का। डिमोक्रेसी में जहाँ जनता ही सब कुछ है, वहीं प्रजातंत्र से ऐसा भासित होता है, जैसे किसी राजा की प्रजा के द्वारा बनाया गया तंत्र, जो निश्चय ही प्रजा के स्थान पर राजा के हित को प्राथमिकता देगा। आजादी के बाद जब हमारा संविधान बना, तो वो अंग्रेजी में था। वहाँ डेमोक्रेसी थी। भारतीयों की मानसिकता को प्रतिध्वनित करता। गणतंत्र नहीं था। हिन्दी में अनुवाद प्रजातंत्र की भावना से किया गया, गणतंत्र की भावना से नहीं। जनता के द्वारा चुने गये प्रतिनिधि पंचायत स्तर से लेकर केन्द्र स्तर तक जनता के लिए विधायिका, कार्यपालिका, एवं न्यायपालिका के लिए काम करते हैं। राज्य तथा केन्द्र स्तर पर तो यह प्रक्रिया देश की आजादी के तुरन्त बाद शुरु हो गयी, पर ग्राम स्तर पर पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की पहल से पहले यह सुसुप्ता अवस्था में रही। ग्राम स्तर पर जब हम पंचायती राज की बात करते हैं, तो डेमोक्रेसी के अनुसार वहाँ भी जनता का शासन, जनता के द्वारा, जनता के लिए होना चाहिए। पर स्थिति बिल्कुल भिन्न है। इसका कारण हमारी पुरानी पंचायत प्रणाली है, जिसका स्वरुप आज भी कहीं–2 देखने को मिल जाता है। पुरानी पंचायत प्रणाली में गाँव का मुखिया प्रमुख व्यक्ति होता था, जो प्राय: पंचायत का सरपंच भी होता था। मुखिया का पद शासन द्वारा नामित किसी प्रमुख परिवार के व्यक्ति का होता था। जो प्राय: वंश परमपरागत होता था। उस समय सरपंच विशेष कारणों पर शासन द्वारा ही हटाया जाता था। वह गाँव का प्रभावशाली व दबंग व्यक्ति होता था। वो अपने तथाकथित कार्यकर्ताओं, जिन्हें लठैत कहना ज्यादा अर्थपूर्ण लगता है, के द्वारा ग्राम स्तर पर विधायिका, कार्यपालिका, तथा न्यायपालिका के कार्यों को अंजाम देता था। इसके अतिरिक्त कुछ जातीय पंचायतों भी होती थीं, जो प्राय: जाति के दबंग व्यक्तियोंका समूह होता था। ये जातीय पंचायतें विवाह आदि अन्य मामले निपटरती थी। दबंग पंच वादी प्रतिवादी को मनमाना फैसला मानने को वाध्य कर देते थे। उस समय की आम जनता महत्वपूर्ण नही होती थी। समाज के प्रभावशाली व्यक्ति पंचायतों के माध्यम से अपना और शासन का प्रभुत्व बनाये रखते थे।

देश की आजादी के बाद यही कारण था कि उस समय के नेताओं ने पंचायतीराज को लागू करने में अधिक रुचि नही दिखाई। क्योंकि वे जानते थे, इससे आम जनता का काई भला नही होने वाला। जब नेहरू परिवार के तीसरे व्यक्ति जिन्हें गाँव, प्रशासन का कोई अनुभव नही था, प्रधानमंत्री बनें, तो उन्हें हमारे गाँव, आदिवासी समाज के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई राजीव गांधी ने अपनी जिज्ञासा शान्त करने तथा श्रीमती सोनिया गांधी को भारत का जन जीवन दिखाने के लिए देश का खूब भ्रमण किया। उन्हें लगा कि हमारे गाँवों का विकास ग्राम पंचायतों के विकास से हो सकता है। अपनी अनुभवहीनता के कारण वे यह नही समझ पाये कि पंचायतीराज के जिस स्वरुप की कल्पना उन्होंने की है, वो हमारे गाँवों के लिए उपयुक्त नही है। फिर भी उन्होने आवश्यक व्यवस्थायें कर पंचायती की, पर जैसे– 2 उनका शासन काल बढ़ा वे व्यवस्था लागू हमारे भ्रष्ट नेताओं की चंगुल में आ गये और पंचायतीराज ने भी हमारे प्रज़ा तंत्र की तरह एक अलग स्वरूप ग्रहण कर लिया।

पूरा देश जानता है कि हम कितने ईमानदार हैं। इसी कारण आज के नेता बुद्धिवादी ईमानदार लोगों को आदमी तक

मानने को तैयार नहीं। अगर हम प्रतिशत में बात करें, तो पायेंगे कि अधिकतर राजनीति से जुड़े लोग बेईमानी की भागीरथी में स्नान कर पुण्य कमा रहे है। उपर से चला बेईमानी का सिलसिला आज आम आदमी तक जा पहुंचा है। चुनाव लड़ना, रिश्क लेकर अकूत दौलत फूंकना नेताओं के ही दिल गुर्दे की बात है। आम आदमी तो ऐसा करने का दुस्साहस करने की सोच भी नहीं सकता। इसी कारण जो प्रतिनिधि चुने जा रहे हैं, वो अपने व्यय किये धन की वसूली को प्रथम प्राथमिकता देते हैं। वसूली का तरीका चाहे जो भी हो।

आज जमीनी स्तर पर जो पचायती राज व्यवस्था है, उसमें उन नियमों और कानूनो का कोई महत्व नही रह गया है, जो इसके लिए है। ग्राम स्तर पर कोई प्रधान नियमानुसार कोई बैठक आहूत नही करता। कागजी खानापूर्ति के लिए कागज पर बैठक बुला ली जाती है। बाद में कुछ आवश्यकतानुसार हस्ताक्षर करा लिए जाते हैं। यदि कोई प्रधान बैठक बुलाता भी है, तो कोई आता नहीं क्योंकि जनता जानती है कि उसका महत्व वोट देने तक था, जो उसने दे दिया। प्रधान उसके सलाहकार व सहयोगी एवं सरकारी अधिकारी, कर्मचारी पंचायतीराज का मखौल उड़ाकर अपनी –2 जेबें भरते हैं। बकौल शायर राही–

''आयी तरक्की गाँव में प्रधान के घर तक
उसे क्या पता कि गाँव में बुधुवा का घर भी है।''

प्राचीन समय से लेकर आज तक पंचायतें जनता का भला नही कर पायीं। आज भी शक्तिशाली लोग तथाकथित स्वयंभू पंचायतों के माध्यम से निरंकुश फरमान जारी कर देश के कानून जैसा मखौल उड़ाते हैं और प्रशासन आगे कितना बेवश नजर आता है वो हम आये दिन देखते हैं। इन पंचायतों से आम आदमी का आने वाले समय में कोई भला हो पायेगा, ऐसी आशा कम ही दिखायी देती है। हम, हमारी सोच, हमारे कार्य किस कदर बेईमान हो गये है। उससे देश का क्या होगा, यह सोचकर ही मन कांप उठता है। यदि अब भी हम नही चेते, तो असफल देशों की सूची में सोमालिया नहीं, हम ही प्रथम स्थान पर होंगे। वर्तमान में पंचायतों की जो व्यवस्था हम अपना रहे हैं, वो हमारा भला नहीं कर सकती।

दलित साहित्यकार दलित कब तक और क्यों?

– डॉ. राम मनोहर राव

"सामान्य श्रेणी के साहित्यकार दलित विमर्श को भीख देने जैसी मानसिकता के साथ स्वीकार करते हैं। वे दलित साहित्य को मुख्यधारा में कहते हुए हाशिए पर ही रखते हैं और उपेक्षा भाव से मान्यता प्रदान करते हैं। कथित दलित साहित्यकार अपने निजी स्वार्थ जैसे कि उनकी कुछ कृतियाँ विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में रखे जाने मात्र के लालच में 'दलित' नाम से जुड़े हैं।"

भारतवर्ष मे व्याप्त सामाजिक असमानता, अन्याय और जुर्म को उजागर करने की मंशा और साहस जब लेखक / साहित्यकार नहीं जुटा पा रहे थे, तब देश मे अपना संविधान लागू होने के साथ परिस्थितियों में बदलाव आया और शोषित समाज में जन्मे लेखकों / साहित्यकारों ने सामाजिक विषमता के फलस्वरूप समाज मे उपजे आक्रोश को अपनी रचनाओं मे प्रमुखता से स्थान देने लगे और यही लोग कालांतर मे अपने को दलित साहित्यकार कहलवाने लगे।

हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा से इतर वे अस्तित्व हेतु संघर्ष करते रहे, तब कहीं दलित विमर्श के रूप मे हाशिये पर दलित साहित्य के रूप में स्थान मिल पाया, वह भी अत्यंत उपेक्षित भाव से तरह 1950 से अब तक जो भी इन साहित्यकारों ने लिखा उसमे अत्याचार अन्याय के विरुद्ध आक्रोश को ही तरह से लिखते रहे परंतु उसके निराकरण संबंधी सकारात्मक उपायों का सर्वथा अभाव रहा द्य यह अवश्य हुआ कि कुछ दलित साहित्यकारों की कृतियाँ विश्वविद्यालयों के हिन्दी पाठ्यक्रम में सम्मलित किए जाने लगीं।

वर्तमान में बाबा साहब डॉ. आंबेडकर की वैचारिकी का विश्वपटल पर तेजी से बढ़ते प्रभाव एवं स्वीकार्यता के कारण साहित्य में भी बदलाव स्पष्ट रूप से दिखने लगा है। आंबेडकरवादी साहित्य की पुरजोर वकालत की जाने लगी तथा अनेक हिन्दी के साहित्यकार अपनी रचनाओं में आंबेडकर दर्शन का समावेश करते हुए साहित्य सृजन प्रारभं कर चुके हैं, जिन्हें निश्चित रूप से आंबेडकरवादी साहित्यकार कहना औचित्यपूर्ण होगा।

मैं बरेली में सरकारी सेवा में वर्ष 2004 से कार्यरत था तथा मैं 2015 में यहीं से सेवा निवृत्त हुआ। शहर की महत्वपूर्ण एवं बड़ी टाउनशिप महानगर का निवासी बन गया इस हुए टाउनशिप में रहते हुआ वर्ष 2009 में अनेक आंबेडकरवादियों से संपर्क हुआ और मेरे ही नेतृत्व मे बाबा साहब डॉ. आंबेडकर की जयंती टाउनशिप के कम्युनिटी सेंटर मे मनाई जाने लगी जो अब तक यथावत जारी है। बाबा साहब के जयंती कार्यक्रम मे हम लोग मुख्य अतिथि के तौर पर बाहर से लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों को आमंत्रित करते आये हैं। उसी श्रंखला में प्रयागराज से वरिष्ठ साहित्यकार गुरु प्रसाद मदन दिल्ली से, श्रद्धेय शांति स्वरूप बौद्ध लखनऊ से, दलित साहित्यकार श्रद्धेय काली चरण स्नेही एवं दिल्ली के प्रसिद्ध साहित्यकार जयप्रकाश कर्दम, लखनऊ से एडवोकेट सुरेश राव, वाराणसी से प्रो० राम किशन जी ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा तो बढ़ाई ही, अपने अमूल्य वैचारिकी से बरेली वासियों को अभिसिंचित किया। इसी क्रम में वर्ष 2024 मे श्रद्धेय कालीचरण स्नेही जी को आमंत्रित किया गया। 24 अप्रैल की जयंती कार्यक्रम में सम्मिलित होने आये स्नेही जी को महानगर के समीप स्थित एक होटल में ठहराया गया। सबसे सुखद प्रसंग यह रहा कि उनके परम मित्र मा० बाबू राम गौतम जो कुछ दिन पूर्व अमरिका से भारत आये थे। दोनों ही अतिथियों का बरेली शहर के वरिष्ठ साहित्यकार श्रद्धेय श्यामलाल राही प्रियदर्शी जी एवं स्वयं मैंने स्वागत किया। अपनी– अपनी पुस्तकें भी हम दोनों साहित्यकारों ने आदरणीय राम बाबू गौतम एवं स्नेही जी को भेट किया।

GOAL के अध्यक्ष एवं आंबेडकरवादी साहित्य पत्रिका का संरक्षक होने के कारण साहित्यिक हुए चर्चा के साथ GOAL संस्था एवं आंबेडकरवादी साहित्य पत्रिका का परिचय कराते उनसे उनके विचार एव प्रतिक्रिया की अपेक्षा की। पहले तो वे संभवत: हमारे अतिथि होने के कारण उत्तर देने से बचते रहे

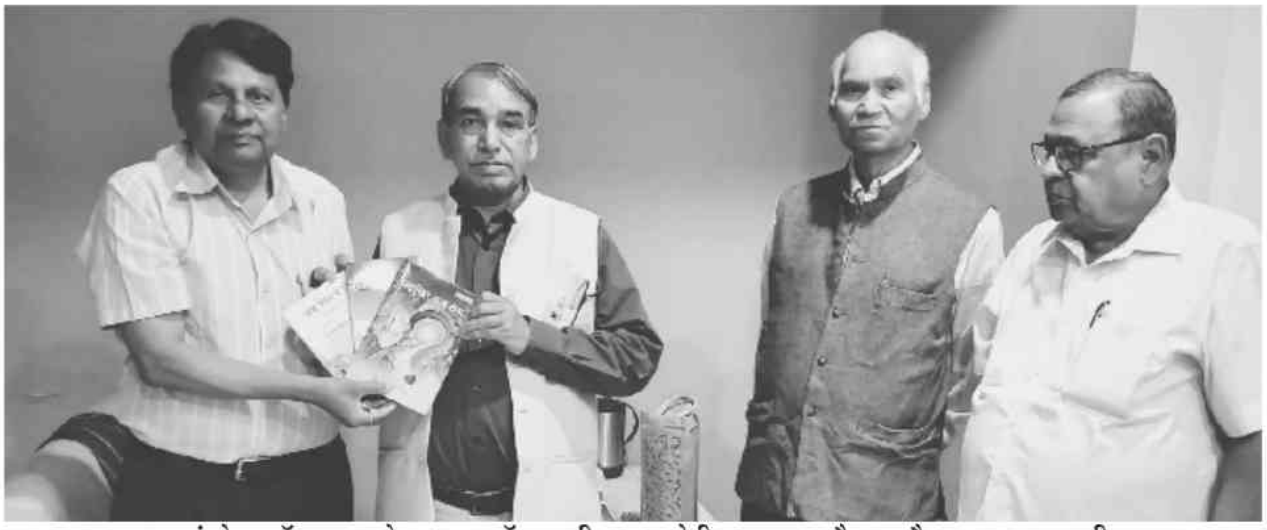

बाएं से – डॉ. राम मनोहर राव, डॉ. कालीचरण स्नेही, रामबाबू गौतम और श्यामलाल राही

और राम बाबू गौतम जी का विस्तृत परिचय देने लगे, जिसके अनुसार गौतम जी उ.प्र. के अलीगढ के मूलनिवासी हैं और बहुत समय पहले ही अमेरिका में प्रवास करने लगे। कारोबार जमने के बाद उन्होंने अमेरिका में सामाजिक एवं साहित्यिक गतिविधियां प्रारंभ की द्य हिन्दी कविताएँ लिखकर एक संस्था के माध्यम से कवि सम्मेलन मे प्रस्तुतियाँ देने लगे। अमेरिका में बड़ी संख्या मे हिन्दीभाषी रहते हैं अत: लोगों ने उनके हिन्दी प्रेम को बढ़ावा देते हुए सहयोग किया एवं श्रद्धेय रामबाबू गौतम जी अमेरिका मे हिन्दी कविताओं के साथ बुद्ध एव आंबेडकर दर्शन के प्रसार हेतु एक स्तंभ के रूप में सामने आये द्य श्रद्धेय कालीचरण स्नेही जी भी प्राय: अमेरिका जा कर उनका उत्साहवर्धन करने लगे।

जब मैंने मुख्य रूप से स्नेही जी से आंबेडकरवादी साहित्य सृजन पर चर्चा करते हुए GOAL पर उनकी प्रतिक्रिया देने को बाध्य किया तो अजीब से अंदाज मे वे बोल उठे कि न ही आपकी संस्था GOAL पंजीकृत है और न आपने अपनी पत्रिका का ही पंजीकरण कराया और न ही उसका प्छ नंबर प्राप्त किया तो उसके साथ कोई कैसे जुड़ेगा और यदि इस स्थिति मे जुड़ेगा भी तो लोग हमे भी अलगाववादी कहने लगेंगे क्योंकि दलित विमर्ष ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित एवं मान्य है। इसी धारा मे रहने के कारण लोगो द्वारा देश. विदेश में चर्चा की जाती है तथा अनेक विश्वविद्यालयों मे दलित साहित्य की पुस्तकें पाठ्यक्रम मे सम्मिलित हो पाती हैं।

यदि हम आंबेडकरवादी साहित्य को आगे कर उनके तहत लिखेगें तो वैमनस्यता के कारण कोई भी हमे नहीं पूछेगा और हमारी पहचान खत्म हो जायेगी। कुल मिला कर दलित विमर्ष के नाम पर हम दलित साहित्य को ही बढ़ावा देंगे ताकि मुख्यधारा के एक हाशिये पर दलित साहित्य भी दिखता रहे और जाहिर है तभी हमारा अस्तित्व बना रहेगा। तत्काल क्षणिक से हमारे मस्तिष्क मे विपरीत प्रतिक्रिया के भाव आये परतु उन परिस्थितियों मे विरोध जताना विशेष कर आदरणीय राही जी के मौन को देखते हुए मैंने उचित नहीं समझा और अपनी पत्रिका के सेवादक एवै वांछित कमियों के पूरा करने के क्रियान्वयन हेतु GOAL के महासचिव देवचन्द्र भारती प्रखर जी से साझा करते हुए उचित निर्णय लेने की बात कही उसी के क्रम मे हम लोगों ने आंबेडकरवादी साहित्य पत्रिका का रजिस्ट्रेशन तथा GOAL संस्था का भी पंजीकरण कराने का निर्णय चुका है और ISSN नं0 भी शीघ्र मिलने वाला है।

इस वर्ष 2025 मे डॉ भीमराव आंबेडकर जी की 134 वे जन्मोत्सव मे समिति की टीम ने दिल्ली के दलित साहित्यकार डॉ. जयप्रकाश कर्दम को 19 अप्रैल 2025 के कार्यक्रम मे मुख्यअतिथि के रूप में आमंत्रण भेज दिया। मेरे द्वारा उन्हें पहले भी बुलाया जा चुका हैं। हमारी कई मुलाकातें बरेली एवं दिल्ली मे हो चुकी हैं। वास्तव में पूज्य पिता परि. विश्वेश्वर प्रसाद जी की पुस्तक के लोकार्पण कार्यक्रम मे भी वे दिल्ली स्थित समता बुद्ध विहार मे सम्मिलित हुए थे। कर्दम साहब बहुत ही मृदुभाषी एवं अत्यंत व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं। दलित साहित्य वार्षिकी का वर्ष 1999 से सम्पादन करते हुए ख्याति अर्जित की थी। उनकी ''छप्पर'' नामक कृति भी चर्चित रही। परतु समय के

साथ वे भी धूमिल पड़ने लगे। व्यक्तिगत लेखन में भी उनकी कुछ ज्यादा पुस्तकें सामने नहीं आई परंतु दिल्ली मे रहते हुए दलित साहित्य से संबंधित गोष्ठियों, सेमिनारों मे अनवरत सम्मिलित होते रहने से उनकी अपनी वरिष्ठ दलित साहित्यकार के रूप में पहचान स्थापित होती गई।

दिल्ली एवं देश से बाहर भी सक्रियता से दलित विमर्श की गोष्ठियों में बुलाए जाने से वे चर्चित होते गये और हिन्दी के वरिष्ठ दलित साहित्यकार के रूप मे एक स्तम्भ की तरह वर्षों से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहे। सौम्य स्वभाव, संयत वाणी एवं दायित्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करने के कारण लोगों के मन मस्तिष्क मे दलित साहित्यकार के रूप मे जगह बना ली जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम मे दलित विमर्श के रूप में रचनाओं को सम्मिलित किया जाने लगा। राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय दलित साहित्य से संबंधित गोष्ठियों मे मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि के रूप मे आयोजकों द्वारा उन्हें आमंत्रित एवं सम्मानित किया जाने लगा और यही कारण हैं वे आम पाठकों, लेखकों, संस्थागत आयोजकों की पसंद बनते गये।

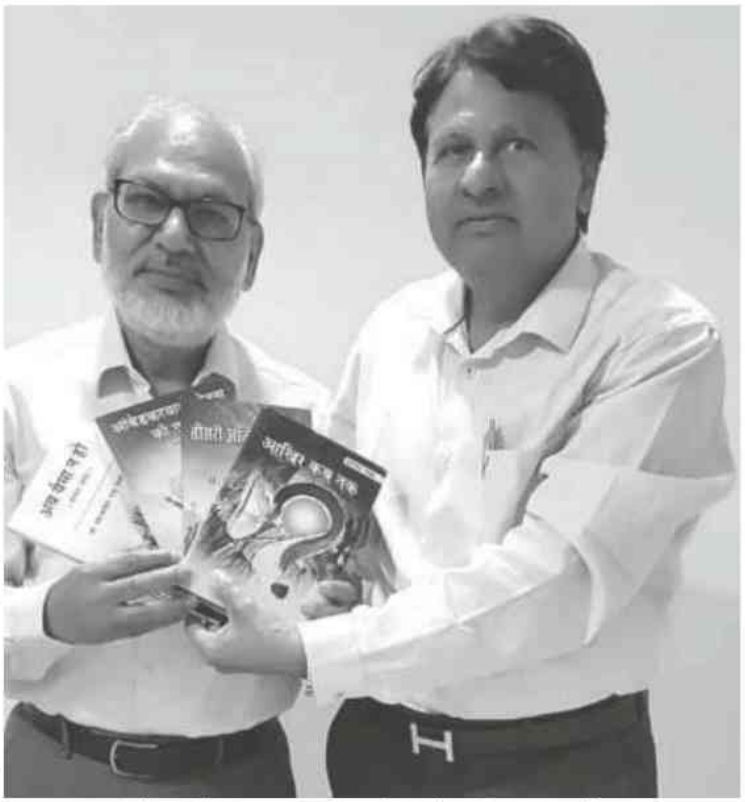

बाएं से – डॉ. जयप्रकाश कर्दम और डॉ. राम मनोहर राव

जब उनसे बरेली में दिनांक 19/4/2025 को मै औपचारिक रूप से मिलने गया तो मैने उन्हे अपनी पुस्तकें भेंट की और साहित्यिक चर्चा के दौरान आज के संदर्भ मे चर्चित आंबेडकरवादी साहित्य पर चर्चा करते हुए कुछ प्रश्न सामने रखे तो उन्होंने दलित साहित्य की ही पुरजोर वकालत की, साथ ही यह भी कहा कि इस मे भी आंबेडकरवादी विचारधारा सन्निहित हैं परंतु वे स्वयं को आंबेडकरवादी साहित्यकार कहलाने से बचते रहे। मैने भी ठान रखी थी कि अकेले मे आज इसका उत्तर लेके रहूँगा द्य वार्ता की मूल बातों का जो निष्कर्ष रहा, उसके अनुसार यह सभी लोग इस बात से डरे हुए हैं कि आंबेडकरवादी साहित्य चर्चित होते होते स्थापित हो गया तो हम सभी वरिष्ठ दलित साहित्यकारों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा द्य ज्यादा कुरेदने पर स्पष्ट रूप से बोल पड़े कि वास्तव मे राष्ट्रीय मुख्यधारा में दलित विमर्श को ही सामान्य हिन्दी साहित्यकारों द्वारा स्वीकृति मिली है और उसी के कारण विश्वविद्यालयों में दलित विमर्श के रूप मे मुख्य लोगों की कृतियाँ पाठ्यक्रम मे सम्मिलित की जाती हैं यदि अन्य नाम (आंबेडकरवादी) से लिखेंगे या अपने को स्थापित करेंगे तो हमें कोई नहीं पूछेगा और यह डर मूल रूप से उन्हे बाध्य कर रहा हैं कि वे दलित साहित्य की पुरजोर वकालत करते रहें तभी उनका अस्तित्व बचा रहेगा अन्यथा कोई भी अपने को दलित क्यों कहलाना पसंद करेगा और साहित्य कभी दलित नहीं हो सकता।

सामान्य श्रेणी का सर्वत्र वर्चस्व होने के कारण दलित साहित्यकार उनसे विमुख नहीं हो सकते और न विरोध कर सकते हैं, उधर सामान्य श्रेणी के साहित्यकार दलित विमर्श को भीख देने जैसी मानसिकता के साथ स्वीकार करते हैं। वे दलित साहित्य को मुख्यधारा में कहते हुए हाशिए पर ही रखते हैं और उपेक्षा भाव से मान्यता प्रदान करते हैं। कथित दलित साहित्यकार अपने निजी स्वार्थ जैसे कि उनकी कुछ कृतियाँ विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में रखे जाने मात्र के लालच में 'दलित' नाम से जुड़े हैं।

लेखक आंबेडकरवादी साहित्य पत्रिका के संरक्षक एवं GOAL के अध्यक्ष हैं।

अच्युत नाग

– श्यामलाल राही

"वरिष्ठ साहित्यकार श्यामलाल राही जी के द्वारा लिखित उपन्यास 'अच्युत नाग' में पांचाल राज्य की राजधानी अहिच्छत्रा के पराक्रमी नागवंशी राजा अच्युत नाग के जीवन-चरित्र का वर्णन किया गया है। इस उपन्यास के प्रेरणास्रोत आंबेडकरवादी चिंतक एवं इतिहासकार डॉ. बी.आर. बुद्धप्रिय जी हैं। उपन्यास 'अच्युत नाग' का लघु अंश पाठकों हेतु प्रस्तुत है।"

तेरहवाँ भाग

राजा अच्युत नाग विगत तीन पीढ़ियों से अहिच्छत्र को राजधानी बनाकर पांचाल के शासक बने हुए थे। उनके दादा सुश्रुतनाग जोकि वृन्दा वन के निवासी थे, को पांचाल का राज्य दत्तनाग से प्राप्त हुआ था। कर्कोटक नागवंशी राजा दत्तनाग का शासन यहाँ कई पीढ़ियों से था। करुकोंटक नागवपंश के शासन की शुरुआत राजा पशुपति नाग ने की थी, सत्रह वर्ष के शासन के बाद उनके पुत्र सोमनाथ यहाँ के शासक हुए– ए – सोमनाथ ने चालीस वर्ष शासन किया। उनके कोई सन्तान नहीं थी तब उन्होंने अपने भाई आदित्यनाथ के पुत्र अविरल को अपना उत्तराधिकारी बनाया। अविरल ने 24 वर्ष शासन किया। अविरल के पुत्र सुदत्त हुए, सुदत्त ने राज्य को काफी सुदृढ़ बनाया। नगर में कई सुधार किये, नये भवन बनवाये। सुदत्त ने 34 वर्ष शासन किया। सुदत्त के दत्तनाग हुए। दत्तनाग एक बहुत ही गुणवान, योग्य शासक थे। उनके राज्य में प्रजा सर्वत्र सुखी थी। पड़ोसी राज्यों के साथ बड़े ही मधुर सम्बन्ध थे। दत्त नाग के शासन में सुश्रुत नाग ने आकर अपनी सेवायें दी। पहले सुश्रुत एक राजकीय अधिकारी बने फिर वे प्रगति करते-करते राजा के नजदीक आ गए। राजा ने उन्हें पहले अपना सेनापति बनाया फिर उन्हें अपना महामात्य नियुक्त किया। महामात्य के रूप में उन्होंने असाधारण कार्य कराये। नगर में कई मंदिर, बुद्ध विहार बनवाए। राजा दत्त नाग जैसे – जैसे बूढ़े होते हुए उनकी निर्भरता सुश्रुत नाग पर बढ़ती गई। राजा दत्त नाग के एक पुत्र थे संजय। पर संजय पक्षाघात के शिकार हो गए। राजवैद्यों ने बहुत ही प्रयास किए पर, वे राजकुमार संजय को बचा नहीं सके। उनकी मृत्यु ने दत्तनाग को तोड़ दिया। वह असमय ही बूढ़े दिखने लगे। वह बीमार रहने लगे। जब उन्हें लगा कि उनका जीवन अब अधिक नहीं है तो उन्होंने सुश्रुत नाग को अपना उत्तराधिकारी बनाया। फिर एक दिन वह आया जब राजा दत्त नाग का स्वर्गवास हो गया। उन्होंने 42 वर्ष राज्य किया।

सुश्रुत नाग ने जब शासन सँभाला तो पहले राज्य की व्यवस्था को ठीक किया, सेना का पुनर्गठन किया। उनका विवाह छोटी अवस्था में ही हो गया था उनके एक मात्र पुत्र थे। विद्वत नाग। विद्वत नाग एक कर्मठ, योग्य शासक थे। सात वर्ष के अल्प शासन के उपरान्त सुश्रुत नाग की मृत्यु के बाद विद्वत नाग ने सत्ता की बागडोर अपने हाथ में ली। उन्होंने दो विवाह किये –

1. काम्यक वन क्षेत्र के नरेश नागसेन की बेटी सुवासिनी से। सुवासिनी से वर्तमान राजा अच्युत नाग उत्पन्न हुए।
2. दूसरा विवाह गोशाला के शासक रुद्रक की बेटी सौम्या श्री के साथ हुआ। उनसे भी एक ही पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम था राजकुमार अरिहन्त। अरिहन्त अच्युत नाग से छोटे थे।

विद्वत नाग ने छत्तीस वर्ष शासन किया। तब अच्युत नाग को सत्ता मिली। राजा अच्युत नाग ने तीन विवाह किये–

पहला विवाह – मथुरा नरेश नागदत्त की सौतेली बहिन महिष्मती से। महिष्मती से कुशिय नाग नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, एक लड़की भी पैदा हुई जो बाल्यावस्था में ही गुजर गई।

दूसरा विवाह – भोगापुर के सामन्त श्रीनाथ की पुत्री वृत्तिका के साथ हुआ। वृत्तिका अत्यधिक सुन्दर थी। वृत्तिका से सुमित नाग नामक एक पुत्र हुआ।

तीसरा विवाह – अपने सेनानायक मंगलसेन की पुत्री देवयानी से किया वह बहुत ही गुणवती व सुन्दर थी। मंगलसेन ने अपनी पुत्री का अनुराग राजा के साथ देखा तो उन्होंने राजा से विवाह का

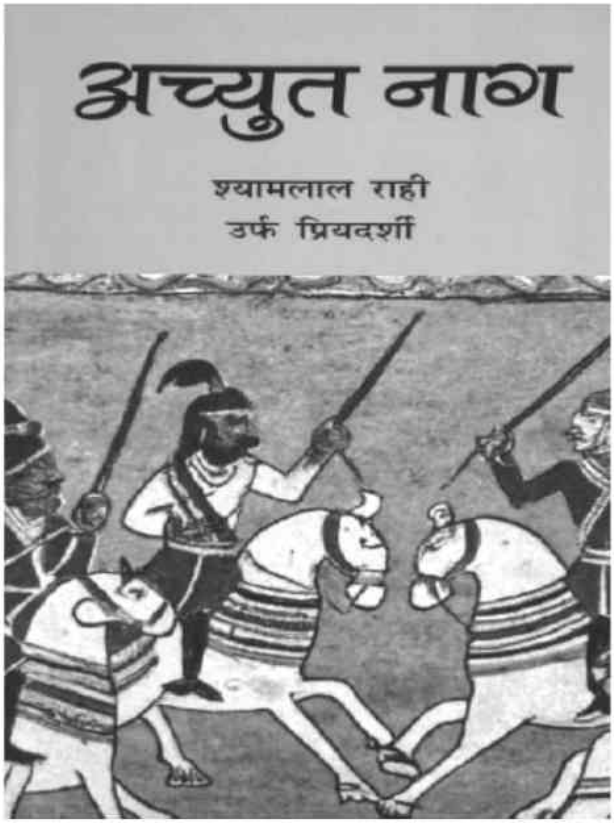

अनुरोध किया। राजा ने अनुरोध स्वीकार कर लिया और देवयानी से विवाह कर लिया। देवयानी के गर्भ से अशेषनाग नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

राजा अच्युत नाग का जन्म उनकी माँ सुवासिनी का विद्वत नाग से विवाह के दो साल उपरान्त हुआ। उनका जन्म, तीस नवम्बर सन् 304 को हुआ। तदनुसार कार्तिक कृष्णपक्ष सप्तमी, सम्वत् 382। अपने पिता की मृत्यु के बाद तीस वर्ष की अवस्था में वह पांचाल के शासक बने। वह राज्य सिंहासन पर सोलह अक्टूबर सन् 334 को बैठे। तदनुसार क्वार शुक्लपक्ष सम्वत 412 राजा अच्युत नाग ने शासन सत्ता सँभालते ही राज्य विस्तार की दृष्टि से दक्षिण पाँचाल पर आक्रमण कर दिया। दक्षिण पांचाल का वह क्षेत्र मथुरा नरेश नागदत्त का था। गंगा के रेतीले मैदान में दोनों सेनायें आ जुटी। एक सप्ताह तक सेनायें एक दूसरे के सामने डटी रही। आखिर युद्ध हुआ। दोनों ओर की सेनाओं के रक्त से गंगा जल लाल हो गया। आखिर मथुरा नरेश की पराजय हुई। सन्धि वार्ता चली। भविष्य को देखते हुए दोनों राज्य ने निश्चय किया कि सम्बन्धों को रिश्तेदारी में बदल दिया जाए। मथुरा नरेश ने अपनी सौतेली बहिन के विवाह का प्रस्ताव रखा। अच्युत नाग ने प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया। उस समय तक अच्युत नाग अविवाहित थे। विवाह धूमधाम से सम्पन्न हुआ। तबसे लेकर आज तक मथुरा नरेश के अच्युत नाग के साथ बड़े ही आत्मीय सम्बन्ध थे। दोनों राज्य हर सुख-दुख में एक दूसरे के साथ सहयोग करते।

राजकुमार अरिहन्त अपने बड़े भाई अच्युत नाग से चार साल छोटे थे। वह एक योग्य गुणवान तथा अपने भाई के प्रति बहुत श्रद्धा भाव रखते थे। वह जैन तथा बुद्ध दोनों की विचारधाराओं से प्रभावित थे। शासन में उन्होंने कोई पद तो स्वीकार नहीं किया था पर राजा अच्युत नाग के वह विशेष सलाहकार थे। राजा अच्युत नाग सदैव उनके सुझावों का आदर करते थे। राजकुमार अरिहन्त का अधिकतर समय धार्मिक कार्यों में व्यतीत होता था। उन्होंने अभी तक विवाह नहीं किया था और भविष्य में भी उनका विवाह करने का विचार न था। वह प्राय: बुद्ध विहारों मे आते-जाते रहते। भिक्षुगणों से उनका सानिध्य प्राप्त कर प्रसन्नता अनुभव करते। उनका जीवन सीधा-सादा, भेदभाव रहित उच्च कोटि के आचरण करने वाले व्यक्ति का था।

राजा अच्युत नाग भी उनका बहुत सम्मान करते। राजकाज में वह प्राय: उनसे सलाह लेते। दोनों भाइयों के बीच बहुत ही स्नेह था। राजा के तीनों राजकुमार कुशिक नाग, सुमित नाग तथा अशेष नाग भी राजकुमार अरिहन्त का बड़ा आदर व सम्मान करते थे। धर्म, व्याकरण, युद्ध, राजनीति, समाज शास्त्र का अध्ययन तीनों राजकुमार अरिहन्त से सीखते। समस्त राज्य में अरिहन्त को बहुत आदर के साथ देखा जाता था। राजा अच्युत नाग जबसे राजा बने थे लोककल्याण के कामों पर बहुत ध्यान दिया था। राजमार्गों की दशा सुधारी थी। नदी-नालों पर पुल बनवाए थे। किसानों के लिए सिंचाई के साधनों की व्यवस्था थी। उत्तरापथ के जो सार्थवाह व्यापार के लिए अरिक्षेत्र आते उनके ठहरने, व्यापार करने व सुरक्षा की उन्हें सुविधा दी जाती। स्थान-स्थान पर शिक्षण संस्थान खुलवाये। औषधालयों का संचालन कराया। राज्य के निवासियों को करों में राहत दी। वह सभी धर्मों का आदर करने वाले राजा थे। उनके राज्य में प्रजा हर तरह से सुखी थी।

चौदहवाँ भाग

दिन का द्वितीय प्रहर अभी प्रारम्भ ही हुआ था। अहिच्छत्र के मुख्य मार्ग के किनारे बीचोंबीच नगर में स्थित राजा

अच्युत नाग का भव्य दरबार सजने लग गया था। दरबार के भवन की स्वच्छता का कार्य तो प्रात: से ही प्रारम्भ हो जाता था। देवभूत राजदरबार के मुख्य अधिकारी प्रात: ही आ जाते। उनका बड़ा गुरुतर दायित्व था। पूरा राज दरबार उन्हीं की देखरेख में सजता था। दरबार से पहले स्वच्छता के साथ-साथ सुरक्षा का उचित उपाय किया जाता था। राज्य प्रहरी यों तो रातदिन दरबार व मुख्य स्थानों की सुरक्षा करते थे पर राज दरबार की विशेष सुरक्षा रहती थी। राजा अच्युत नाग का प्रजा जनों में बड़ा सम्मान था पर राजनीति में कुछ कहा नहीं जा सकता था। कब कौन व्यक्ति शत्रु बन जाएगा यह जानना बड़ा ही कठिन कार्य था। दरबार का समय होते ही दरबारीगण आने लगे। प्रजाजनों के लिए नियत स्थान पर भी कुछ लोग आ गए थे 1 दरबार स्वच्छ व सुवासित था। इस भवन का निर्माण इस प्रकार किया गया था कि उसमें प्रकाश एवं हवा का निरन्तर आवागमन होता रहे। सबसे पहले मंगलसेन नायक पधारे। उनका बड़ा आदर था। चूँकि उनकी बेटी का विवाह स्वयं राजा अच्युत के साथ हुआ था इस कारण पद व सम्बन्ध दोनों दृष्टि से महत्वपूर्ण था। उनके साथ ही अन्य उच्च पदाधिकारी पधारे जिनके नाम थे-

प्रधान आमात्य	कुमारिल नाग
कोषाध्यक्ष	वैशेषकर
सूपकारपति	मुचिन्द
प्रासाद सुरक्षा अधिकारी	अविशेक
मलदण्ड नायक	अशेष नाग
धर्माधिकारी	देवदत्त
कृषि, व्यापार, उद्योग अमात्य	विजयदेव
राज ज्योतिषी	राजव्रत
नगर अधिकारी	सुशान्त
राजा अच्युत नाग के प्रमुख सलाहकार	पंडित अभिभूत

इसके अलावा अन्य दरबारीगण एक-एक कर पधार रहे थे और अपने लिए नियत स्थान पर बैठ रहे थे। अचानक कोलाहल उठता देखा कि राजा अच्युत नाग की शिविका आ रही है। चारों ओर सुरक्षा प्रहरियों से घिरे राजा अच्युत नाग अपने सौतेले भाई अरिहन्त के साथ पधारे। राजकुमार अरिहन्त एक अलग से शिविका में आए थे। आगे-आगे संदेशवाहक चल रहा था वह सबको सावधान कर रहा था-

समस्त जन सावधान पांचाल नरेश, नागवंश शिरोमणि प्रजापालक, सर्वदुखहर्ता राजा अच्युत नाग पधार रहे हैं। राजा शिविका से उतरे तो सेनानायक मंगलसेन व अन्य पदाधिकारीगण ने उनका स्वागत किया। चारण आगे-आगे विरुदावली गाता हुआ चल रहा था। आज महाराज के साथ राजमहिषी नहीं पधारी थी। पता चला कि वह अस्वस्थ हैं। स्वागत पुष्प गुच्छ देकर तथा राजा अच्युत नाग की जय हो के जयकार के साथ किया गया। फिर आगे-आगे देवभूत दरबार के मुख्य अधिकारी उनके पीछे अमात्य कुरिल नाग, उनके पीछे राजा अच्युत नाग चलते हुए राज सिंहासन तक गये और राज सिंहासन पर विराजमान हुए। राजा अच्युत नाग के बैठते ही समस्त दरबारी अपने - अपने स्थान पर बैठ गए। प्रजाजन शान्ति से अपने लिए नियत स्थान पर खड़े हो गए।

राजा के पदासीन होते ही दरबार की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। देवभूत ने आगे बढ़ कर राजा से पूछा-

''महाराज यदि आज्ञा हो तो दरबार की कार्यवाही प्रारम्भ की जाये?''

राजा अच्युत नाग ने हाथ से इशारा कर आज्ञा प्रदान कर दी। दरबार के नियमानुसार सबसे पहले याची गणों को आमंत्रित किया गया कि वह अपनी-अपनी प्रार्थना राजा के समक्ष रखे। सबसे पहले एक किसान ने प्रार्थना की-

''महाराज मेरा खेत रामगंगा नदी ने काट दिया है मेरे पास जीवन यापन का कोई साधन नहीं है। ग्रामपति ने विवशता प्रकट की है कि उनके पास अतिरिक्त भूमि नहीं है।''

राजा ने उस क्षेत्र के राजस्व अधिकारी को आदेश दिया कि ''पड़ोसी गाँव में जहाँ अतिरिक्त भूमि हो इस किसान को दी जाए।'' फिर एक व्यापारी आया। उसने प्रार्थना की कि ''कर अधिकारी उसका कर आकलन सही से नहीं कर रहे हैं। वह नियमित कर चुकाता है पर कर अधिकारी फिर भी कर अवशेष बताते हैं।''

राजा ने विशेषकर कोषाध्यक्ष को निर्देश दिया कि ''आप प्रकरण की उचित जाँच कराये तथा व्यापारी के साथ उचित न्याय किया जाए।'' इसी प्रकार एक-एक कर प्रकरण आते गए और राजा सबके निराकरण के आदेश देते गए। वह चाहते थे कि उनके राजदरबार से कोई प्रजाजन असंतुष्ट होकर न

जाये। इसी तरह दोपहर हो गई। दोपहर भोजन के लिए अल्प विराम किया गया। दरबार के एक अलग भाग में उच्च पदाधिकारियों के लिए भोजन की व्यवस्था रहती थी। राजा दोपहर का भोजन उनके साथ ही करते थे। प्रजाजनों के मुख्य मार्ग के उस पार एक विशाल भवन में नि:शुल्क भोजन व्यवस्था रहती थी, जिससे कि दूर से आया कोई आवेदक भूखा न रहे। इसी भवन में रात्रि वास की भी व्यवस्था रहती थी। राजदरबार की यह व्यवस्था प्रजा जनों को बहुत अच्छी लगती थी। प्रजा अपने राजा का गुणगान करते नहीं अघाती थी। नागों के राजा का यह शासन पास-पड़ोस के राज्यों के लिए भी प्रेरणास्रोत था।

मध्याह्न भोजन के अल्प विराम के बाद राज दरबार दोबारा बैठा। सब पदाधिकारी जब अपने - अपने स्थान पर बैठ गए, तो एक दौवारिक दरबार के नियत स्थान पर आकर कुछ कहने की मुद्रा में आकर खड़ा हो गया। राजा की दृष्टि जब उस पर पड़ी, तो राजा ने पूछा-

''कहो दौवारिक निसंकोच कहो, क्या कहना चाहते हो?''''महाराज की जय हो ! मथुरा नरेश नागदत्त का एक दूत द्वार पर खड़ा है। वह महाराज के समक्ष उपस्थित होकर राजा मथुरा नरेश का कोई संदेश देना चाहता है।'

''इनको सम्मान सहित लाया जाए।''

कुछ ही देर के बाद एक स्वस्थ शरीर का व्यक्ति जिसने मथुरा नरेश की परम्परा के अनुसार उष्णीष बाँध रखा था, वस्त्र जिसके मलिन थे आसन से थका हुआ लग रहा था, वह प्रविष्ट हुआ।

राज परम्परा के अनुसार पहले राजा फिर राज दरबार का अभिवादन किया और विनम्रता से गर्दन झुकाए खड़ा हो गया। तब राजा ने कहा-''जो भी कहना है निसंकोच कहो, दूत।''

''महाराज की जय हो, मैं महाराजा मथुरा नरोश का दूत लघुमित्र महाराज का एक महत्वपूर्ण संदेश लेकर उपस्थित हुआ हूँ, प्रकरण गोपनीय है, क्या मैं गोपनीय बात राजसभा में सभी के समक्ष कह सकता हूँ?''

''नहीं पहले यह जानना हमारे लिए आवश्यक है कि संदेश क्या है? संदेश की गंभीरता के बाद ही हम निर्णय करेंगे कि पत्र का राज सार्वजनिक किया जाए अथवा नहीं। तुम पत्र दरबार के अधिकारी को सौंप दो।''

तब उसने अपने कपड़ों के बीच से एक गोलाकार बाँस का टुकड़ा निकाला, उसके अन्दर ही रेशमी वस्त्र पर लिखा हुआ पत्र लपेट कर रखा गया था। देवदूत को उसने वह बाँस का टुकड़ा सौंपा फिर वह खड़ा हो गया।

''सूपकार पति मुचिन्द दूत के आसन, भोजन, आवास की उचित व्यवस्था की जाए।''

महाराज अच्युत नाग यह आदेश देकर उठने को उद्धत हुए तो दरबार उठ खड़ा हुआ। राजा ने सेनापति मंगलसेन व महामात्य कुमिरल नाग को कहा-

''आप दोनों मंत्रणा कक्ष में आइए।''

दरबार के पीछे एक गोपनीय कक्ष था जहाँ महत्वपूर्ण मंत्रणाएँ तो की ही जाती थी राजा अल्प विराम भी करते थे। राजा मंत्रणा कक्ष के लिए उठ गए। उनके पीछे-पीछे सेनानायक मंगलसेन, महामात्य कुमिरल नाग भी गये। मंत्रणाकक्ष में जब राजा ने आसन ग्रहण कर लिया तो उन्होंने बाँस का वह टुकड़ा महामात्य को देते हुए कहा-

''महामात्य देखो मथुरा नरेश ने क्या गोपनीय सूचना भेजी है।'' कुमिरल नाग ने बाँस का टुकड़ा लिया उसका ढक्कन हटाया और उसके अन्दर से लाल रेशमी वस्त्र का लिपटा हुआ कपड़ा निकाल उसे खोला और राजा को देने को उद्धत हुए।

''आप ही पढ़ो, महामात्य।''

तब राजा की आज्ञा का पालन करते हुए उन्होंने पत्र पढ़ा। पत्र में सामान्य आदरसूचक सम्बोधन के बाद सूचना थीं कि उन्हें अत्यन्त गोपनीय सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि मगध नरेश उत्तर भारत को विजित करने का संकल्प ले चुके हैं। वह मगध के अन्य नरेशों की तरह सम्पूर्ण भारत पर अपना शासन स्थापित करना चाहते हैं। उन्होंने तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी हैं। आपसे निवेदन है कि आप मथुरा आकर मेरे द्वारा आहूत की गई पास पड़ोस के राजाओं की बैठक की शोभा बढ़ाएँ।''

पत्र को पढ़ कर जहाँ महामात्य गंभीर हो गए वहीं राजा व सेना नायक मंगलसेन भी चिंतित दिखाई देने लगे। एकदम शान्ति छा गई।

तब राजा ने मंगलसेन से पूछा-

''महाबलाधिकृत सेनानायक मंगलसेन आप इस विषय पर क्या मत रखते हैं, निसंकोच कहे।''

''महाराज, यह प्रकरण निश्चय ही गंभीर है। यह हमारे राज्य की स्वतंत्रता और विकास से सम्बन्ध रखता है। आप और आपके पूर्वजों ने बड़े ही यत्न से पाँचाल प्रदेश को समृद्ध बनाया है। हमारे अनेक दुश्मन हैं जोकि स्वाभाविक हैं। हर राज्य के दुश्मन होते हैं। मगध का पूरा इतिहास इस बात से भरा पड़ा है कि वह शक्तिशाली रहे और भारत के सम्पूर्ण क्षेत्र पर एक छत्र शासन किये हैं। महाराज जरासंध से लेकर मौर्य मौर्य सम्राट वृहद्रथ तक उन्होंने लम्बे समय तक सम्पूर्ण भारत पर शासन किया है। गुप्तवंश के राजा उसी परिपाटी पर चल रहे हैं। सम्राट चन्द्रगुप्त ने मगध को बहुत मजबूत किया है वहाँ की सेना अच्छी है उसे अच्छे से प्रशिक्षित किया गया है।''

''क्षमा करे सेनानायक, दुश्मन की प्रशंसा कर कहीं आप हमारा मनोबल तो नहीं गिरा रहे हैं?''

महामात्य कुमिरल नाग ने कहा।

''महामात्य जी मैं सत्य का भाषण कर रहा हूँ। महाराज तथा पाँचाल को मैं वास्तविकता से अवगत कराना चाहता हूँ। मैं चाटुकारिता में विश्वास नहीं करता। चाटुकार राजा के अच्छे सेवक नहीं होते। मैं पांचाल नरेश का न केवल हितैषी हूँ बल्कि उनका सम्बन्धी भी हूँ। पाँचाल की उन्नति प्रगति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा हूँ। हम सच्चाई से मुँह नहीं मोड़ सकते। हमें मथुरा नरेश का प्रस्ताव स्वीकार कर राजाओं की बैठक में सम्मिलित होकर यह जानना चाहिए कि उनकी योजना क्या है?ष ''महामात्य बताएँ कि इस पत्र पर तत्काल हम क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करें?''

राजा अच्युत नाग ने पूछा।

''महाराज, वर्तमान में इस पत्र को गोपनीय रखना ही ठीक होगा। इस पत्र में सार्वजनिक होने से अफवाहें फैल सकती हैं जिसका बुरा प्रभाव हमारी शासन व्यवस्था पर पड़ सकता है। इस पत्र का उत्तर दूत को इस तरह से दिया जाना चाहिए कि हमें मथुरा नरेश का प्रस्ताव स्वीकार है आप अपनी ओर से कोई संभावित तिथि भी नियत कर सकते हैं। मथुरा नरेश से विस्तृत वार्ता के बाद ही आगामी रण योजना पर विचार करना उचित होगा।''

महामात्य ने कहा।

''इस पत्र की सूचना की हमें स्वतंत्र रूप से जाँच करनी चाहिए। हमें मगध की ओर अपने गुप्तचर में जाकर सम्राट के विषय में सूचना एकत्र करना चाहिए। हमें अपने मंत्रिमण्डल व उच्चाधिकारियों की एक बैठक कर कुछ प्रारम्भिक तैयारी करनी चाहिए।''

मंगलसेन सेनायक ने कहा–

''कैसी प्रारम्भिक तैयारी सेनानायक?''

विस्तार से तो चर्चा मंत्रिमण्डल में ही हो सकती है पर हमें अपना राजस्व एकत्र करने पर ध्यान देना चाहिए। युद्ध हो या विकास पैसे की आवश्यकता हर समय होती है। अन्न–वस्त्र व अन्य आवश्यक वस्तुओं का संग्रह भी कर लेना चाहिए। रथ गाड़ियाँ सही कराने के अतिरिक्त मार्गो का सुधार, नदियों के पुल, अस्त्र–शस्त्र का निर्माण, अश्वों का प्रशिक्षण हस्तिन घोड़ों का क्रय जैसी तमाम सावधानियाँ हैं जिन्हें हमें प्रारम्भ कर देनी उचित होगा।''

विस्तार से सेनानायक ने बताया।

''इस विषय पर हम विस्तृत चर्चा अपनी गोपनीय मंत्रिमण्डल की बैठक में करेंगे? महादण्ड नायक अशेष नाग से अभिमत लेकर पत्र का उत्तर तैयार कराइये और शीघ्र ही इसे मथुरा नरेश को भिजवाइये। शीघ्र ही राज्य परिषद की गोपनीय बैठक बुलवाइए।''

कहकर राजा ने यह गोपनीय वार्ता समाप्त कर दी। फिर सब दरबार में आए और दरबार का शेष कार्य अपनी योजना के अनुसार निपटाया।

रात्रि में भोजन के उपरान्त अहिच्छत्र के राजप्रासाद के मंत्रणा कक्ष में राजा अच्युतनाग के शीर्ष अधिकारी तथा राजकुमार अरिहन्त व राजकुमार कुशिक नाग उस बैठक में उपस्थित थे। राजा अच्युत नाग बीच में एक आसन्दिका पर विराजमान थे। उनके दाहिनी ओर राजकुमार अरिहन्त व बाई ओर राजकुमार कुशिक नाग बैठे हुए थे। सेनानायक मंगल सेन, प्रधानामात्य कुमिरलनाग, कोषाध्यक्ष बैशेषकर, महादण्ड नायक अशेषनाग वहाँ उपस्थित थे। मंत्रणा कक्ष में कूट गोपनीय पत्र एक बार फिर पढ़ा गया। जो लोग पहले से यह जानकारी नहीं

रखते थे उनके लिए यह नवीन सूचना थी। राजा अच्युत नाग ने सबसे कहा–

''हम कुछ लोग इस विषय पर कुछ वार्ता कर चुके हैं। पर वह वार्ता थी अब हमें विचार-विमर्श कर निर्णय लेना है। राजकुमार अरिहन्त आपका क्या मत है?''

''मेरे संरक्षक नाग नरेश आप जानते हैं कि मैं राजनीति पर अधिक कुशल नहीं हूँ। पर मेरा मत है कि यह समाचार हमारे लिए जागृत कर देने वाला है। अभी तक हमने छोटे-मोटे कुछ युद्ध तो किये हैं पर यह युद्ध हमारे अस्तित्व के लिए हमें लड़ना ही पड़ेगा। चन्द्रगुप्त के समय से ही मगध की शक्ति बहुत बढ़ गई है। समुद्रगुप्त उत्साह से भरे हैं। उनका न केवल राज्य बड़ा है बल्कि उनकी सेना सुगठित है, अस्त्र-शस्त्र अच्छे हैं। और सबसे बड़ी बात उनके इरादे की है। अगर वह राज्य विस्तार के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है तो हम जैसे क्षेत्रीय अधिपतियों के लिए यह कठिन समय है। राजनीति का एक सिद्धान्त है कि संकट की सूचना के बाद हाथ पर हाथ रख कर हम बैठ नहीं सकते। हमारे अकेले के लिए समुद्रगुप्त का सामना करना कठिन है। हम मिलकर सामना कर सकते हैं उसके लिए आवश्यकता है कि हम सभी छोटे राज संगठित हो जाएँ।'' '' पर राजकुमार सब छोटे-मोटे राजाओं को संगठित कौन करेगा। सभी लोग दम्भ पाले हुए हैं सब अपने-अपने दम्भ में चूर हैं तो किसी का नेतृत्व स्वीकार करने को शायद ही तैयार हो।'' सेना नायक मंगलसेन ने कहा।

''यह कठिन समस्या है पर पहल तो करनी ही पड़ेगी। यदि संगठित नहीं होंगे तो सब नष्ट हो जाएँगे।''

राजा ने कहा।

''आपका कथन सही है महाराज जो पहल करेगा उसे छोटा बनना पड़ेगा उसे अपने दम्भ को तिलांजलि देनी होगी।''

कोषाध्यक्ष बैशेषकर ने कहा।

''मैं कोई दम्भ नहीं पालता। राज्य और नाग जाति के लिए मैं किसी भी बलिदान को तैयार हूँ। हमें हर हाल में समुद्रगुप्त के राज्य प्रवाह को रोकना होगा।''

''फिर तो महाराज शीघ्रता करनी होगी। जैसा कि हमने पहले उस विषय पर चर्चा की है। हमें हर दिशा में ध्यान देना होगा। हमारे गुप्तचरों में श्रेष्ठ गुप्तचरों की टोली को तुरन्त काम पर लगाना होगा। और सारी तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिए। सेनानायक मंगलसेन आपके पास गुप्तचरों की क्या स्थिति है?''

राजकुमार ने पूछा।

''राजकुमार कुशिक नाग का मत भी जान लेना चाहिए अभी तक इस विषय पर उन्होंने कुछ भी नहीं कहा है।''

महामात्य ने कहा।

''यह आवश्यक है राजकुमार कुशिक नाग भावी शासक हैं। उन्हें राज्य नीति का अनुभव होना ही चाहिए। कहिए महाराज कुशिक आपका क्या मत है?''

राजा ने पूछा।

''आप सब राजनीति में निष्णात हैं। आप जो कर रहे हैं उचित ही कर रहे हैं? हमारे लिए यह बड़ी ही कौशल की बात है कि हमारे पास शत्रु पक्ष की सूचना। यह भी हो सकता है कि शत्रु पक्ष का कोई गुप्तचर हमारे यहाँ आ गया हो। हमें विजय के लिए शत्रु की गोपनीय सूचना मिलनी आवश्यक है। मैं समझता हूँ कि सारी व्यवस्थाएँ सही करने के साथ मथुरा जाकर पास-पड़ोस के राज्यों के साथ विचार कर हमें अपनी कार्य योजना बनानी चाहिए। यह काम महत्वपूर्ण है यह काम प्रतिनिधि से नहीं होने वाला इसके लिए पिताजी आप को स्वयं सक्रिय होना होगा।'' राजकुमार कुशिका नाग ने कहा।

''मैं तो तैयार हूँ पर इस समय वर्षा ऋतु है। इस समय जाना कठिन होगा, बरसात समाप्त होते ही मैं जाता हूँ।''

राजा ने कहा।

''तब तक कहीं देर न हो जाए?''

राजकुमार अरिहन्त ने कहा।

''हाँ महाराज राजकुमार का कथन सत्य है। बरसात में यात्रा करना कठिन है पर असम्भव नहीं है। आप तैयारी करें मैं यात्रा का प्रबन्ध करता हूँ। महामात्य कुमिरल नाग ने कहा।

''तो फिर यही निश्चय रहा कि हम अपनी तैयारी करें। सेनानायक योग्य गुप्तचर मगध भेजें, राजकोष के लिए धन एकत्र किया जाए ! सेना में भर्ती कर उन्हें प्रदक्षिणा का काम प्रारम्भ किया जाए।''

''राजा ने इस दिशा निर्देश के बाद यह गोपनीय मंत्रणा कक्ष की मंत्रणा समाप्त हुई।''

सब उठकर चले गए।

पन्द्रहवाँ भाग

दिन का तृतीय प्रहर चल रहा था। अहिच्छत्र के प्रशस्त मार्ग पर एक भव्य भवन था जो यों तो राजकीय भवन था। पर वर्तमान में उस समय महामात्य कुमिरल नाग का आवास था। यह विशिष्ट क्षेत्र था जहाँ राजा के उच्चराधिकारियों के आवास थे यह सब आसपास पंक्तिबद्ध थे। लगभग 20 भवन बने हुए हैं सबका निर्माण स्वयं राजा ने अपने उच्चाराधिकारियों के लिए कराया था। राजा कर्मचारियों के आवास के एक अलग बस्ती थी। मार्ग के एक ओर यह भवन थे मार्ग के दूसरी ओर बहुत ही सुन्दर उपवन था कुमिरल नाग के आवास से कुछ ही दूरी पर सूपकारपति मुचिंद का आवास था।

अभी कुछ देर पहले बरसात हुई थी। आकाश में अभी भी बादल। धूप नहीं थी। हवा ठंडी-ठंडी चल रही थी जो इस गर्मी के ऋतु में भी लग रही थी। सामने का उपवन धुला - धुला - सा लग रहा था। उसकी हरीतिमा बढ़ गई थी। मौलश्री व हरसिंगार के वृक्षों से आनन्ददायक सुगन्ध आ रही थी। इसी समय मुचिन्द सूपकारपति की बेटी जो बीस वर्ष आयु की थी सुन्दर वस्त्रों और आभूषणों को धारण किए हुए थी अपने आवास से निकली और पैदल चलती हुई अपने आवास के सटे हुए आवास में प्रवेश द्वार पर पहुँची। द्वारपाल उसे देखते ही मुख्य द्वार खोल दिया और लड़की को उस भवन के अन्दर प्रवेश के लिए स्थान बनाया। सूपकारपति मुचिन्द की पुत्री का नाम गिरिजा था वह कुमिरल नाग की पुत्री चारू से मिलने उसके घर आई थी। चारू उसकी बचपन की सहेली थी। गिरिजा को उस भवन के अधिकांश लोग जानते थे। वह आराम से चलती हुई प्रथम मंजिल पर बने एक सुसज्जित कक्ष की ओर बढ़ी यह कक्ष उसकी सहेली चारू का था। चारू ने जब उसे प्रवेश करते देखा तो वह उठकर उसकी ओर भागी और कक्ष में उसके प्रवेश करते ही अंक में भर लिया। दोनों सहेलियाँ काफी देर तक आलिंगनबद्ध रही फिर गिरिजा बोली-

''अब छोड़ोगी नहीं मुझे, अब तो मैं आ गई हूँ।''

''तू कहाँ चली गई थी। मेरा मन तो बड़ा व्याकुल हो रहा था सोच रही थी कि तू कहाँ गई होगी?''

''चल अब आ गई हूँ। चल पहले बैठ तो जाने दे फिर यह अपने प्रश्नों की झड़ी लगाना।''

गिरिजा बोली।

''आ'' कहती चारू उसे पकड़कर अपने पलंग पर ले गई उसके बैठते ही उससे सटकर बैठती हुई बोली-

''बड़ी खुशबू आ रही है तुझसे कौन सी सुगन्ध लगाई है ?''''चारू मैं कुछ दिन के लिए संभल गई थी।''

''वही संभल जहाँ कल्कि अवतार होने को है?''

''पता नहीं वह संभल थी या कोई और संभल। मैं अपने मामा के यहाँ गई थी पर सुगन्ध जो तुझे अच्छी लगी है वह मुझे मेरी मामा के लड़के ने भेंट की थी।''

''सुगन्ध तो बड़ी मोहक है क्या तुम्हारे मामा के पुत्र भी मोहक है।''

''हाँ नीरू बहुत मैं तो तीन दिन रही उन तीन दिनों में उसने मुझे प्रतिदिन कोई न कोई उपहार दिया।''

''कोई किसी को उपहार यों ही तो नहीं देता?''

''यों ही तो कोई किसी से बात भी नहीं करता। अग्निवीर मुझ पर कुछ ज्यादा ही स्नेह रखता है।''

''यह स्नेह किस प्रकार का है। एक सम्बन्धी का या फिर विशेष प्रिय जन का?''

''तू कुछ भी समझ ले?''

''समझने को तो मैं कुछ भी समझ लूँगी पर तू सत्य के रहस्य को उजागर तो कर।''

''मुझे तो लग रहा है उसका स्नेह एक तरुण तरुणी का अधिक है सम्बन्धी का कम।''

''तेरी क्या प्रतिक्रिया है?''

''मुझे भी अग्निवीर अच्छा लगता है?''

''इसका अर्थ हुआ तुझे भी उससे नेह है?''

''देख चारू हम युवा हैं विवाह की हमारी आयु भी हो रही है। हम अगर उच्च पदाधिकारियों की बेटियाँ न होते तो अब

तक हम विवाह बन्धन में बँध भी चुके होते। यह तो हमारा स्थान है जो हमें अपना नाम आम नागरिक का जीवन जीने नहीं देता।''

''तू सही कह रही है। आम नागरिक को जीवन में जहाँ कठिनाइयाँ हैं वहीं कुछ सुविधाएँ भी है। वो कहीं भी आने-जाने कुछ भी खाने तथा विवाह सम्बन्धों में काफी स्वतंत्र हैं और एक हम हैं जिन पर कितने ही प्रतिबन्ध हैं। हम स्वेच्छा से न कहीं जा सकते हैं न अपनी पसन्द का खा सकते हैं। स्वतंत्रता पूर्वक विचरण भी नहीं कर सकते। समाज का उच्च वर्गीय होना अनेक दायित्वों से बाँधता है।''

''यही तो वह अन्तर है जो हमें जनसामान्य से अलग करता है। चल अच्छा है कि इस जीवन में भी तूने अपने लिए एक जीवन साथी तलाश कर लिया है।''

''अभी कहाँ?''

''चल प्रारम्भ तो हुआ।''

''हाँ यह तो है।''

''तेरा क्या है तूने कुछ किया या नहीं?''

''बस तेरी ही तरह का हाल है अभी तो सिर्फ ठीक से जान-पहचान हुई है।''

''कौन है वह भाग्यवान जिसने हमारी चारू को मोह लिया है?'' ''अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी। दो-चार मुलाकातों से यह जानना कठिन होता है कि व्यक्ति के मन में क्या है। सामान्य शिष्टाचारवश भी लोग एक-दूसरे को देखकर मुस्करा देते हैं, हाल-चाल पूछ लेते हैं।'' ''तुम्हारी बात से मैं सहमत हूँ पर हम स्त्री जाति हैं हमारी छठी इन्द्रिय बड़ी जागरूक होती है। यह दृष्टि मिलते ही व्यक्ति के हृदय की बात जान लेती है।''

''मैं तो ऐसी नहीं हूँ।''

''यह झूठ है हर स्त्री में यह गुण होता है, कुछ तो हुआ ही है तभी तू उसका स्मरण कर रही है।''

''बताया न कुछ संभाषण व परिचय?''

''उसका परिचय बता मैं तो तेरी सहेली हूँ।''

''राजकुमार कुशिक नाग। पर अभी वैसे कुछ बात नहीं है।'' ''चल बता हुआ क्या था?''

''मैं एक बार राजमहल घूमने गई थी। मैंने महारानी महिष्मती से भेंट की वह बड़ी ही आत्मीयता से मिली तू जानती है न उनका व्यवहार कितना अच्छा है। महारानी का दम्भ उन्हें छू तक नहीं गया। वह मुझसे अत्यधिक स्नेह से मिली। मेरा आलिंगन किया मेरा मस्तक चूमा और बड़े स्नेह से अपने पास बिठाया। अभी हम वार्ता कर रही थी कि राजकुमार कुशिक नाग वहाँ आ गए। मुझे देखकर उनके मुख पर एक प्रसन्नता की झलक मैंने देखी।''

''तू है ही इतनी सुन्दर व आकर्षक कि कोई भी पुरुष तुझे देखते ही बलिहार हो सकता है।''

''रहने दो सुन्दर तो तू भी कम नहीं है तभी तो अग्निवीर मोहित हो गया है।''

''आगे बता फिर क्या हुआ?''

राजकुमार ने मेरा अभिवादन किया मैंने भी उठकर मुस्कराते हुए उसका अभिवादन किया। वह मुझे पहले से ही जानते थे। इसलिए पूछ बैठे-

''कैसी हो चारू सब मंगल तो है?''

''सब भगवान की दया है, हमारे यशस्वी राजा के राज्य में सब सुखी हैं तो मैं भी सुखी हूँ।''

''महामात्य तो आनन्द से हैं?''

''जी हाँ कुशल से हैं।''

महारानी महिष्मती ने दोनों की दृष्टि को पहचाना वह बोली - ''हमारे उपवन में अनेक तरह के पुष्प खिले हुए हैं। तुम दोनों जाओ जरा उपवन घूम कर आओ।''

राजकुमार तो जैसे प्रतीक्षा ही कर रहे थे। अपनी माँ का आदेश पाते ही बोले-

''आओ चारू हम उपवन भ्रमण करते हैं?''

''मैं भी उसके आकर्षण में बँधी हुई उठकर उनके साथ महल के प्रांगण में खिलते सुदर पुष्पों को जाकर देखने लगी। सचमुच उद्यान बहुत सुगन्धित हो रहा था। तरह-तरह के पुष्प हवा के झोंकों से लहरा कर हमारा स्वागत कर रहे थे। उपवन

के बीचोंबीच एक फव्वारा था जो चल रहा था हम फव्वारे की ओर मुँह कर स्फटिक शिला पर बैठ गये। तब उन्होंने पूछा–

''कैसा लगा हमारा उपवन ?''

''आपकी ही तरह ताजगी भरा और उल्लसित।''

''प्रशंसा के लिए धन्यवाद चारू जी, वास्तव में हमारे मन के उपवन हमारी मानसिक व शारीरिक दशा को प्रकट करते हैं। अगर शरीर स्वस्थ है मन स्थिर है तो हमें संसार अच्छा ही दिखाई देता है।''

''राजकुमार पर कभी किसी सुन्दर आकर्षक वस्तु को देखकर हम अपने को निरोग और प्रसन्न पाते हैं। आपके दर्शन व सानिध्य का प्रभाव है कि मुझे उपवन व वातावरण मोहक लग रहा है।''

''यह बात तो मैं भी कह सकता हूँ?''

''कह सकते हैं पर अब तक कहा तो नहीं।''

''धृष्टता के लिए क्षमा, आपके सुन्दर आनन को देखकर मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि अपनी प्रसन्नता कैसे व्यक्त करूँ। हम पुरुषों को यह कला कम ही आती है।''

''ऐसा तो नहीं है। संस्कृत काव्य में पुरुष कवियों ने स्त्रियों की प्रशंसा की है। कालिदास अभिज्ञान शाकुन्तलम आपने नहीं पढ़ा?''

''कवि विशिष्ट जन होते हैं, उनके पास शब्द भण्डार बहुत अधिक होता है साथ ही वह अपनी बात को कलात्मक ढंग से कहने में प्रवीण होते हैं वह साधारण लोग नहीं होते, पर हम तो आम जन हैं।''

''आम जन तो आप भी नहीं हैं आप राजकुमार हैं यह सौभाग्य कुछ विशेष लोगों को ही मिलता है।''

''राजकुमार होना सौभाग्य की बात है पर हर राजकुमार कवि भी हो यह तो सम्भव नहीं।''

इसी समय एक सेवक वहाँ आया और उसने विनम्रतापूर्वक प्रार्थना ''महादेवी आपको राज प्रासाद में बुला रही हैं।''''तो चलो।''

राजकुमार ने कहा।''चलिए।''

''फिर हम महारानी के आवास पर पहुँचे जहाँ हमारे जलपान का प्रबन्ध था। महारानी मुझसे बड़े स्नेह का व्यवहार कर रही थी।''

''लगता है कि उन्होंने तुम्हें अपनी पुत्रवधू के रूप में मन ही मन स्वीकार कर लिया है।''

''अभी यह निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता गिरिजा पर हाँ उनका व्यवहार तो अच्छा था।''

''राजकुमार ने कोई संकेत दिया?''

''मुँह से तो कुछ नहीं कहा पर हाव–भाव मुस्कुराहट से तो यही व्यक्त किया कि वह मुझसे प्रेम करने लगे हैं।''

''फिर क्या हुआ?''

''फिर मैं अपने आवास पर आ गई।''

''दोबारा मुलाकात हुई ?''

''कई बार हुई पर उन्होंने अपने मुँह से प्रेम निवेदन नहीं किया।''''ऐसा कर झील के पास जो वैशाली बुद्ध विहार है वहाँ आजकल भन्ते गृहस्थों को प्रतिदिन मध्यान्ह के बाद उपदेश देते हैं। किसी दिन वहाँ चल और राजकुमार को भी साथ चलने को कह। वहाँ हम उपदेश भी सुनेंगे तथा झील में नौका विहार भी कर लेंगे।''

''पर यह सब उनसे कहेगा कौन?''

''नहीं मैं तो नहीं कह सकती।''

''तो यदि मैं तेरी सन्देशवाहक बन जाऊँ तो मुझे क्या मिलेगा।''''तू मेरी सखी है मुझे प्रसन्न रखना मेरा हित चाहना तो तेरा धर्म है।''

''चल फिर मैं तेरी सन्देशवाहक बन जाती हूँ। समय मिलते ही मैं राजकुमार को बुद्ध विहार जाने के लिए कह दूँगी।''

''मेरे पास तेरे लिए धन्यवाद के शब्द नहीं हैं।''

''रहने दे, रहने दे। तेरी सखी हूँ कुछ तो करना ही पड़ेगा।'' उसके बाद और कुछ वार्ता के बाद गिरिजा जलपान कर चली गई।

उत्पीड़न की यात्रा–एक दस्तावेज़

– डॉ. राजवीर सिंह 'कमल'

"'उत्पीड़न की यात्रा' काव्य संग्रह में सुधाकर जी शोषितों, दलितों, पीड़ितों के दु:ख-दर्द को बयान करते हुए उनमें संघर्ष करने की भावना पैदा करके उन्हें क्रान्तिकारी बनने की प्रेरणा देते हैं। अपनी काव्यकृति 'उत्पीड़न की यात्रा' के द्वारा वे समाज में स्वस्थ एवं उपयोगी परंपराओं को अपनाने के लिए तमाम अवरोधों को कुचलने का संदेश देते हैं। कवि मानवता के हिमायती हैं।"

लक्ष्मी नारायण सुधाकर ने 'उत्पीड़न की यात्रा' नामक पुस्तक में मानवता का उत्पीड़न कब से और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसके विद्रूप रूप को उजागर किया है। सुधाकर जी उत्पीड़न की पीड़ा को वेदों के अंदर से देखते हैं। वेदों में यज्ञों का प्रचलन प्रमुख मात्रा में था, जिसमें असंख्य जीवों की बलि दी जाती थी। अश्वमेघ यज्ञ में घोड़े को जला कर पकाकर प्रसाद के रूप में बांट कर खाया जाता था। जन्मेजय के नरमेघ यज्ञ में शूद्रों को यज्ञ में जिन्दा जलाकर उसके मांस को बाँट कर खाया जाता था। बाद में इसे नाग यज्ञ का रूप दिया गया। भारत में ये शूद्र दलितों के साथ होने वाले उत्पीड़न की पृष्ठभूमि है। यहां पंडितों ने ब्राह्मण ज्ञानियों ने कभी उत्पीड़न हिंसा का विरोध नहीं किया बल्कि उदासीन मौन स्वीकृति देते रहे। ये हैं ब्राह्मण उदारवादी चेहरे का स्वरूप। राम को मानवता का नायक माना जाता है। उसी नायक ने शंबूक ऋषि का वध इसीलिए कर दिया कि वो अपने छात्रों को उपदेश दे रहा था। रामराज्य में भी सभी लोगों को पढ़ने का अधिकार नहीं था। अगर होता तो राम शंबूक की हत्या नहीं करता। ऐसा राम मानवता का नायक नहीं हो सकता। गुरु द्रोणाचार्य एकलव्य को अंगूठा इसीलिए कटवा देता है कि वह शूद्र जाति का लड़का राजकुमारों से अधिक निपुण धनुर्धर कैसे हो गया। उसका अंगूठा कटवा दिया। क्या शिष्य के प्रति गुरू का यही धर्म होता है। अगर कोई शूद्र वेद वाक्य का उच्चारण करे तो उसकी जीभ काट दी जाए और अगर उसके कानों में वेद मंत्र सुनाई पड़ जाए, तो उसके कानों में गर्म पिघला शीशा डाल दिया जाए। यह उत्पीड़न का स्वरूप सुधाकर जी के अनुसार मुगलों के आने से शूद्रों को राहत मिली। लेकिन इस राहत को सर्वत्र समाज हजम नहीं कर सका।

मुगलकाल में दलितों को अवसर अनुरूप मिला था।
किन्तु स्वर्णों को मुगलों का सम व्यवहार खला था।

इसके बाद मुगलों ने भी शूद्रों को खूब मारा पीटा / पेशवा और मराठाओं ने भी क्रूर अत्याचार किया। भारत में अंग्रेज व्यापारी बनकर आए। अपनी विद्वत्ता और भारतीयों का जातिगत विभाजन का लाभ उठाकर देश के शासक बन गए। उनके आने से दलितों का उत्पीड़न कम हुआ। शिक्षा के द्वार उनके लिए खोले गए। दलितों शूद्रों ने ईसाई धर्म की ओर पलायन करना भी शुरू कर दिया।

पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से परिवर्तन कुछ आया।
अंग्रेजी शिक्षा ने सारा भारतवर्ष जगाया।

सुधाकर जी के अनुसार बौद्ध काल में देश सम्पूर्णत: खुशहाल रहा। बंधुत्व समानता की भावना लोगों के बीच सेतु हुई। वे बताते हैं :

बौद्ध धर्म का भारत में जब तक प्रभाव रहा था।
भौतिक सुख अध्यात्म शक्ति का सम्यक प्रभाव रहा था।

अनेकों संत महापुरुषों ने उत्पीड़न को खत्म करने के लिए समाज को जगाया, जिसमें संत कबीर, नानक, रविदास, संत गाडगे, चोखामेला, नामदेव आदि संत आते हैं। आदि शंकराचार्य ने श्रमण संस्कृति को खत्म करने का काम किया। देश की आज़ादी के बाद भारतीय शोषित जनता को डॉ. भीमराव अंबेडकर एक शोषण मुक्ति दाता के रूप में मिले। वे महान चिंतक विद्वान विधि विशेषज्ञ राजनीतिज्ञ मानवता के रक्षक सिद्ध हुए। कवि के अनुसार:

शोषित और सर्वहारा को अनुभव मिला सहारा
जैसे विश्वास डूबते को कोई मिल गया किनारा
ऊँची शिक्षा पाकर विश्वविद्यालय भीम बने थे
महान मनीषी शैलवन में अद्‌भुत अशोक बन थे।
अन्यायी अत्याचारियों को संयम शील सिखाया
स्वाभिमान से जीना शोषित पीड़ित को बतलाया।

सुधाकर जी की कविता 'उत्पीड़न की यात्रा' अतीत से लेकर वर्तमान परिस्थितियों तक होने वाली मानवीय उत्पीड़न की वेदनाओं का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है। स्वराज्य कविता

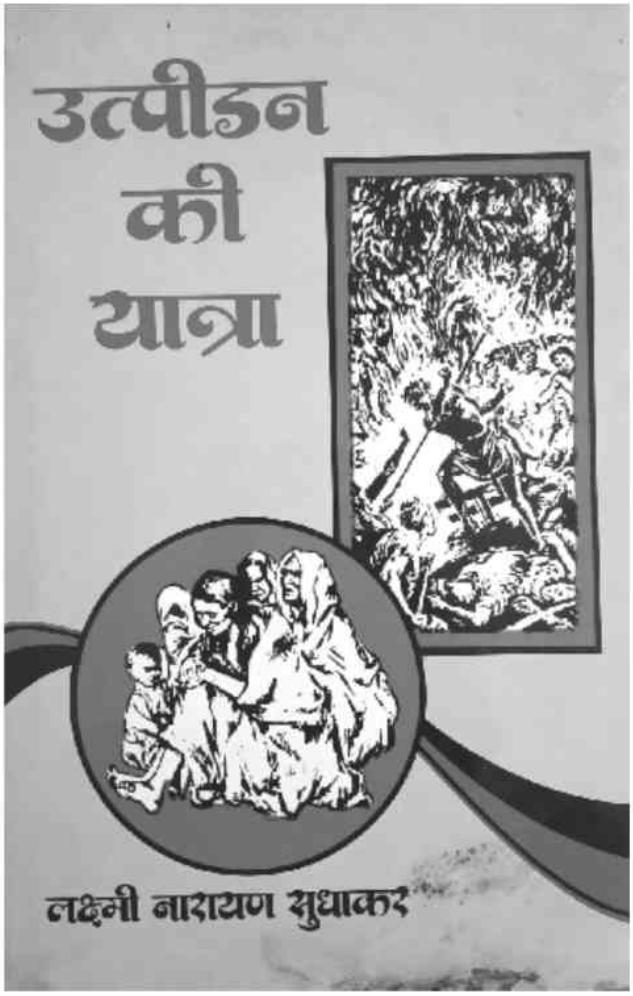

में सुधाकर जी बताते हैं कि होली के नाम पर दबंग दलित बस्तियों में नंगा नाच नाचते हैं। ब्राह्मण की गुलामी आमजन्मे पर हानी हो रही है। आगरा के बेलही कांड जैसे कांड आये दिन हो रहे हैं। वर्तमान परिस्थिति विसंगतियों से परिपूर्ण है। तभी तो कवि कहता है–

नेता–नेता आज़ाद हुए यहां उनकी ही आज़ादी है
जनता के जीवन में देखो बरबादी ही बरबादी है।

15 अगस्त 1947 को केवल देश आज़ाद हुआ, जबकि मानवता आज भी गुलाम बनी हुई है। जाति के नाम पर इंसानों पर क्रूर हमला होते ही शासन प्रशासन केवल कोरे वायदे देकर आंसू पोछने का कार्य करते हैं।

बहु बेटियाँ नित दहशत की भेंट चढ़ाई जाती है।
सुहाग रात आने से पहले चिंता दिखाई जाती है
जिंदगियों का मेला जला जले तुम्हारी पूरी आज़ादी है
बतला दो दुनिया वालों को कहां छुपाई आज़ादी है।

लाल किला कविता में कवि का मानना है कि आज़ादी केवल धन्ना सेठों ने ही पाई है। आम जन आज भी गुलामी की जिंदगी जी रहा है। तभी तो कवि कहता है कि–

आज़ादी आई महलों में झोपड़ियों में है अंधकार
भूखे प्यासे तन से डर-डर कांपता का विचार।

सत्ताधारी समाज व राजनीति के ठेकेदार देश के शहीदों की शहादत को भूल गये कि आजाद देश के लिए उनके क्या अरमान थे। उनको धूल में मिला दिया है।

'अस्पृश्य' कविता में कवि सड़ी गली परंपराओं के स्थान पर स्वस्थ परंपराओं को अपनाने पर बल देता है। अज्ञानता असमानता अन्याय को चूर–चूर करके भाई–चारे की भावना को कायम करता है। दलितों को नागवंशी तथा भारत का आदिवासी बताते हुये उन्हें भी भीमराव के मूल कथन – शिक्षा संगठन, संघर्ष को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

स्वाभिमान समानता जगाकर कर दो दूर अंधेर।
ला सकते हो तुम्हीं देश में फिर से नया सवेरा।।

'समता दिवस' कविता में कवि सत्ताधारियों से प्रश्न करता है कि दलितों को कब आज़ादी दोगे / जात–पांत, भेदभावों से कब मुक्त करोगे / वर्तमान परिवेश में देशभक्ति का प्रतीक रूपया ही बन गया है।

मंदिर में देव न देखा देखा ना खुदा चर्चों में,
मसीहा ना मिला गिरजों में सौ हम ने सार सदनों में।
रूपया में ही धर्म दिखा है, रूपया ही राष्ट्रीय तिरंगा,
फहराता जिसके घर में वही देशभक्त कहलाया।

'भूखा क्या नहीं करता' नामक कविता में संदेश देते हैं कि जब किसी चीज की अति हो जाती है तब कमज़ोर दीखने वाला भी बदलाव लाने के लिए क्रांतिकारी बन जाता है। तब वह कहता है कि–

युग युग में सूखे मानव को या सरप्लस मिलेगी रोटी।
या फिर शोषक जमातों की बिखर जाएगी बोली बोली।।

कवि का मानना है कि शोषितों को शोषण से मुक्ति तभी मिलेगी, जब अंधविश्वास, अज्ञानता से मुक्त होकर अपना दीपक स्वयं बनकर अपना रास्ता खुद तलाश करेगा। सुधाकर जी कहते हैं कि–

शिक्षित होकर आज़ादी की क़ीमत को पहचानना।
पढ़ लिख कर अधिकारों और कर्तव्यों को जानो।।

आज इंसान बहुरूपिया बन कर इंसानियत को छल रहा

है। बुद्ध भूमि पर युद्ध चल रहा है। 'एकता के स्वर' कविता के द्वारा कवि आवाम को सजग करते हुए कहता है कि नींद से जागकर समाज में सद्भाव कायम करो।

मंदिर मस्जिद गुरूद्वारों के क़मी न लड़ने क़रो।
देश की आज़ादी को ख़तरे में मत पड़ने दो।।

'निराकरण' कविता के द्वारा कवि समस्या का निराकरण का उपाय बताते हुए कहता है कि पुरानी अनुपयोगी परंपराओं को त्याग कर स्वस्थ परंपराओं को अपनाओ–

कर्म से कंधा चुराना छोड़ दो।
कर्म को गंदा बताना छोड़ दो।।
धर्म को अधम बनाया आपने।
धर्म को अधम बनाना छोड़ दो।।

'दलित चेतना' कविता में सुधाकर जी दलितों को गुलामी की जिंदगी त्यागने के लिए कहते हैं कि–

कहां से कहां दुनिया निकल गई, तेरे अभी तक न दिन बदले।
जंजीर तोड़ गुलामी की, कुछ तो कर ले जग में पगले।।
उन्नति के पथ पर बढ़ो, वीर दुनिया में अपना नाम करो।
बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, संघर्ष सतत निष्काम करो।।

कवि का मानना है कि त्याग के बिना कोई भी समस्या हल नहीं हो सकती। क्रूर आदमियों को करुणा की भाषा सिखानी होगी। सामाजिक परिवर्तन हेतु अब रोशनी से संघर्ष करना होगा। अंधकारों को भ्रम करना होगा। स्वाभिमान की भावना प्रत्येक मानव हृदय में भरनी होगी।

तभी तो कवि कहता है–

स्वाभिमान भरते प्राणों में आहों का संसार नहीं हो।
वह जीवन भी क्या जीवन है जिसमें जीवन का प्यार नहीं हो।।

'इतिहास के झरोखें से' कविता में कवि दलितों में स्वाभिमान, ओजस्वी भावना का संचार करते हुए बताता है कि तुम चंद्रगुप्त के वंशज और नागवंश के सेनानी हो। तक्षशिला के तक्षक और महाभारत के कर्ण हो। तुम्हीं एकलव्य, वाणासुर, राजा बलि, बजरंग बली, शम्बूक और शिवशंकर भी तुम्हीं हो। आओ अपनी शक्ति को पहचानो। सिक्ख, मुस्लिम, ईसाई ये सब तुम्हारे हैं। तुम्हारी संख्या देश में 80 प्रतिशत है। आपसी एकता कायम कर, देश की सत्ता पर आसीन हो सकते हो।

सारे मिलकर एक बनो, अस्सी प्रतिशत से ज्यादा हो।
कर सकते मिलकर राज यहां यदि करने पर आमादा हो।।
झलकारी, फूलन बहन बनो, शोले बन बरसो आफताब।
प्रेरणा स्रोत बाबा साहेब उधम सिंह जैसे लाल बनो।।

कवि के मतानुसार वह सभी को अच्छा लगे वह सरस्वती है और जो प्रभावी हो मार्मिक वह दुखवाही है। जो जन–जन का कल्याण करे वह सहर्ष है। जो धर्म की खातिर जिंदगी भर काम करता है वह मरने के बाद भी भजाया में जिंदा रहता है। कवि श्इंकारश कविता में बताता है कि यहां पर पुराने आतंकीवादी पूंजीवादी प्रजापालक घर हावी हो रहे हैं। कमज़ोर आदमी की कमाई को दूसरे लूट कर खा रहे हैं। पुरोहितवाद, भाग्यवाद और ब्राह्मणवाद राष्ट्र विरोधी हैं। वह देश की एकता को कमजोर कर रहे हैं।

जात–पांत की जंजीर–नीव की नींव अंधा पक्षपात है।
सामंती शोषण की ज्यों की त्यों चलती व्यवस्था है।।
मानव समाज का शत्रु पुरोहित पूंजीवाद रहा है।
युद्ध विरोधी रहा इतिहास यह ब्राह्मणवाद रहा है।।

जो लोग धर्म को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं वो समाज और राष्ट्र के लिए नासूर साबित हो रहे हैं। ये मानव समाज और राष्ट्र तीनों का बलात्कार है।

मंदिर मस्जिद को लड़वाया धर्म के धंधे वालों ने।
राजनीति को धर्म के जोड़ कर के धर्म के धंधे वालों ने।।
नीतियों का गला घोंट दिया धर्म के धंधे वालों ने।
दलित पिछड़ों को सरवारा धर्म के धंधे वालों ने।।

वर्तमान शासन व्यवस्था पर कवि कुछ ऐसे प्रश्न करता है जिनका उत्तर पाना कठिन है। अनुचित प्रश्न कविता में साम्प्रदायिकता और नेताओं की नीचता परस्पर उजागर हो जाते हैं जैसे–

राजनीति बन गई दुकान धंधा पनप मसलों का।
नेताओं के लिए केवल भ्रम स्वरूप विशालकों का।।
पुरस्कार की सोचने को जनता के कटु सवालों का।

ये दलित मजदूरों के शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाते हुए धन धरती का बंटवारा, न्याय, समानता, मर्यादा, सर्वधर्म और सर्वोदय ज्ञान की मांग करते हैं। धार्मिक केदारियों को कुचलने, सामंती शोषण, दुराचार, गुलामखोरी आदि का पर्दाफाश लोकराज्य कविता में करते हैं।

विज्ञान ज्ञान बल विद्या में भारत की शान निखरी हो।
भरपूर रहे भंडार भरे निज भाषा गौरव शाली हो।।

हमारी एकता कविता में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की एकता कायम करने की बात करते हुए ऊंच–नीच, जात–पांत सजीवों झगड़ों, आपसी फूट त्याग कर महाशक्ति बनने के लिए उद्घोष करते हैं :

सत्ता स्वतंत्रता को तुम इस घर में दीप जलाने दो।
महाशक्ति बनकर दुश्मन के दिल को फिर दहलाने दो।।
मानवता की रक्षा करना पहला धर्म हमारा।
जियो और जीने दो समझ यही हमारा नारा।।

आज सारा सामाजिक परिवेश अंधकारमय वीरान और उदासीपन सा हो गया है फिर भी सुधाकर जी उम्मीद की चादर ओढ़ कर आशावान बने रहने की बात करते हैं :

इस चमन में फिर बहारे गुल खिलाने आएंगी।
उम्मीद की चादर सुधाकर ओढ़ न्यारे सो गए।।

आज चारों ओर जो अत्याचार आदमी आदमी के बीच में हो रहा है, उसका मूल कारण जातियां ही हैं। कोई बहुत बड़ा पागल आदमी होगा, जिसने जातियों का नामकरण किया होगा:

पागल रहा होगा कोई जिसने बनाई जातियां।
जाति में भी जातियों की हो गई बसावट क्यों।।
जातियों की हर नस्लीय की जड़ें हैं देश में।

समाज में समता, आर्थिक समानता और न्याय प्रियता की मांग करते हैं कि–

न्याय का तराजू दोनों पलड़ों में समान हो।
पक्षपात हीन न्यायाधीश का विचार हो।।
प्रपंचहीन मंच और पंच सरकार हो।
विहीन जाति वर्ग के समाज की बहार हो।।

'आदमी' कविता में आदमी को सर्व अवगुण युक्त बताया गया है। सारी परेशानियों को आदमी खुद पैदा करता है और खुद ही उन में उलझता है। 'कोमी एकता' में कवि राष्ट्रीय एकता को मजबूती देता है। कवि का मानना है कि :

हिंदू मुस्लिम बौद्ध जैन सिक्ख ईसाई सब भाई।
इस धरती की माटी सबसे अपने शीश चढ़ाई।।

आजाद भारत में गणतंत्र दिवस प्रति वर्ष मनाया जाता है। शहीदों की गौरव गाथा गाई जाती है। राष्ट्रीय परंपराओं का निर्वाह किया जाता है, फिर भी सामंतवाद, आतंकवाद, पूंजीवाद, भ्रष्टाचार आदि का बोलबाला है। ईश्वर, धर्म, जाति आदि को आधार बनाकर मानवता का लहु बहाया जाता है। जैसे–

ईश्वर अल्लाह गॉड वाहे गुरु एक सभी बतलाते हैं।
करते सब गुणगान उसी का फिर क्यों लगे विराने से।।
राम, रहीम, करीम के बंदे पीरों वीरों के घर में।
मंदिर मस्जिद चर्च और गुरूद्वारे क्यों अनजाने से।।

'आह्वान' कविता में कवि मानव का कल्पना से मोहभंग करके यथार्थ पर आगे के लिए अग्रसर करता है।

तन के उजाले मन के काले अपने दाग छुड़ाओ।
नहीं दहक के भूल गए तुम धध मण अभी में जाओ।।
खरी कसौटी पर उसी उतर ऐसी नीति निभाओ।
नई सभ्यता नई संस्कृति नव युग गौरव गाओ।।
धरती के स्वर को ऊंचा कर पुण्य दिखलाओ।

नव परिवर्तन हेतु कवि क्रांति की पूजा करने की बात करता है क्योंकि परिवर्तन क्रांति से ही संभव है जाति धर्म की बेड़ियों को तोड़ कर पूंजीवाद, सामंतवाद, मनुवाद को समूल नष्ट कर दो तभी मानवता का सुखद सवेरा आयेगा।

निर्भय होकर आग लगा दो दुनिया के वैभव को।
जहां नहीं रोटी मिल पाती मेहनतकश मानव को।।
पूंजीवाद मिटा दो, समता तभी विश्व में होगी।
मनुवाद मिटा दो दुनिया से, तो मानवता पनपेगी।।
अपना दीपक आप बन नया प्रकाश विश्व में भर दो।
पीड़ित पिछड़े दलित संगठन शक्ति का परिचय दो।।

कवि युवाओं से हाथ में मशाल लेकर संगठित होकर नव परिवर्तन हेतु आह्वान करता है कि आप तमाम अराजकों के बुखार दो। तानाशाह निलज्जता पर करारे प्रहार करो। अराजकों को दूर करते हुए आगे बढ़ो।

अपना दीपक बन आप चलो, हल करते जटिल सवाल चलो।
चलो खोजने आजादी को, लेकर वीर मशाल चलो।
होकर एक जमात चलो,
अन्यायी अत्याचारों को देते हारी मात चलो।
तानाशाह निरंकुश पर अब अन्कुश चलो लगाने को,
फुटपाथों पर सोने वालों, तुम गुदड़ी के लाल चलो।

'उत्पीड़न की यात्रा' काव्य संग्रह में सुधाकर जी शोषितों, दलितों, पीड़ितों के दु:ख-दर्द को बयान करते हुए उनमें संघर्ष करने की भावना पैदा करके उन्हें क्रान्तिकारी बनने की प्रेरणा देते हैं। अपनी काव्यकृति 'उत्पीड़न की यात्रा' के द्वारा वे समाज में स्वस्थ एवं उपयोगी परंपराओं को अपनाने के लिए तमाम अवरोधों को कुचलने का संदेश देते हैं। कवि मानवता के हिमायती हैं।

डॉ. राजवीर सिंह 'कमल'
ए ब्लॉक, हर्ष विहार,
पोस्ट नंद नगरी, दिल्ली
मो. नं.-9278448047

मनोहर लाल प्रेमी के दोहों में आंबेडकरवादी चिंतन के विविध रूप

- देवचंद्र भारती 'प्रखर'

"आंबेडकरवादी चेतना का स्वरूप इतना व्यापक है कि यह जन-जन के लिए कल्याणकारी है। वास्तव में, आंबेडकरवादी चेतना बहुजन हितैषी चेतना है। आंबेडकरवादी चेतना का स्वर जनचेतना के स्वर में मिलकर उसे अत्यधिक प्रबल बना देता है। कवि मनोहर लाल प्रेमी ने 'जनचेतना के स्वर' नाम से आंबेडकरवादी चेतना को छंदबद्ध करके इसे और भी अधिक व्यापक रूप प्रदान किया है।"

आंबेडकरवादी चिंतन का आधार आंबेडकरवादी चेतना है। आंबेडकरवादी चेतना क्या है? इसका विस्तृत विवेचन 'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका और 'आंबेडकरवादी कविता के प्रतिमान' पुस्तक में किया जा चुका है । आंबेडकरवादी चेतना के अंतर्गत बौद्ध दर्शन, वैज्ञानिक दृष्टि और सामाजिक यथार्थ आदि को समाविष्ट किया जाता है। बौद्ध दर्शन के प्रमुख अंग हैं – अनीश्वरवाद, अनात्मवाद और प्रतीत्यसमुत्पाद। बौद्ध दर्शन का अनुसरण करने वाला मनुष्य ईश्वर की सत्ता को नहीं मानता है। अनीश्वरवादी मनुष्य यह भी नहीं मानता है कि मंदिरों, पहाड़ों, नदियों और वृक्षों में किसी अदृश्य ईश्वर का वास होता है। बौद्ध मनुष्य वैज्ञानिक दृष्टि से संपन्न होता है तथा शोधपूर्ण वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित बातों पर विश्वास करता है। बुद्ध का अनुयायी मनुष्य अलौकिक कल्पनाओं को निराधार मानते हुए सांसारिक/सामाजिक यथार्थ पर आधारित बातों और विचारों को महत्व देता है । बौद्ध धम्म के महान ज्ञाता बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर ने अपने ग्रंथ श्बुद्ध और उनका धम्मश में बौद्ध धम्म दर्शन की तार्किक एवं सुस्पष्ट समालोचना की है। साथ ही, उन्होंने कुछ मौलिक विचारों का भी प्रतिपादन किया है। बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर के दार्शनिक विचारों को 'आंबेडकरवाद' के नाम से जाना जाता है। आंबेडकर-दर्शन विश्व के अनेक दर्शनों का समुच्चय है। यही कारण है कि आंबेडकरवाद अत्यंत व्यापक एवं लोक कल्याणकारी विचारधारा है। आंबेडकरवादी चेतना से परिपूर्ण मनुष्य बुद्धवाणी का अनुपालन करता है। वरिष्ठ आंबेडकरवादी कवि मनोहर लाल प्रेमी बौद्ध धम्म दर्शन एवं बुद्धवाणी के कर्मठ प्रचारक हैं। वे अपने दोहों में बुद्ध की अमृतवाणी को उद्घाटित करते हुए हृदय में मैत्रीभाव धारण करने का संदेश देते हैं। यथा :

अमृतवाणी बुद्ध की, ले जो हृदय धार।
कटुता जलकर खाक हो, हिय मैत्री विस्तार।।

बौद्ध धम्म के अनुयायियों के लिए अपने दैनिक जीवन में बौद्धचर्या का पालन करना अनिवार्य है। बौद्धचर्या के अंतर्गत पंचशील का विशेष महत्व है। पंचशील में पाँचवा शील ग्रहण करते हुए यह प्रतिज्ञा ली जाती है-सुरामेरयमज्ज पमादट्ठाना वेरमणि सिक्खापदं समादियामि। प्रेमी जी पंचशील की इसी प्रतिज्ञा को ध्यान में रखते हुए जन-जन को मद्यपान से विरत रहने की प्रेरणा देते हैं। साथ ही, वे नशा के दुष्परिणाम से सावधान भी करते हैं। अवलोकनार्थ :

नशा नशाए जिंदगी, सहज घटाए मान।
आपे में नर ना रहे, खोता नित पहचान।।

आंबेडकरवादी विचारधारा का व्यक्ति डॉ. आंबेडकर के विचारों के अनुसार जीवनयापन करने के साथ ही श्जय भीमश कहकर अपने प्रिय जनों का अभिवादन भी करता है। अभिवादन के शब्द ही किसी व्यक्ति की विचारधारा का संकेत करते हैं । इसलिए प्रेमी जी श्जय भीमश अभिवादन की महत्ता का गान करते हैं। उनका मानना है कि इस अभिवादन से हृदय में निर्भीकता आ जाती है और व्यक्ति अनुशासित हो जाता है । प्रेमी जी के शब्दों में :

बाबा साहब को नमन, अभिवादन जय भीम।
हृदय भरे निर्भीकता, अनुशासन की थीम।।

बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के विचारों को मानने वाले लोग उनके एक-एक कार्य को महत्वपूर्ण मानते हैं । यहाँ तक कि उनके द्वारा रचित ग्रंथ भी उनके अनुयायियों के लिए सर्वमान्य हैं। यह सर्वविदित है कि डॉ. आंबेडकर भारतीय संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। उन्हें भारतीय संविधान का जनक कहा जाता है। संविधान में वर्णित मौलिक

अधिकारों के कारण भारत का वंचित-वर्ग विकास की स्थिति को प्राप्त हुआ है। कवि मनोहर लाल प्रेमी अपने दोहे में इस सामाजिक यथार्थ को प्रकट करते हैं कि संविधान से ही दलित व्यक्ति विद्वान बने हैं और उनकी शान में वृद्धि हुई है। उदाहरणार्थ:

संविधान से ही बने, दलित आज विद्वान।
संविधान से ही मुखर, आन बान और शान।।

आजकल बहुजन समाज, बहुजन साहित्य, बहुजन इतिहास आदि शब्दों का बहुत अधिक प्रयोग किया जा रहा है। ऐतिहासिक अध्ययन से ज्ञात होता है कि 'बहुजन' शब्द तथागत गौतम बुद्ध के धम्मोपदेशों (त्रिपिटक) से लिया गया है। तथागत बुद्ध के धम्म की विशेषता के बारे में लोकचर्चित उक्ति है - बहुजन हिताय बहुजन सुखाय। तथागत बुद्ध ने भिक्खुओं को आदेश देते हुए कहा था-चरथ भिक्खवे चारिकं बहुजन हिताय बहुजन सुखाय लोकानुकंपाय अत्थाय हिताय सुखाय देव मनुस्सानं देसेथ भिक्खवे धम्म आदि कल्याणं मज्झं कल्याणं परियोसान कल्याणं। बुद्ध के इस कथन से स्पष्ट है कि उनका धम्म बहुत बड़े जन समुदाय के हित और सुख के लिए है। बुद्ध का 'बहुजन' जाति और वर्ग से विहीन श्दीर्घ जनसमूहश का बोधक है। वर्तमान में, राजनीतिक मानसिकता के लोगों ने 'बहुजन' शब्द को अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग तक ही सीमित कर दिया है। कवि मनोहर लाल प्रेमी बौद्ध धम्म के सच्चे अनुयायी हैं। वे 'बहुजन' शब्द को व्यापक अर्थ में ग्रहण करते हैं । प्रेमी जी भारतवर्ष की उन्नति के लिए बहुजन-एकता की प्रेरणा देते हैं । यथा :

बहुआयामी है बड़ा, बहुजन शब्द विशेष।
रहें संगठित सजग हो, विकसे भारत देश।।

आंबेडकरवादी चेतना और दृष्टि से संपन्न मनोहर लाल प्रेमी एक जागरूक कवि हैं। वे अपने आसपास के माहौल की हमेशा खबर रखते हैं। लखनऊ में उनका निवास है। वे लखनऊ में हो रहे वायु-प्रदूषण और ध्वनि-प्रदूषण से चिंतित हैं। प्रेमी जी ने अपनी इस चिंता को अपने एक दोहे में व्यक्त किया है।

शहर लखनऊ में अहम, प्रदूषण पुरजोर।
वाहन से निकला धुआँ, तेज ध्वनि का शोर।।

वृक्षों की कमी के कारण उत्पन्न मानसूनी दुष्परिणाम को ध्यान में रखते हुए कुछ वर्षों से सरकारी योजना के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम निरंतर संचालित किये जा रहे हैं। वृक्षारोपण के रूप में भिन्न-भिन्न प्रकार के वृक्ष लगाए जाते हैं। किंतु केवल बोधिवृक्ष (पीपल) का अत्यधिक संख्या में रोपण किया जाए, तो किसी भी व्यक्ति के लिए आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक है। प्रेमी जी अपने शहर में पहली बार हुये बोधिवृक्ष-रोपण से आश्चर्यचकित हो जाते हैं। इसलिए उनके मन में प्रश्न उत्पन्न होता है कि वह व्यक्ति कौन है, जिसके मन में इस प्रकार का विचार आया? प्रेमी जी जब अपने दोहे में 'जन ऑक्सीजन स्रोत' पद का प्रयोग करते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि वे बोधि-वृक्षारोपण करने वाले उस अपरिचित व्यक्ति के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। क्योंकि बोधिवृक्ष का रोपण करना एक महान कार्य है और ऐसा महान कार्य कोई महान व्यक्ति ही कर सकता है। 'बोधिवृक्ष' नाम से ही स्पष्ट है कि यह वृक्ष 'ज्ञान'

का प्रतीक है, जिसका सीधा संबंध तथागत गौतम बुद्ध और उनकी कठिन तपस्या से है। ऑक्सीजन का विशाल स्रोत होने के कारण भी बोधिवृक्ष महत्वपूर्ण है। लखनऊ जैसे प्रदूषित शहर में बोधिवृक्ष का रोपण करने से वातावरण को तेजी से शुद्ध किया जा सकता है। इसीलिए प्रेमी जी बोधि-वृक्षारोपण के इस पुनीत कार्य को एक विशेष उपलब्धि के रूप में चिन्हित करते हैं। यथा:

किसके मन की सोच ये, थी किसकी अप्रोच।
बोधिवृक्ष रोपित हुये, जन ऑक्सीजन स्रोत।।

कविवर प्रेमी जी जीवन के हर क्षेत्र की पर्याप्त जानकारी रखते हैं। धम्म-दर्शन, साहित्य और समाज के अतिरिक्त प्रेमी जी शिक्षा के क्षेत्र का भी अद्यतन समाचार प्राप्त करते रहते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में मध्याह्न भोजन योजना (मिड डे मील स्कीम) भारत सरकार द्वारा 15 अगस्त 1995 को आरंभ की गयी। इस योजना के अन्तर्गत पूरे देश के प्राथमिक और लघु माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों को दोपहर का भोजन नि:शुल्क प्रदान किया जाता है। इस योजना के समर्थक लोगों का कहना है कि नामांकन बढ़ाने, प्रतिधारण और उपस्थिति तथा इसके साथ-साथ बच्चों में पौषणिक स्तर में सुधार करने के उद्देश्य से इस योजना को शुरू किया गया था। क्योंकि अधिकतर बच्चे खाली पेट विद्यालय पहुँचते हैं। जो बच्चे विद्यालय आने से पहले भोजन करते हैं, उन्हें भी दोपहर तक भूख लग जाती है और वे अपना ध्यान पढाई पर केंद्रित नहीं कर पाते हैं। मध्यान्ह भोजन योजना के पक्षधर लोगों का मानना है कि मध्याह्न भोजन बच्चों के लिए 'पूरक पोषण' के स्रोत और उनके स्वस्थ विकास के रूप में भी कार्य कर सकता है तथा यह समतावादी मूल्यों के प्रसार में भी सहायता कर सकता है, क्योंकि कक्षा में विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि वाले बच्चे साथ में बैठते हैं और साथ-साथ खाना खाते हैं। विशेष रूप से मध्याह्न भोजन विद्यालय में बच्चों के मध्य जाति व वर्ग के अवरोध को मिटाने में सहायक हो सकता है। विद्यालय की भागीदारी में लैंगिक अंतराल को भी यह कार्यक्रम कम कर सकता हैं, क्योकि यह बालिकाओं को विद्यालय जाने से रोकने वाले अवरोधों को समाप्त करने में भी सहायता करता है। मध्याह्न भोजन योजना छात्रों के ज्ञानात्मक, भावात्मक और सामाजिक विकास में सहायता करता है। सुनियोजित मध्याह्न भोजन को बच्चों में विभिन्न अच्छी आदतें डालने के अवसर के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है। ये सारी बातें तो वे लोग कहते हैं, जो मध्यान्ह भोजन योजना के पक्ष में है। किंतु मनोहर लाल प्रेमी को इस योजना का दुष्परिणाम दिखाई देता है । उन्हें यह योजना प्राथमिक शिक्षा में बाधक जान पड़ती है। प्रेमी जी के शब्दों में :

बेसिक शिक्षा में रहा, बाधक मिड डे मील।
बँटा ज्ञान की जगह पर, खिचड़ी दलिया खीर ।।

प्रेमी जी के आंबेडकरवादी चिंतन की विविधता का एक रूप उनकी राजनैतिक जागरूकता भी है। राजनैतिक क्षेत्र से अनभिज्ञ व्यक्ति सभी क्षेत्रों का अभिज्ञ होकर भी पिछड़ा माना जाता है। राजनैतिक क्षेत्र में जीएसटी द्वारा उत्पन्न हलचल को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। जीएसटी यानी वस्तु एवं सेवा कर भारत में 1 जुलाई 2017 से लागू एक महत्वपूर्ण अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था है, जिसे सरकार व कई अर्थशास्त्रियों द्वारा स्वतंत्रता के पश्चात् सबसे बड़ा आर्थिक सुधार बताया गया है। इसके लागू होने से केन्द्र सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा भिन्न-भिन्न दरों पर लगाये जा रहे विभिन्न करों को हटाकर पूरे देश के लिए एक ही अप्रत्यक्ष कर प्रणाली लागू हो गयी है। वस्तु एवं सेवा कर परिषद (जीएसटी काउंसिल) ने पाँच तरह के कर निर्धारित किये हैं - 0 प्रतिशत, 5 प्रतिशत, 12 प्रतिशत, 18 प्रतिशत एवं 28 प्रतिशत। आरंभ में परिषद ने कहा था कि आवश्यक वस्तुओं जैसे कि दूध, लस्सी, दही, शहद, फल एवं सब्जियां, आटा, बेसन, ताजा मीट, मछली, चिकन, अंडा, ब्रेड, प्रसाद, नमक, बिंदी, सिंदूर, स्टांप, न्यायिक दस्तावेज, छपी पुस्तकें, समाचार पत्र, चूड़ियाँ और हैंडलूम आदि वस्तुओं पर जीएसटी नहीं लगेगा। लेकिन 18 जुलाई 2022 से पैकेटबंद खाद्य उत्पादों पर पाँच प्रतिशत की दर से जीएसटी लगने लगा है। इस बारे में भारत सरकार के राजस्व सचिव तरुण बजाज ने कहा कि इन उत्पादों पर कर की चोरी हो रही थी, जिसे रोकने के लिए यह कदम उठाया गया है। कुछ राज्यों ने भी इसकी माँग की थी। उन्होंने यह भी कहा कि पैकेटबंद खाद्य उत्पादों पर जीएसटी लगाने का फैसला केंद्र सरकार का नहीं, बल्कि जीएसटी परिषद का है। जीएसटी दरों के बारे में सुझाव देने वाली श्फिटमेंट समितिश ने इस बारे में निर्णय किया था। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि ताज़ी सब्ज़ियाँ, फल, प्याज़, लहसुन, मीट, अंडे और दूध जीएसटी से मुक्त हैं । वहीं किसी ब्रांड के पैक्ड मीट पर

5 प्रतिशत जीएसटी लगाने का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त कोकोआ, चॉकलेट उत्पादों पर 18 प्रतिशत, जबकि सॉफ्ट ड्रिंक्स पर 28 प्रतिशत जीएसटी देना पड़ता है। कविवर प्रेमी जी की इच्छा है कि किसी भी रूप में भोजन सामग्री पर जीएसटी न लगे। उनका ऐसा अनुमान है कि इस तरह का निर्णय लेने से भोजन सामग्री कम मूल्य में उपलब्ध हो जाएगी, जिसके फलस्वरूप निर्धन व्यक्ति भी सरलता से भोजन सामग्री प्राप्त कर सकेगा और भूख से उसे प्राण त्यागना नहीं पड़ेगा।

भोजन सामग्री रहे, यदि जीएसटी मुक्त।
मरे गरीब न भूख से, जनहित यह उपयुक्त।।

आंबेडकरवादी चेतना के लक्षणों में एक लक्षण लोकतंत्र की पक्षधरता भी है। मताधिकार, लोकतंत्र की रीढ़ है। भारत का हर नागरिक अपने मताधिकार का निर्वहन करते हुए मतदान करता है। मतदान के बारे में कहा जाता है कि यह निर्णय लेने या अपना विचार प्रकट करने की एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी वर्ग या समाज का सदस्य राज्य की संसद या विधानसभा में अपना प्रतिनिधि चुनने में अपनी इच्छा प्रकट करता है। कवि प्रेमी जी मत को बहुत ही मूल्यवान मानते हैं । लोकतंत्र प्रणाली में मत (विचार) का स्थान सर्वोपरि है। मत में वह शक्ति है, जो क्षणमात्र में सत्ता-परिवर्तन कर देती है। इसलिए प्रेमी जी लोभरहित और निर्भीक होकर मतदान करने की प्रेरणा देते हैं, ताकि सत्ता के लिए सही व्यक्ति का चुनाव हो सके।

मूल्यवान है मत अधिक, लोकतंत्र का मान।
लोभरहित निर्भीक हो, करें सभी मतदान।।

कवि मनोहर लाल प्रेमी आंबेडकरवादी चिंतन के व्यापक स्वरूप को स्वीकार करते हैं। उनकी चेतना में धर्म, समाज, शिक्षा, साहित्य, राजनीति आदि के लिए क्षेत्रीयता और भाषायी सीमा का कोई बंधन नहीं है। भाषा के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव उन्हें पसंद नहीं है। प्रेमी जी हिंदी भाषा के मूल अर्थ और परिभाषा को ध्यान में रखते हुए उसकी भाषा वैज्ञानिक विशेषता का गुणगान करते हैं। हिंदी का अर्थ है - हिंद (भारत) का निवासी। वास्तव में, हिंदी किसी राज्य विशेष की नहीं, बल्कि समस्त भारतवासियों की भाषा है। कविवर प्रेमी जी ने हिंदी की सरसता, सरलता और मधुरता को सुंदर शब्दों में व्यक्त किया है। उदाहरणार्थ :

हिंदी हरती वाक्य के, सब भाषागत क्लेश।
नशती स्वतः दुरूहता, धारे मधुतम वेश।।

आंबेडकरवादी चेतना का स्वरूप इतना व्यापक है कि यह जन-जन के लिए कल्याणकारी है। वास्तव में, आंबेडकरवादी चेतना बहुजन हितैषी चेतना है। आंबेडकरवादी चेतना का स्वर जनचेतना के स्वर में मिलकर उसे अत्यधिक प्रबल बना देता है। कवि मनोहर लाल प्रेमी ने 'जनचेतना के स्वर' नाम से आंबेडकरवादी चेतना को छंदबद्ध करके इसे और भी अधिक व्यापक रूप प्रदान किया है। प्रेमी जी के दोहों में आंबेडकरवादी चिंतन के विविध स्वरूप को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। चूँकि प्रेमी जी 'आंबेडकरवादी साहित्यकारों का वैश्विक संगठन' (GOAL) के पूर्व उपाध्यक्ष हैं, इसलिए उनके ऊपर साहित्यिक दायित्व का भार अधिक है। प्रेमी जी अपने दायित्व का सहर्ष निर्वहन करते हुए दिखाई देते हैं। उनके द्वारा रचित दोहा-संग्रह 'जनचेतना के स्वर' आंबेडकरवादी साहित्य की अमूल्य निधि है।

– देवचंद्र भारती 'प्रखर'

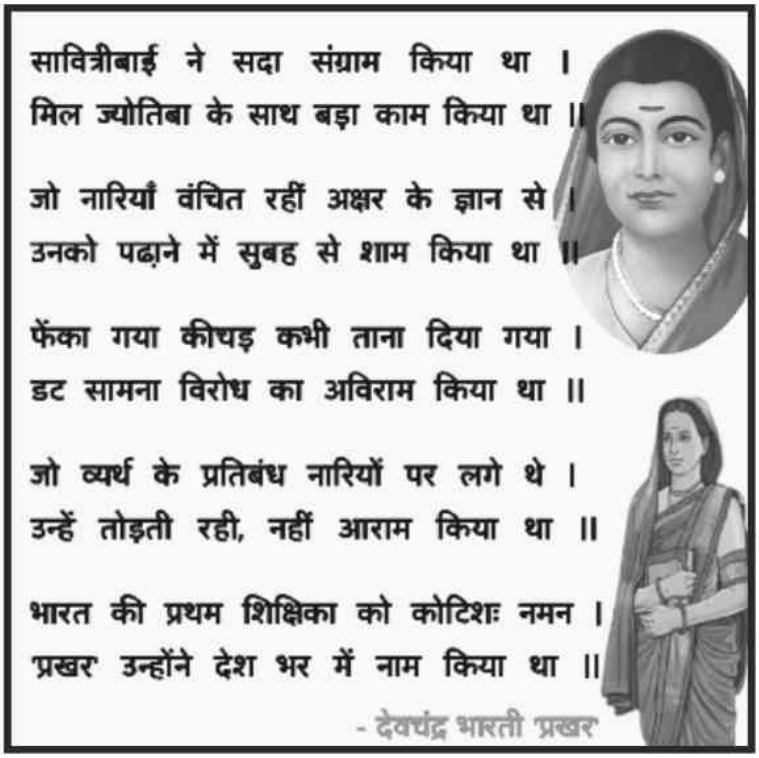

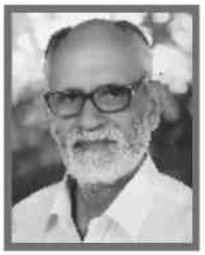

समसामयिक कुंडलियां

– रघुबीर सिंह 'नाहर'

छीना दिन-दिन जा रहा, समता का अधिकार।
कैसा झोंका आ रहा, बार-बार धिक्कार।।
बार-बार धिक्कार, चले हैं वोट बढ़ाने।
रखना इनका ध्यान,लगे हैं सभी गिनाने।।
कह नाहर कविराय, दिखाते रहते सीना।
करें लोक की बात,कपट से वोटर छीना।।

महलों की बुनियाद में, दबी हुई हैं चीख।
बहा पसीना धूप में, कभी न मांगी भीख।।
कभी न मांगी भीख,चीर परवत का सीना।
सुलभ किये सब मार्ग, बहाया खून-पसीना।।
कह नाहर कविराय, बने जोड़ी बैलों की।
जोते दिनभर खेत, छोड़ बातें महलों की।।

लोरी अब मिलती नहीं, माताओं के पास।
संस्कार आयें कहां, बच्चे रहें उदास।।
बच्चे रहें उदास, कटें आया के फेरे।
पैसों वाली मात, पढ़ाती तेरे-मेरे।।

कह नाहर कविराय, सीखते सीनाजोरी।
लौट चलो उस देश, जहां माँ देती लोरी।।
जलते हैं हर घाट पर, दीपक कई हजार।
झोंपड़ियों में देखना, बैठे हैं बीमार।।

बैठे हैं बीमार, पास उनके भी जाना।
सुनना दिल की पीर, फर्ज भी तनिक निभाना।।
कह नाहर कविराय, हाथ रह जाते मलते।
झुग्गी-झोंपड़ देख, कभी ना दीपक जलते।।

झोले में क्या-क्या भरा, समझ गये हैं लोग।
निकल-निकल कर आ रहे, देखो छप्पन भोग।।
देखो छप्पन भोग, रोग बढ़ता ही जाये।
करें जमूरे नाच, मदारी ढोल बजाये।।

कह नाहर कविराय, भरे हैं अब भी गोले।
रोयेगा यह चमन, उठाकर चलदो झोले।।

संचित निधि किस काम की, हो न सके निर्माण।
आडम्बर में खर्च हो, रोज गवायें प्राण।।
रोज गवायें प्राण, बोलते बम-बम डोलें।
कट्टरता भरपूर, धर्म की गठरी खोलें।।
कह नाहर कविराय, रो रहे घर में वंचित।
रखना इनका ध्यान, बांट दो धन जो संचित।।

बहरी हैं सब मूर्तियां, सुनती ना आवाज।
एक जगह बैठी रहें, भरें नहीं परवाज़।।
भरें नहीं परवाज़, चढ़ावा आता भारी।
पूजक हो न अछूत, भगत सब चोटीधारी।।
कह नाहर कविराय, चाल है काफी गहरी।
आँख-कान कर बंद, करी है जनता बहरी।।

माला किसके नाम की, जपता है इन्सान।
कर्म करो आगे बढ़ो, बनी रहे पहचान।।
बनी रहे पहचान, झांककर देखो अन्दर।
उमड़ रहे हैं भाव, खड़ा है भरा समंदर।।
कह नाहर कविराय, अकल का खोलो ताला।
छोड़ो ढ़ोंग प्रपंच, ज्ञान की पहनो माला।।

जीना उसका नाम है, करें सभी सत्कार।
ओरा से बिखरे सदा, प्यार प्यार ही प्यार।।
प्यार प्यार ही प्यार, सत्य का मार्ग दिखाये।
तड़पे कोई जीव, उसी को गले लगाये।।
कह नाहर कविराय, घूंट माहुर की पीना।
देना मिश्री घोल, जगत में ऐसे जीना।।

चलती रोज कटारियां, रोते सजर सुजान।
कहां उड़ेंगी तितलियां, होंगे बाग विरान।।
होंगे बाग विरान, लुप्त हों मंजर सारे।
पाषाणों के पास, मिलें ना कभी सहारे।।
कह नाहर कविराय, चिमनियां दिनभर जलती।
बढ़ते जायें रोग, हवाऐं दूषित चलती।।

पता : नारनौल, हरियाणा, मो. 8053482131

हम दलित नहीं

- मनोहर लाल 'प्रेमी'

अनुयायी हम भीम के,
नहीं दलित हैं आज।
हम शिक्षित संभ्रांत जन,
अब है सभ्य समाज।।

बाबा साहेब ने नहीं,
किया कभी स्वीकार।
शोधित शब्द अछूत ही,
किया सदा इजहार।।

सोंचे कैसे दलित हम,
जय भीम शक्ति शुमार।
अनुयायी हम भीम के,
वाणी करें प्रचार।।

रहन-सहन महलों सदृश,
गाड़ी मोटर कार।
बंगला कोठी सब सुलभ,
झोपड़ी फूस निवार।।

पहनावा नित नित नया,
खाएं नित पकवान।
व्यंजन बहु घी से बने,
ना कोई व्यवधान।।

हीन मानसिकता हृदय,
भरे हीन उद्‌गार।
दलित जनों द्वारा लिखित,
लेखन दलित शुमार।।

आज दलित साहित्य में
अहम हो रहे शोध।
पर शोधों का आंकलन
हीनभाव मन बोध।।

शब्द दलित सुनते सहज,
अलग लिये पहचान।
हीन मानसिकता जगे,
लेते ही संज्ञान।।

रोक आस्था हित नहीं,
पूजा ना अनुष्ठान।
अपने को कहकर दलित,
खुद करते अपमान।।

हीन मानसिकता लिये,
दलित शब्द का भाव।
आज नहीं पहचान यह,
साफ़ दिखे अलगाव।।

हम सब मिल संकल्प लें,
शब्द दें दलित विसार।
बनें स्वाभिमानी सभी,
कभी न होगी हार।।

पता : दुबग्गा, लखनऊ, मो. 8887792827

रसोई में

- सुरेश सौरभ 'ग़ाज़ीपुरी'

एक दिवस की बात बताऊँ,
उजले घर का राज बताऊँ।
चूल्हे से चौके के सफर में,
खटपट वाली बात बताऊँ ।।

कुकर-तवा-कड़ाही-चम्मच,
चलनी-चाकू-छिलनी डोलाऊँ।
बेलन-चौकी-गमला-सँड़सी,
गैस सिलेण्डर आँच भगाऊँ ।।

कुकर की सिटी से दहला,
प्यारा संसद जैसा घर।
गरम तवा पे हाथ पड़े,
तब तन-मन काँपे लगता डर।।

औंधे मुँह कड़ाही बोली,
मंत्री का जीरा है जहर।
पाँच वर्ष की पदलोलुपता,
लूट-खसूट का नयी डगर।।

थमता नहीं चलनी में पानी,
वह पानी की बात करे।
अर्थव्यवस्था झरती उससे,
बटलोही पे घात करे।।

कतरा-कतरा काट रहा है,
सब्जी संग तकरार करे।
बेलन कितना प्यारा है,
वह जनता पर ही वार करे।।

खाल उतारे छिलनी छिलती,
जनता की ना आह सुने।

गर्म मसाले करे सुसज्जित,
रक्तपात की थाह चुने।।

गैस सिलेंडर का दिल धड़का,
इसका भी अब भाव सुनें।
भारत प्यारा देश हमारा,
नेता जी अब गाँव चुने।।

(ARP : बेसिक शिक्षा विभाग)
ग्राम - रामपुर फुफुआंव, पोस्ट - तियरी, जनपद-गाजीपुर, उत्तर प्रदेश।
मो.- 9452846472

GOAL के तत्वावधान में स्थापित हुई संत रविदास जी की प्रतिमा

आंबेडकरवादी विद्वज्जनों का विशुद्ध संगठन GOAL के तत्वावधान में 12 फरवरी 2025 को ग्राम कटसिल (चंदौली) में संत रविदास जी की प्रतिमा की स्थापना एवं अनावरण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटनकर्ता श्रद्धेय संघविजय जी तथा मुख्य अतिथि डॉ. बी.आर. बुद्धप्रिय जी रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में मनोहर लाल प्रेमी, डॉ. सुरेश सौरभ गाजीपुरी और आलोक मौर्य की गरिमामयी उपस्थिति रही।

ज्ञात हो कि आंबेडकरवादी विद्वज्जनों का विशुद्ध संगठन GOAL द्वारा संचालित 'बहुजन सांस्कृतिक मंच' की विभिन्न जिलों में शाखाएं हैं। इस मंच की जनपद शाखा गाजीपुर के निर्देशक/संचालक पिंटू कुमार गौतम सहित उनके सहयोगी विजय कुमार गौतम, कमलेश निराला, रमाशंकर भारती, शिवकुमार राही, जयप्रकाश रविदास आदि लोगों ने इस आयोजन में अपना विशेष योगदान दिया। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण जादूगर पिंटू कुमार गौतम द्वारा दिखाया गया मैजिक शो रहा।

इस अवसर पर संत रविदास जन्मोत्सव समिति, कटसिल के संरक्षकगण जयश्री प्रसाद, गंगा प्रसाद, मिट्ठू प्रसाद, गुलाब भारती, जवाहर लाल, दुर्गा प्रसाद, मनिर्का प्रसाद, डोमन, कुमार (बाबाजी), पदाधिकारीगण भूपचंद्र भारती (अध्यक्ष), उमेश कुमार (उपाध्यक्ष), आदित्य कुमार (कोषाध्यक्ष), सुनील कुमार (प्रबंधक), लल्लन प्रसाद (महामंत्री) एवं सदस्यगण सत्येंद्र कुमार, जयप्रकाश राही, अजय, सोनू, संतोष, सदानंद, धनंजय, आत्मा, अवनीश, विमलकांत चौधरी, डब्बू, अंकित, विजय शंकर, मिथिलेश प्रताप, शशिकांत, श्यामनारायण, हरिदास आदि उपस्थित रहे।

आंबेडकरवादी साहित्य पत्रिका के प्रतिनिधि

1. डॉ. नविला सत्यादास (पंजाब) 9463615861
2. श्यामलाल राही (बरेली, उत्तर प्रदेश) 9456045567
3. डॉ. राम मनोहर राव (बरेली, उत्तर प्रदेश) 7060240326
4. डॉ. रमेश कुमार (गुजरात) 9719025700
5. डॉ. सुरेश सौरभ गाजीपुरी (गाजीपुर, उत्तर प्रदेश) 9452846472
6. सुरेश कुमार राजा (बाँदा, उत्तर प्रदेश) 8756140206
7. रघुबीर सिंह 'नाहर' (राजस्थान) 9413058580
8. अश्वनी कुमार (लखनऊ, उत्तर प्रदेश) 9450159443
9. डॉ. बी.आर. बुद्धप्रिय (बरेली, उत्तर प्रदेश) 9412318482
10. डॉ. मुकुंद रविदास (झारखण्ड) 7488199101
11. डॉ. परसराम रामजी रगडे (महाराष्ट्र) 9850492933
12. भिक्खु संघविजय (बिहार) 8539003521
13. मनोहर लाल 'प्रेमी' (लखनऊ, उत्तर प्रदेश) 8887792827
14. राधेश प्रताप 'विकास' (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश) 9956824322
15. कर्मशील भारती (दिल्ली) 9968297866
16. नारायण राव 'प्रबुद्ध' (चंदौली, उत्तर प्रदेश) 9005441713
17. मेजर लाल बिहारी प्रसाद (कुशीनगर, उत्तर प्रदेश) 9450241748
18. पिंटू कुमार गौतम (गाजीपुर, उत्तर प्रदेश) 8543901668

'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका की सदस्यता हेतु विवरण

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : 350/- त्रैवार्षिक : 1000/-

द्विवार्षिक : 650/- आजीवन : 7000/-

भुगतान विकल्प :

Bank Account Number : 35332395763

Account Holder : Devachandra Bharati

Bank Name : STATE BANK OF INDIA

IFSC Code : SBIN0012302

paytm PhonePe : 9454199538

डॉ. आंबेडकर बहुजन विकास समिति

की तरफ से समस्त देशवासियों को माता सावित्रीबाई फुले जयंती (3 जनवरी),
माता रमाबाई जयंती (7 फरवरी) एवं गुरु रविदास जयंती (12 फरवरी)

की

हार्दिक बधाई एवं मंगल कामनाएं

मृणाल कांति बरुआ
(संस्थापक)

इंजी. आर.सी. प्रभाकर
(अध्यक्ष)

के.एल. गौतम
(उपाध्यक्ष)

मिथिलेश कुमारी
(कोषाध्यक्ष)

मनोहर लाल 'प्रेमी'
(सचिव)

पी.एन. चौधरी
(कानूनी सलाहकार)

गौतम कुमार
(मीडिया प्रभारी)

आम्रपाली योजना, हरदोई रोड, दुबग्गा, लखनऊ (उ.प्र.)
संपर्क सूत्र – 8840213289, 9554661978, 8887792827

आंबेडकरवादी विद्वज्जनों का विशुद्ध संगठन GOAL के अध्यक्ष एवं 'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका के संरक्षक, वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार डॉ. राम मनोहर राव द्वारा लिखित/संपादित कुल पांच पुस्तकें प्रकाशित हैं। इनके लेखन का आधार आंबेडकरवाद है। पुस्तकों की सूची निम्न है :

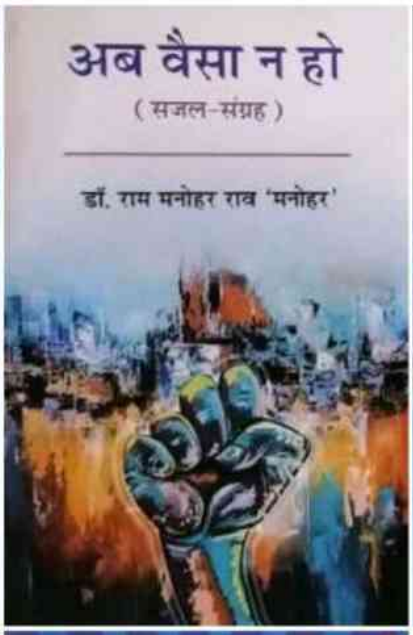

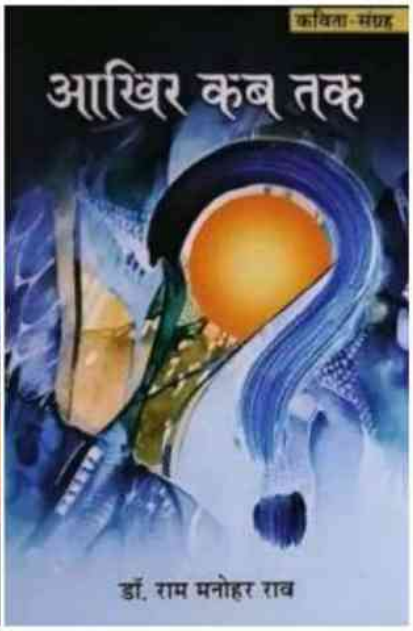

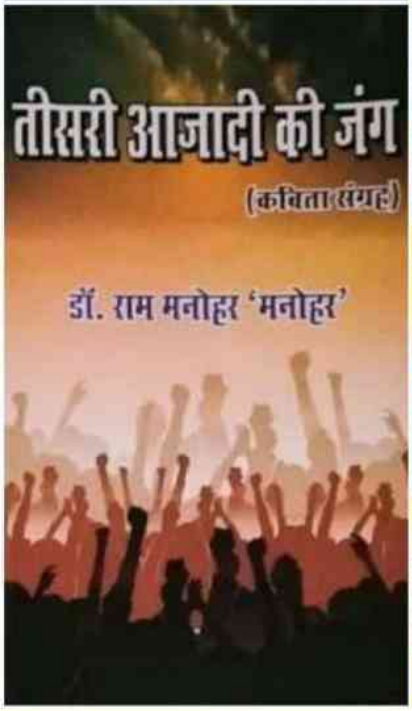

डॉ. राम मनोहर राव
बरेली, उत्तर प्रदेश
मो. 7060240326

पुस्तकें प्राप्त करने हेतु संपर्क करें : साहित्य संस्थान, गाजियाबाद, मो. 8375811307